श्रीगणेशायनमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

द्वितीय सोपान

अयोध्या-काण्ड

श्लोक

यस्याङ्के च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट्।
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशङ्करः पातु माम्॥ १॥

प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्ले वनवासदुःखतः।
मुखाम्बुजश्री रघुनन्दनस्य मे सदास्तु सा मञ्जुलमंगलप्रदा॥ २॥

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम्॥ ३॥

दो. श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि॥

जब तें रामु ब्याहि घर आ। नित नव मंगल मोद बधा॥
भुवन चारिदस भूधर भारी। सुकृत मेघ बरषहि सुख बारी॥

रिधि सिधि संपति नदीं सुहा। उमगि अवध अंबुधि कहुँ आ॥
मनिगन पुर नर नारि सुजाती। सुचि अमोल सुंदर सब भाँती॥
कहि न जा कछु नगर बिभूती। जनु एतनि बिरंचि करतूती॥
सब बिधि सब पुर लोग सुखारी। रामचंद मुख चंदु निहारी॥
मुदित मातु सब सखीं सहेली। फलित बिलोकि मनोरथ बेली॥
राम रूपु गुनसीलु सुभा। प्रमुदित हो देखि सुनि रा॥

दो. सब कें उर अभिलाषु अस कहहिं मना महेसु।
आप अछत जुबराज पद रामहि दे नरेसु॥ १॥

एक समय सब सहित समाजा। राजसभाँ रघुराजु बिराजा॥
सकल सुकृत मूरति नरनाहू। राम सुजसु सुनि अतिहि उछाहू॥
नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषें। लोकप करहिं प्रीति रुख राखें॥
तिभुवन तीनि काल जग माहीं। भूरि भाग दसरथ सम नाहीं॥
मंगलमूल रामु सुत जासू। जो कछु कहिज थोर सबु तासू॥
रायँ सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा। बदनु बिलोकि मुकुट सम कीन्हा॥

श्रवन समीप भ सित केसा। मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा॥
नृप जुबराज राम कहुँ देहू। जीवन जनम लाहु किन लेहू॥

दो. यह बिचारु उर आनि नृप सुदिनु सुवसरु पा।
प्रेम पुलकि तन मुदित मन गुरहि सुनायउ जा॥ २॥

कहइ भुआलु सुनि मुनिनायक। भ राम सब बिधि सब लायक॥
सेवक सचिव सकल पुरबासी। जे हमारे अरि मित्र उदासी॥
सबहि रामु प्रिय जेहि बिधि मोही। प्रभु असीस जनु तनु धरि सोही॥
बिप्र सहित परिवार गोसां। करहिं छोहु सब रौरिहि ना॥
जे गुर चरन रेनु सिर धरहीं। ते जनु सकल बिभव बस करहीं॥
मोहि सम यहु अनुभयउ न दूजें। सबु पायउँ रज पावनि पूजें॥
अब अभिलाषु एकु मन मोरें। पूजहि नाथ अनुग्रह तोरें॥
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू। कहे नरेस रजायसु देहू॥

दो. राजन रार नामु जसु सब अभिमत दातार।
फल अनुगामी महिप मनि मन अभिलाषु तुम्हार॥ ३॥

सब बिधि गुरु प्रसन्न जियँ जानी। बोले रा रहँसि मृदु बानी॥

नाथ रामु करिहिं जुबराजू। कहि कृपा करि करि समाजू॥
मोहि अछत यहु हो उछाहू। लहहिं लोग सब लोचन लाहू॥
प्रभु प्रसाद सिव सबइ निबाहीं। यह लालसा एक मन माहीं॥
पुनि न सोच तनु रहउ कि जा। जेहिं न हो पाछें पछिता॥
सुनि मुनि दसरथ बचन सुहा। मंगल मोद मूल मन भा॥
सुनु नृप जासु बिमुख पछिताहीं। जासु भजन बिनु जरनि न जाहीं॥
भयउ तुम्हार तनय सो स्वामी। रामु पुनीत प्रेम अनुगामी॥

दो. बेगि बिलंबु न करि नृप साजि सबु समाजु।
सुदिन सुमंगलु तबहिं जब रामु होहिं जुबराजु॥ ४॥

मुदित महिपति मंदिर आ। सेवक सचिव सुमंत्रु बोला॥
कहि जयजीव सीस तिन्ह ना। भूप सुमंगल बचन सुना॥
जौं पाँचहि मत लागै नीका। करहु हरषि हियँ रामहि टीका॥
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी। अभिमत बिरवँ परे जनु पानी॥
बिनती सचिव करहि कर जोरी। जिहु जगतपति बरिस करोरी॥
जग मंगल भल काजु बिचारा। बेगि नाथ न ला बारा॥
नृपहि मोदु सुनि सचिव सुभाषा। बढ़त बौंड़ जनु लही सुसाखा॥

दो. कहे भूप मुनिराज कर जो जो आयसु हो।
राम राज अभिषेक हित बेगि करहु सो सो॥ ५॥

हरषि मुनीस कहे मृदु बानी। आनहु सकल सुतीरथ पानी॥
औषध मूल फूल फल पाना। कहे नाम गनि मंगल नाना॥
चामर चरम बसन बहु भाँती। रोम पाट पट अगनित जाती॥
मनिगन मंगल बस्तु अनेका। जो जग जोगु भूप अभिषेका॥
बेद बिदित कहि सकल बिधाना। कहे रचहु पुर बिबिध बिताना॥
सफल रसाल पूगफल केरा। रोपहु बीथिन्ह पुर चहुँ फेरा॥
रचहु मंजु मनि चौकें चारू। कहहु बनावन बेगि बजारू॥
पूजहु गनपति गुर कुलदेवा। सब बिधि करहु भूमिसुर सेवा॥

दो. ध्वज पताक तोरन कलस सजहु तुरग रथ नाग।
सिर धरि मुनिबर बचन सबु निज निज काजहिं लाग॥ ६॥

जो मुनीस जेहि आयसु दीन्हा। सो तेहिं काजु प्रथम जनु कीन्हा॥
बिप्र साधु सुर पूजत राजा। करत राम हित मंगल काजा॥
सुनत राम अभिषेक सुहावा। बाज गहागह अवध बधावा॥
राम सीय तन सगुन जना। फरकहिं मंगल अंग सुहा॥

पुलकि सप्रेम परसपर कहहीं। भरत आगमनु सूचक अहहीं॥
भ बहुत दिन अति अवसेरी। सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी॥
भरत सरिस प्रिय को जग माहीं। इहइ सगुन फलु दूसर नाहीं॥
रामहि बंधु सोच दिन राती। अंडन्हि कमठ ह्रदउ जेहि भाँती॥

दो. एहि अवसर मंगलु परम सुनि रहँसे रनिवासु।
सोभत लखि बिधु बढ़त जनु बारिधि बीचि बिलासु॥ ७॥

प्रथम जा जिन्ह बचन सुना। भूषन बसन भूरि तिन्ह पा॥
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागीं। मंगल कलस सजन सब लागीं॥
चौकें चारु सुमित्राँ पुरी। मनिमय बिबिध भाँति अति रुरी॥
आनँद मगन राम महतारी। दि दान बहु बिप्र हँकारी॥
पूजीं ग्रामदेबि सुर नागा। कहे बहोरि देन बलिभागा॥
जेहि बिधि हो राम कल्यानू। देहु दया करि सो बरदानू॥
गावहिं मंगल कोकिलबयनीं। बिधुबदनीं मृगसावकनयनीं॥

दो. राम राज अभिषेकु सुनि हियँ हरषे नर नारि।
लगे सुमंगल सजन सब बिधि अनुकूल बिचारि॥ ८॥

तब नरनाहँ बसिष्ठु बोला। रामधाम सिख देन पठा॥
गुर आगमनु सुनत रघुनाथा। द्वार आ पद नायउ माथा॥
सादर अरघ दे घर आने। सोरह भाँति पूजि सनमाने॥
गहे चरन सिय सहित बहोरी। बोले रामु कमल कर जोरी॥
सेवक सदन स्वामि आगमनू। मंगल मूल अमंगल दमनू॥
तदपि उचित जनु बोलि सप्रीती। पठइ काज नाथ असि नीती॥
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू। भयउ पुनीत आजु यहु गेहू॥
आयसु हो सो करौं गोसा। सेवक लहइ स्वामि सेवका॥

दो. सुनि सनेह साने बचन मुनि रघुबरहि प्रसंस।
राम कस न तुम्ह कहहु अस हंस बंस अवतंस॥ ९॥

बरनि राम गुन सीलु सुभा। बोले प्रेम पुलकि मुनिरा॥
भूप सजे अभिषेक समाजू। चाहत देन तुम्हहि जुबराजू॥
राम करहु सब संजम आजू। जौं बिधि कुसल निबाहै काजू॥
गुरु सिख दे राय पहिं गयउ। राम हृदयँ अस बिसमउ भय॥
जनमे एक संग सब भा। भोजन सयन केलि लरिका॥
करनबेध उपबीत बिआहा। संग संग सब भ उछाहा॥
बिमल बंस यहु अनुचित एकू। बंधु बिहा बड़ेहि अभिषेकू॥

प्रभु सप्रेम पछितानि सुहा। हरउ भगत मन कै कुटिला॥

दो. तेहि अवसर आ लखन मगन प्रेम आनंद।
सनमाने प्रिय बचन कहि रघुकुल कैरव चंद॥ १०॥

बाजहिं बाजने बिबिध बिधाना। पुर प्रमोदु नहिं जा बखाना॥
भरत आगमनु सकल मनावहिं। आवहुँ बेगि नयन फलु पावहिं॥
हाट बाट घर गलीं अथा। कहहिं परसपर लोग लोगा॥
कालि लगन भलि केतिक बारा। पूजिहि बिधि अभिलाषु हमारा॥
कनक सिंघासन सीय समेता। बैठहिं रामु होइ चित चेता॥
सकल कहहिं कब होहि काली। बिघन मनावहिं देव कुचाली॥
तिन्हहि सोहा न अवध बधावा। चोरहि चंदिनि राति न भावा॥
सारद बोलि बिनय सुर करहीं। बारहिं बार पाय लै परहीं॥

दो. बिपति हमारि बिलोकि बड़ि मातु करि सो आजु।
रामु जाहिं बन राजु तजि होइ सकल सुरकाजु॥ ११॥

सुनि सुर बिनय ठाढ़ि पछिताती। भइँ सरोज बिपिन हिमराती॥
देखि देव पुनि कहहिं निहोरी। मातु तोहि नहिं थोरि खोरी॥

बिसमय हरष रहित रघुरा। तुम्ह जानहु सब राम प्रभा॥
जीव करम बस सुख दुख भागी। जा अवध देव हित लागी॥
बार बार गहि चरन सँकोचौ। चली बिचारि बिबुध मति पोची॥
ऊँच निवासु नीचि करतूती। देखि न सकहिं परा बिभूती॥
आगिल काजु बिचारि बहोरी। करहहिं चाह कुसल कबि मोरी॥
हरषि हृदयँ दसरथ पुर आ। जनु ग्रह दसा दुसह दुखदा॥

दो. नामु मंथरा मंदमति चेरी कैके केरि।
अजस पेटारी ताहि करि ग गिरा मति फेरि॥ १२॥

दीख मंथरा नगरु बनावा। मंजुल मंगल बाज बधावा॥
पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू। राम तिलकु सुनि भा उर दाहू॥
करइ बिचारु कुबुद्धि कुजाती। हो अकाजु कवनि बिधि राती॥
देखि लागि मधु कुटिल किराती। जिमि गवँ तकइ लेँ केहि भाँती॥
भरत मातु पहिं गइ बिलखानी। का अनमनि हसि कह हँसि रानी॥
ऊतरु दे न ले उसासू। नारि चरित करि ढारइ आँसू॥
हँसि कह रानि गालु बड़ तोरें। दीन्ह लखन सिख अस मन मोरें॥
तबहुँ न बोल चेरि बड़ि पापिनि। छाड़इ स्वास कारि जनु साँपिनि॥

दो. सभय रानि कह कहसि किन कुसल रामु महिपालु।
लखनु भरतु रिपुदमनु सुनि भा कुबरी उर सालु॥ १३॥

कत सिख दे हमहि को मा। गालु करब केहि कर बलु पा॥
रामहि छाड़ि कुसल केहि आजू। जेहि जनेसु दे जुबराजू॥
भयउ कौसिलहि बिधि अति दाहिन। देखत गरब रहत उर नाहिन॥
देखेहु कस न जा सब सोभा। जो अवलोकि मोर मनु छोभा॥
पूतु बिदेस न सोचु तुम्हारें। जानति हहु बस नाहु हमारें॥
नीद बहुत प्रिय सेज तुरा। लखहु न भूप कपट चतुरा॥
सुनि प्रिय बचन मलिन मनु जानी। झुकी रानि अब रहु अरगानी॥
पुनि अस कबहुँ कहसि घरफोरी। तब धरि जीभ कढ़ावउँ तोरी॥

दो. काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि।
तिय बिसेषि पुनि चेरि कहि भरतमातु मुसुकानि॥ १४॥

प्रियबादिनि सिख दीन्हिँ तोही। सपनेहुँ तो पर कोपु न मोही॥
सुदिनु सुमंगल दायकु सो। तोर कहा फुर जेहि दिन हो॥
जेठ स्वामि सेवक लघु भा। यह दिनकर कुल रीति सुहा॥
राम तिलकु जौं साँचेहुँ काली। दैं मागु मन भावत आली॥

कौसल्या सम सब महतारी। रामहि सहज सुभायँ पिआरी॥
मो पर करहिं सनेहु बिसेषी। मैं करि प्रीति परीछा देखी॥
जौं बिधि जनमु दे करि छोहू। होहुँ राम सिय पूत पुतोहू॥
प्रान तें अधिक रामु प्रिय मोरें। तिन्ह कें तिलक छोभु कस तोरें॥

दो. भरत सपथ तोहि सत्य कहु परिहरि कपट दुरा।
हरष समय बिसमउ करसि कारन मोहि सुना॥ १५॥

एकहिं बार आस सब पूजी। अब कछु कहब जीभ करि दूजी॥
फोरै जोगु कपारु अभागा। भले कहत दुख रउरेहि लागा॥
कहहिं झूठि फुरि बात बना। ते प्रिय तुम्हहि करु मैं मा॥
हमहुँ कहबि अब ठकुरसोहाती। नाहिं त मौन रहब दिनु राती॥
करि कुरूप बिधि परबस कीन्हा। बवा सो लुनि लहि जो दीन्हा॥
को नृप हो हमहि का हानी। चेरि छाड़ि अब होब कि रानी॥
जारै जोगु सुभा हमारा। अनभल देखि न जा तुम्हारा॥
तातें कछुक बात अनुसारी। छमि देबि बड़ि चूक हमारी॥

दो. गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि तीय अधरबुधि रानि।
सुरमाया बस बैरिनिहि सुहृद जानि पतिआनि॥ १६॥

सादर पुनि पुनि पूँछति ओही। सबरी गान मृगी जनु मोही॥
तसि मति फिरी अहइ जसि भाबी। रहसी चेरि घात जनु फाबी॥
तुम्ह पूँछहु मैं कहत डेराँ। धरे मोर घरफोरी नाँ॥
सजि प्रतीति बहुबिधि गढ़ि छोली। अवध साढ़साती तब बोली॥
प्रिय सिय रामु कहा तुम्ह रानी। रामहि तुम्ह प्रिय सो फुरि बानी॥
रहा प्रथम अब ते दिन बीते। समउ फिरें रिपु होहिं पिंरीते॥
भानु कमल कुल पोषनिहारा। बिनु जल जारि करइ सो छारा॥
जरि तुम्हारि चह सवति उखारी। रूँधहु करि उपा बर बारी॥

दो. तुम्हहि न सोचु सोहाग बल निज बस जानहु रा।
मन मलीन मुह मीठ नृप रार सरल सुभा॥ १७॥

चतुर गँभीर राम महतारी। बीचु पा निज बात सँवारी॥
पठ भरतु भूप ननिउरें। राम मातु मत जानव रउरें॥
सेवहिं सकल सवति मोहि नीकें। गरबित भरत मातु बल पी कें॥
सालु तुम्हार कौसिलहि मा। कपट चतुर नहिं हो जना॥
राजहि तुम्ह पर प्रेमु बिसेषी। सवति सुभा सकइ नहिं देखी॥
रची प्रंपचु भूपहि अपना। राम तिलक हित लगन धरा॥

यह कुल उचित राम कहुँ टीका। सबहि सोहा मोहि सुठि नीका॥
आगिलि बात समुझि डरु मोही। दे दै फिरि सो फलु ओही॥

दो. रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हेसि कपट प्रबोधु॥
कहिसि कथा सत सवति कै जेहि बिधि बाढ़ बिरोधु॥ १८॥

भावी बस प्रतीति उर आ। पूँछ रानि पुनि सपथ देवा॥
का पूछहुँ तुम्ह अबहुँ न जाना। निज हित अनहित पसु पहिचाना॥
भयउ पाखु दिन सजत समाजू। तुम्ह पा सुधि मोहि सन आजू॥
खा पहिरि राज तुम्हारें। सत्य कहें नहिं दोषु हमारें॥
जौं असत्य कछु कहब बना। तौ बिधि देहि हमहि सजा॥
रामहि तिलक कालि जौं भय। तुम्ह कहुँ बिपति बीजु बिधि बय॥
रेख खँचा कहउँ बलु भाषी। भामिनि भइहु दूध कइ माखी॥
जौं सुत सहित करहु सेवका। तौ घर रहहु न आन उपा॥

दो. कद्रूँ बिनतहि दीन्ह दुखु तुम्हहि कौसिलाँ देब।
भरतु बंदिगृह सेहहिं लखनु राम के नेब॥ १९॥

कैकयसुता सुनत कटु बानी। कहि न सकइ कछु सहमि सुखानी॥

तन पसे कदली जिमि काँपी। कुबरीं दसन जीभ तब चाँपी॥
कहि कहि कोटिक कपट कहानी। धीरजु धरहु प्रबोधिसि रानी॥
फिरा करमु प्रिय लागि कुचाली। बकिहि सराहइ मानि मराली॥
सुनु मंथरा बात फुरि तोरी। दहिनि आँखि नित फरकइ मोरी॥
दिन प्रति देखउँ राति कुसपने। कहउँ न तोहि मोह बस अपने॥
काह करौ सखि सूध सुभा। दाहिन बाम न जानउँ का॥

दो. अपने चलत न आजु लगि अनभल काहुक कीन्ह।
केहिं अघ एकहि बार मोहि दैं दुसह दुखु दीन्ह॥ २०॥

नैहर जनमु भरब बरु जा। जित न करबि सवति सेवका॥
अरि बस दै जिआवत जाही। मरनु नीक तेहि जीवन चाही॥
दीन बचन कह बहुबिधि रानी। सुनि कुबरीं तियमाया ठानी॥
अस कस कहहु मानि मन ऊना। सुखु सोहागु तुम्ह कहुँ दिन दूना॥
जेहिं रार अति अनभल ताका। सो पाहि यहु फलु परिपाका॥
जब तें कुमत सुना मैं स्वामिनि। भूख न बासर नींद न जामिनि॥
पूँछे गुनिन्ह रेख तिन्ह खाँची। भरत भुआल होहिं यह साँची॥
भामिनि करहु त कहौं उपा। है तुम्हरीं सेवा बस रा॥

दो. परउँ कूप तु बचन पर सकउँ पूत पति त्यागि।
कहसि मोर दुखु देखि बड़ कस न करब हित लागि॥ २१॥

कुबरीं करि कबुली कैके। कपट छुरी उर पाहन टे॥
लखइ न रानि निकट दुखु कैंसे। चरइ हरित तिन बलिपसु जैसें॥
सुनत बात मृदु अंत कठोरी। देति मनहुँ मधु माहुर घोरी॥
कहइ चेरि सुधि अहइ कि नाही। स्वामिनि कहिहु कथा मोहि पाहीं॥
दु बरदान भूप सन थाती। मागहु आजु जुड़ावहु छाती॥
सुतहि राजु रामहि बनवासू। देहु लेहु सब सवति हुलासु॥
भूपति राम सपथ जब कर। तब मागेहु जेहिं बचनु न टर॥
हो अकाजु आजु निसि बीतें। बचनु मोर प्रिय मानेहु जी तें॥

दो. बड़ कुघातु करि पातकिनि कहेसि कोपगृहँ जाहु।
काजु सँवारेहु सजग सबु सहसा जनि पतिआहु॥ २२॥

कुबरिहि रानि प्रानप्रिय जानी। बार बार बड़ि बुद्धि बखानी॥
तोहि सम हित न मोर संसारा। बहे जात कइ भइसि अधारा॥
जौं बिधि पुरब मनोरथु काली। करौं तोहि चख पूतरि आली॥
बहुबिधि चेरिहि आदरु दे। कोपभवन गवनि कैके॥

बिपति बीजु बरषा रितु चेरी। भुँ भइ कुमति कैके केरी॥
पा कपट जलु अंकुर जामा। बर दो दल दुख फल परिनामा॥
कोप समाजु साजि सबु सो। राजु करत निज कुमति बिगो॥
रार नगर कोलाहलु हो। यह कुचालि कछु जान न को॥

दो. प्रमुदित पुर नर नारि। सब सजहिं सुमंगलचार।
एक प्रबिसहिं एक निर्गमहिं भीर भूप दरबार॥ २३॥

बाल सखा सुन हियँ हरषाहीं। मिलि दस पाँच राम पहिं जाहीं॥
प्रभु आदरहिं प्रेमु पहिचानी। पूँछहिं कुसल खेम मृदु बानी॥
फिरहिं भवन प्रिय आयसु पा। करत परसपर राम बड़ा॥
को रघुबीर सरिस संसारा। सीलु सनेह निबाहनिहारा।
जेंहि जेंहि जोनि करम बस भ्रमहीं। तहँ तहँ ईसु दे यह हमहीं॥
सेवक हम स्वामी सियनाहू। हो नात यह ओर निबाहू॥
अस अभिलाषु नगर सब काहू। कैकयसुता हृदयँ अति दाहू॥
को न कुसंगति पा नसा। रहइ न नीच मतें चतुरा॥

दो. साँस समय सानंद नृपु गयउ कैके गेहँ।
गवनु निठुरता निकट किय जनु धरि देह सनेहँ॥ २४॥

कोपभवन सुनि सकुचे रा। भय बस अगहुड़ परइ न पा॥
सुरपति बसइ बाहँबल जाके। नरपति सकल रहहिं रुख ताकें॥
सो सुनि तिय रिस गयउ सुखा। देखहु काम प्रताप बड़ा॥
सूल कुलिस असि अँगवनिहारे। ते रतिनाथ सुमन सर मारे॥
सभय नरेसु प्रिया पहिं गय। देखि दसा दुखु दारुन भय॥
भूमि सयन पटु मोट पुराना। दि डारि तन भूषण नाना॥
कुमतिहि कसि कुबेषता फाबी। अन अहिवातु सूच जनु भाबी॥
जा निकट नृपु कह मृदु बानी। प्रानप्रिया केहि हेतु रिसानी॥

छं. केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहि नेवार।
मानहुँ सरोष भुंग भामिनि बिषम भाँति निहार॥
दो बासना रसना दसन बर मरम ठाहरु देख।
तुलसी नृपति भवतब्यता बस काम कौतुक लेख॥

सो. बार बार कह रा सुमुखि सुलोचिनि पिकबचनि।
कारन मोहि सुना गजगामिनि निज कोप कर॥ २५॥

अनहित तोर प्रिया कैं कीन्हा। केहि दु सिर केहि जमु चह लीन्हा॥

कहु केहि रंकहि करौ नरेसू। कहु केहि नृपहि निकासौं देसू॥
सकउँ तोर अरि अमरउ मारी। काह कीट बपुरे नर नारी॥
जानसि मोर सुभा बरोरू। मनु तव आनन चंद चकोरू॥
प्रिया प्रान सुत सरबसु मोरें। परिजन प्रजा सकल बस तोरें॥
जौं कछु कहौ कपटु करि तोही। भामिनि राम सपथ सत मोही॥
बिहसि मागु मनभावति बाता। भूषन सजहि मनोहर गाता॥
घरी कुघरी समुझि जियँ देखू। बेगि प्रिया परिहरहि कुबेषू॥

दो. यह सुनि मन गुनि सपथ बड़ि बिहसि उठी मतिमंद।
भूषन सजति बिलोकि मृगु मनहुँ किरातिनि फंद॥ २६॥

पुनि कह रा सुह्रद जियँ जानी। प्रेम पुलकि मृदु मंजुल बानी॥
भामिनि भयउ तोर मनभावा। घर घर नगर अनंद बधावा॥
रामहि दैं कालि जुबराजू। सजहि सुलोचनि मंगल साजू॥
दलकि उठे सुनि ह्रदउ कठोरू। जनु छु गयउ पाक बरतोरू॥
ऐसि पीर बिहसि तेहि गो। चोर नारि जिमि प्रगटि न रो॥
लखहिं न भूप कपट चतुरा। कोटि कुटिल मनि गुरू पढ़ा॥
जद्यपि नीति निपुन नरनाहू। नारिचरित जलनिधि अवगाहू॥
कपट सनेहु बढ़ा बहोरी। बोली बिहसि नयन मुहु मोरी॥

दो. मागु मागु पै कहहु पिय कबहुँ न देहु न लेहु।
देन कहेहु बरदान दु ते पावत संदेहु॥ २७॥

जानैं मरमु रा हँसि कह। तुम्हहि कोहाब परम प्रिय अह॥
थाति राखि न मागिहु का। बिसरि गयउ मोहि भोर सुभा॥
झूठेहुँ हमहि दोषु जनि देहू। दु कै चारि मागि मकु लेहू॥
रघुकुल रीति सदा चलि आ। प्रान जाहुँ बरु बचनु न जा॥
नहिं असत्य सम पातक पुंजा। गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा॥
सत्यमूल सब सुकृत सुहा। बेद पुरान बिदित मनु गा॥
तेहि पर राम सपथ करि आ। सुकृत सनेह अवधि रघुरा॥
बात दृढ़ा कुमति हँसि बोली। कुमत कुबिहग कुलह जनु खोली॥

दो. भूप मनोरथ सुभग बनु सुख सुबिहंग समाजु।
भिल्लनि जिमि छाड़न चहति बचनु भयंकरु बाजु॥ २८॥

मासपारायण तेरहवाँ विश्राम

सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का। देहु एक बर भरतहि टीका॥
मागउँ दूसर बर कर जोरी। पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी॥

तापस बेष बिसेषि उदासी। चौदह बरिस रामु बनबासी॥
सुनि मृदु बचन भूप हियँ सोकू। ससि कर छुत बिकल जिमि कोकू॥
गयउ सहमि नहिं कछु कहि आवा। जनु सचान बन झपटे लावा॥
बिबरन भयउ निपट नरपालू। दामिनि हने मनहुँ तरु तालू॥
माथे हाथ मूदि दो लोचन। तनु धरि सोचु लाग जनु सोचन॥
मोर मनोरथु सुरतरु फूला। फरत करिनि जिमि हते समूला॥
अवध उजारि कीन्हि कैकें। दीन्हसि अचल बिपति कै नें॥

दो. कवनें अवसर का भयउ गयउँ नारि बिस्वास।
जोग सिद्धि फल समय जिमि जतिहि अबिद्या नास॥ २९॥

एहि बिधि रा मनहिं मन झाँखा। देखि कुभाँति कुमति मन माखा॥
भरतु कि रार पूत न होहीं। आनेहु मोल बेसाहि कि मोही॥
जो सुनि सरु अस लाग तुम्हारें। काहे न बोलहु बचनु सँभारे॥
देहु उतरु अनु करहु कि नाहीं। सत्यसंध तुम्ह रघुकुल माहीं॥
देन कहेहु अब जनि बरु देहू। तजहुँ सत्य जग अपजसु लेहू॥
सत्य सराहि कहेहु बरु देना। जानेहु लेहि मागि चबेना॥
सिबि दधीचि बलि जो कछु भाषा। तनु धनु तजे बचन पनु राखा॥
अति कटु बचन कहति कैके। मानहुँ लोन जरे पर दे॥

दो. धरम धुरंधर धीर धरि नयन उघारे रायँ।
सिरु धुनि लीन्हि उसास असि मारेसि मोहि कुठायँ॥ ३०॥

आगें दीखि जरत रिस भारी। मनहुँ रोष तरवारि उघारी॥
मूठि कुबुद्धि धार निठुरा। धरी कूबरीं सान बना॥
लखी महीप कराल कठोरा। सत्य कि जीवनु लेहि मोरा॥
बोले रा कठिन करि छाती। बानी सबिनय तासु सोहाती॥
प्रिया बचन कस कहसि कुभाँती। भीर प्रतीति प्रीति करि हाँती॥
मोरें भरतु रामु दु आँखी। सत्य कहउँ करि संकरू साखी॥
अवसि दूतु मैं पठइब प्राता। ऐहहिं बेगि सुनत दो भ्राता॥
सुदिन सोधि सबु साजु सजा। दैं भरत कहुँ राजु बजा॥

दो. लोभु न रामहि राजु कर बहुत भरत पर प्रीति।
मैं बड़ छोट बिचारि जियँ करत रहैं नृपनीति॥ ३१॥

राम सपथ सत कहूँ सुभा। राममातु कछु कहे न का॥
मैं सबु कीन्ह तोहि बिनु पूँछें। तेहि तें परे मनोरथु छूछें॥
रिस परिहरू अब मंगल साजू। कछु दिन गँ भरत जुबराजू॥

एकहि बात मोहि दुखु लागा। बर दूसर असमंजस मागा॥
अजहुँ हृदय जरत तेहि आँचा। रिस परिहास कि साँचेहुँ साँचा॥
कहु तजि रोषु राम अपराधू। सबु को कहइ रामु सुठि साधू॥
तुहूँ सराहसि करसि सनेहू। अब सुनि मोहि भयउ संदेहू॥
जासु सुभा अरिहि अनुकूला। सो किमि करिहि मातु प्रतिकूला॥

दो. प्रिया हास रिस परिहरहि मागु बिचारि बिबेकु।
जेहिं देखौं अब नयन भरि भरत राज अभिषेकु॥ ३२॥

जि मीन बरू बारि बिहीना। मनि बिनु फनिकु जि दुख दीना॥
कहउँ सुभा न छलु मन माहीं। जीवनु मोर राम बिनु नाहीं॥
समुझि देखु जियँ प्रिया प्रबीना। जीवनु राम दरस आधीना॥
सुनि म्रदु बचन कुमति अति जर। मनहुँ अनल आहुति घृत पर॥
कहइ करहु किन कोटि उपाया। इहाँ न लागिहि रारि माया॥
देहु कि लेहु अजसु करि नाहीं। मोहि न बहुत प्रपंच सोहाहीं।
रामु साधु तुम्ह साधु सयाने। राममातु भलि सब पहिचाने॥
जस कौसिलाँ मोर भल ताका। तस फलु उन्हहि दैं करि साका॥

दो. होत प्रात मुनिबेष धरि जौं न रामु बन जाहिं।

मोर मरनु रार अजस नृप समुझि मन माहिं ॥ ३३ ॥

अस कहि कुटिल भ उठि ठाढ़ी । मानहुँ रोष तरंगिनि बाढ़ी ॥
पाप पहार प्रगट भइ सो । भरी क्रोध जल जा न जो ॥
दो बर कूल कठिन हठ धारा । भवँर कूबरी बचन प्रचारा ॥
ढाहत भूपरूप तरु मूला । चली बिपति बारिधि अनुकूला ॥
लखी नरेस बात फुरि साँची । तिय मिस मीचु सीस पर नाची ॥
गहि पद बिनय कीन्ह बैठारी । जनि दिनकर कुल होसि कुठारी ॥
मागु माथ अबहीं दैं तोही । राम बिरहँ जनि मारसि मोही ॥
राखु राम कहुँ जेहि तेहि भाँती । नाहिं त जरिहि जनम भरि छाती ॥

दो. देखी ब्याधि असाध नृपु परे धरनि धुनि माथ ।
कहत परम आरत बचन राम राम रघुनाथ ॥ ३४ ॥

ब्याकुल रा सिथिल सब गाता । करिनि कलपतरु मनहुँ निपाता ॥
कंठु सूख मुख आव न बानी । जनु पाठीनु दीन बिनु पानी ॥
पुनि कह कटु कठोर कैके । मनहुँ घाय महुँ माहुर दे ॥
जौं अंतहुँ अस करतबु रहे । मागु मागु तुम्ह केहिं बल कहे ॥
दु कि हो एक समय भुआला । हँसब ठठा फुलाब गाला ॥

दानि कहाब अरु कृपना। हो कि खेम कुसल रौता॥
छाड़हु बचनु कि धीरजु धरहू। जनि अबला जिमि करुना करहू॥
तनु तिय तनय धामु धनु धरनी। सत्यसंध कहुँ तृन सम बरनी॥

दो. मरम बचन सुनि रा कह कहु कछु दोषु न तोर।
लागे तोहि पिसाच जिमि कालु कहावत मोर॥ ३५॥

चहत न भरत भूपतहि भोरें। बिधि बस कुमति बसी जिय तोरें॥
सो सबु मोर पाप परिनामू। भयउ कुठाहर जेहिं बिधि बामू॥
सुबस बसिहि फिरि अवध सुहा। सब गुन धाम राम प्रभुता॥
करिहहिं भा सकल सेवका। होहि तिहुँ पुर राम बड़ा॥
तोर कलंकु मोर पछिता। मुहुँ न मिटहि न जाहि का॥
अब तोहि नीक लाग करु सो। लोचन ओट बैठु मुहु गो॥
जब लगि जिं कहउँ कर जोरी। तब लगि जनि कछु कहसि बहोरी॥
फिरि पछितैहसि अंत अभागी। मारसि गा नहारु लागी॥

दो. परे रा कहि कोटि बिधि काहे करसि निदानु।
कपट सयानि न कहति कछु जागति मनहुँ मसानु॥ ३६॥

राम राम रट बिकल भुआलू। जनु बिनु पंख बिहंग बेहालू॥
हृदयँ मनाव भोरु जनि हो। रामहि जा कहै जनि को॥
उदउ करहु जनि रबि रघुकुल गुर। अवध बिलोकि सूल होहि उर॥
भूप प्रीति कैकइ कठिना। उभय अवधि बिधि रची बना॥
बिलपत नृपहि भयउ भिनुसारा। बीना बेनु संख धुनि द्वारा॥
पढ़हिं भाट गुन गावहिं गायक। सुनत नृपहि जनु लागहिं सायक॥
मंगल सकल सोहाहिं न कैसें। सहगामिनिहि बिभूषन जैसें॥
तेहिं निसि नीद परी नहि काहू। राम दरस लालसा उछाहू॥

दो. द्वार भीर सेवक सचिव कहहिं उदित रबि देखि।
जागे अजहुँ न अवधपति कारनु कवनु बिसेषि॥ ३७॥

पछिले पहर भूपु नित जागा। आजु हमहि बड़ अचरजु लागा॥
जाहु सुमंत्र जगावहु जा। कीजि काजु रजायसु पा॥
ग सुमंत्रु तब रार माही। देखि भयावन जात डेराहीं॥
धा खा जनु जा न हेरा। मानहुँ बिपति बिषाद बसेरा॥
पूछें को न ऊतरु दे। ग जेंहिं भवन भूप कैकै॥
कहि जयजीव बैठ सिरु ना। दैखि भूप गति गयउ सुखा॥
सोच बिकल बिबरन महि परे। मानहुँ कमल मूलु परिहरे॥

सचि सभीत सकइ नहिं पूँछी। बोली असुभ भरी सुभ छूछी॥

दो. परी न राजहि नीद निसि हेतु जान जगदीसु।
रामु रामु रटि भोरु किय कहइ न मरमु महीसु॥ ३८॥

आनहु रामहि बेगि बोला। समाचार तब पूँछेहु आ॥
चले सुमंत्र राय रूख जानी। लखी कुचालि कीन्हि कछु रानी॥
सोच बिकल मग परइ न पा। रामहि बोलि कहिहि का रा॥
उर धरि धीरजु गयउ दुआरें। पूछँहिं सकल देखि मनु मारें॥
समाधानु करि सो सबही का। गयउ जहाँ दिनकर कुल टीका॥
रामु सुमंत्रहि आवत देखा। आदरु कीन्ह पिता सम लेखा॥
निरखि बदनु कहि भूप रजा। रघुकुलदीपहि चले लेवा॥
रामु कुभाँति सचिव सँग जाहीं। देखि लोग जहँ तहँ बिलखाहीं॥

दो. जा दीख रघुबंसमनि नरपति निपट कुसाजु॥
सहमि परे लखि सिंघिनिहि मनहुँ बृद्ध गजराजु॥ ३९॥

सूखहिं अधर जरइ सबु अंगू। मनहुँ दीन मनिहीन भुंगू॥
सरुष समीप दीखि कैकै। मानहुँ मीचु घरी गनि लै॥

करुनामय मृदु राम सुभा। प्रथम दीख दुखु सुना न का॥
तदपि धीर धरि समउ बिचारी। पूँछी मधुर बचन महतारी॥
मोहि कहु मातु तात दुख कारन। करि जतन जेहिं हो निवारन॥
सुनहु राम सबु कारन एहू। राजहि तुम पर बहुत सनेहू॥
देन कहेन्हि मोहि दु बरदाना। मागेँ जो कछु मोहि सोहाना।
सो सुनि भयउ भूप उर सोचू। छाड़ि न सकहिं तुम्हार सँकोचू॥

दो. सुत सनेह इत बचनु उत संकट परे नरेसु।
सकहु न आयसु धरहु सिर मेटहु कठिन कलेसु॥ ४०॥

निधरक बैठि कहइ कटु बानी। सुनत कठिनता अति अकुलानी॥
जीभ कमान बचन सर नाना। मनहुँ महिप मृदु लच्छ समाना॥
जनु कठोरपनु धरें सरीरू। सिखइ धनुषबिद्या बर बीरू॥
सब प्रसंगु रघुपतिहि सुना। बैठि मनहुँ तनु धरि निठुरा॥
मन मुसका भानुकुल भानु। रामु सहज आनंद निधानू॥
बोले बचन बिगत सब दूषन। मृदु मंजुल जनु बाग बिभूषन॥
सुनु जननी सो सुतु बड़भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी॥
तनय मातु पितु तोषनिहारा। दुर्लभ जननि सकल संसारा॥

दो. मुनिगन मिलनु बिसेषि बन सबहि भाँति हित मोर।
तेहि महँ पितु आयसु बहुरि संमत जननी तोर॥ ४१॥

भरत प्रानप्रिय पावहिं राजू। बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आजु।
जों न जाँ बन ऐसेहु काजा। प्रथम गनि मोहि मूढ़ समाजा॥
सेवहिं अरँडु कलपतरु त्यागी। परिहरि अमृत लेहिं बिषु मागी॥
ते न पा अस समउ चुकाहीं। देखु बिचारि मातु मन माहीं॥
अंब एक दुखु मोहि बिसेषी। निपट बिकल नरनायकु देखी॥
थोरिहिं बात पितहि दुख भारी। होति प्रतीति न मोहि महतारी॥
रा धीर गुन उदधि अगाधू। भा मोहि ते कछु बड़ अपराधू॥
जातें मोहि न कहत कछु रा। मोरि सपथ तोहि कहु सतिभा॥

दो. सहज सरल रघुबर बचन कुमति कुटिल करि जान।
चलइ जोंक जल बक्रगति जद्यपि सलिलु समान॥ ४२॥

रहसी रानि राम रुख पा। बोली कपट सनेहु जना॥
सपथ तुम्हार भरत कै आना। हेतु न दूसर मै कछु जाना॥
तुम्ह अपराध जोगु नहिं ताता। जननी जनक बंधु सुखदाता॥
राम सत्य सबु जो कछु कहहू। तुम्ह पितु मातु बचन रत अहहू॥

पितहि बुझा कहहु बलि सो। चौथेंपन जेहिं अजसु न हो॥
तुम्ह सम सुन सुकृत जेहिं दीन्हे। उचित न तासु निरादरु कीन्हे॥
लागहिं कुमुख बचन सुभ कैसे। मगहँ गयादिक तीरथ जैसे॥
रामहि मातु बचन सब भा। जिमि सुरसरि गत सलिल सुहा॥

दो. गइ मुरुछा रामहि सुमिरि नृप फिरि करवट लीन्ह।
सचिव राम आगमन कहि बिनय समय सम कीन्ह॥ ४३॥

अवनिप अकनि रामु पगु धारे। धरि धीरजु तब नयन उघारे॥
सचिवँ सँभारि रा बैठारे। चरन परत नृप रामु निहारे॥
लि सनेह बिकल उर ला। गै मनि मनहुँ फनिक फिरि पा॥
रामहि चितइ रहे नरनाहू। चला बिलोचन बारि प्रबाहू॥
सोक बिबस कछु कहै न पारा। हृदयँ लगावत बारहिं बारा॥
बिधिहि मनाव रा मन माहीं। जेहिं रघुनाथ न कानन जाहीं॥
सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी। बिनती सुनहु सदासिव मोरी॥
आसुतोष तुम्ह अवढर दानी। आरति हरहु दीन जनु जानी॥

दो. तुम्ह प्रेरक सब के हृदयँ सो मति रामहि देहु।
बचनु मोर तजि रहहि घर परिहरि सीलु सनेहु॥ ४४॥

अजसु हो जग सुजसु नसा। नरक परौ बरु सुरपुरु जा॥
सब दुख दुसह सहावहु मोही। लोचन ओट रामु जनि होंही॥
अस मन गुनइ रा नहिं बोला। पीपर पात सरिस मनु डोला॥
रघुपति पितहि प्रेमबस जानी। पुनि कछु कहिहि मातु अनुमानी॥
देस काल अवसर अनुसारी। बोले बचन बिनीत बिचारी॥
तात कहउँ कछु करउँ ढिठा। अनुचितु छमब जानि लरिका॥
अति लघु बात लागि दुखु पावा। काहुँ न मोहि कहि प्रथम जनावा॥
देखि गोसाँहि पूँछिँ माता। सुनि प्रसंगु भ सीतल गाता॥

दो. मंगल समय सनेह बस सोच परिहरि तात।
आयसु दे हरषि हियँ कहि पुलके प्रभु गात॥ ४५॥

धन्य जनमु जगतीतल तासू। पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू॥
चारि पदारथ करतल ताकें। प्रिय पितु मातु प्रान सम जाकें॥
आयसु पालि जनम फलु पा। ऐहउँ बेगिहिं हो रजा॥
बिदा मातु सन आवउँ मागी। चलिहउँ बनहि बहुरि पग लागी॥
अस कहि राम गवनु तब कीन्हा। भूप सोक बसु उतरु न दीन्हा॥
नगर ब्यापि गइ बात सुतीछी। छुत चढ़ी जनु सब तन बीछी॥

सुनि भ बिकल सकल नर नारी। बेलि बिटप जिमि देखि दवारी॥
जो जहँ सुनइ धुनइ सिरु सो। बड़ बिषादु नहिं धीरजु हो॥

दो. मुख सुखाहिं लोचन स्रवहि सोकु न हृदयँ समा।
मनहुँ करुन रस कटक उतरी अवध बजा॥ ४६॥

मिलेहि माझ बिधि बात बेगारी। जहँ तहँ देहिं कैकेहि गारी॥
एहि पापिनिहि बूझि का परे। छा भवन पर पावकु धरे॥
निज कर नयन काढ़ि चह दीखा। डारि सुधा बिषु चाहत चीखा॥
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी। भइ रघुबंस बेनु बन आगी॥
पालव बैठि पेड़ु एहिं काटा। सुख महुँ सोक ठाटु धरि ठाटा॥
सदा रामु एहि प्रान समाना। कारन कवन कुटिलपनु ठाना॥
सत्य कहहिं कबि नारि सुभा। सब बिधि अगहु अगाध दुरा॥
निज प्रतिबिंबु बरुकु गहि जा। जानि न जा नारि गति भा॥

दो. काह न पावकु जारि सक का न समुद्र समा।
का न करै अबला प्रबल केहि जग कालु न खा॥ ४७॥

का सुना बिधि काह सुनावा। का देखा चह काह देखावा॥

एक कहहिं भल भूप न कीन्हा। बरु बिचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा॥
जो हठि भयउ सकल दुख भाजनु। अबला बिबस ग्यानु गुनु गा जनु॥
एक धरम परमिति पहिचाने। नृपहि दोसु नहिं देहिं सयाने॥
सिबि दधीचि हरिचंद कहानी। एक एक सन कहहिं बखानी॥
एक भरत कर संमत कहहीं। एक उदास भायँ सुनि रहहीं॥
कान मूदि कर रद गहि जीहा। एक कहहिं यह बात अलीहा॥
सुकृत जाहिं अस कहत तुम्हारे। रामु भरत कहुँ प्रानपिआरे॥

दो. चंदु चवै बरु अनल कन सुधा हो बिषतूल।
सपनेहुँ कबहुँ न करहिं किछु भरतु राम प्रतिकूल॥ ४८॥

एक बिधातहिं दूषनु देंहीं। सुधा देखा दीन्ह बिषु जेहीं॥
खरभरु नगर सोचु सब काहू। दुसह दाहु उर मिटा उछाहू॥
बिप्रबधू कुलमान्य जठेरी। जे प्रिय परम कैके केरी॥
लगीं देन सिख सीलु सराही। बचन बानसम लागहिं ताही॥
भरतु न मोहि प्रिय राम समाना। सदा कहहु यहु सबु जगु जाना॥
करहु राम पर सहज सनेहू। केहिं अपराध आजु बनु देहू॥
कबहुँ न कियहु सवति आरेसू। प्रीति प्रतीति जान सबु देसू॥
कौसल्याँ अब काह बिगारा। तुम्ह जेहि लागि बज्र पुर पारा॥

दो. सीय कि पिय सँगु परिहरिहि लखनु कि रहिहहिं धाम।
राजु कि भूँजब भरत पुर नृपु कि जीहि बिनु राम॥ ४९॥

अस बिचारि उर छाड़हु कोहू। सोक कलंक कोठि जनि होहू॥
भरतहि अवसि देहु जुबराजू। कानन काह राम कर काजू॥
नाहिन रामु राज के भूखे। धरम धुरीन बिषय रस रूखे॥
गुर गृह बसहुँ रामु तजि गेहू। नृप सन अस बरु दूसर लेहू॥
जौं नहिं लगिहहु कहें हमारे। नहिं लागिहि कछु हाथ तुम्हारे॥
जौं परिहास कीन्हि कछु हो। तौ कहि प्रगट जनावहु सो॥
राम सरिस सुत कानन जोगू। काह कहिहि सुनि तुम्ह कहुँ लोगू॥
उठहु बेगि सो करहु उपा। जेहि बिधि सोकु कलंकु नसा॥

छं. जेहि भाँति सोकु कलंकु जा उपाय करि कुल पालही।
हठि फेरु रामहि जात बन जनि बात दूसरि चालही॥
जिमि भानु बिनु दिनु प्रान बिनु तनु चंद बिनु जिमि जामिनी।
तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु समुझि धौं जियँ भामिनी॥

सो. सखिन्ह सिखावनु दीन्ह सुनत मधुर परिनाम हित।

तैं कछु कान न कीन्ह कुटिल प्रबोधी कूबरी ॥ ५० ॥

उतरु न दे दुसह रिस रूखी । मृगिन्ह चितव जनु बाघिनि भूखी ॥
ब्याधि असाधि जानि तिन्ह त्यागी । चलीं कहत मतिमंद अभागी ॥
राजु करत यह दैं बिगो । कीन्हेसि अस जस करइ न को ॥
एहि बिधि बिलपहिं पुर नर नारीं । देहिं कुचालिहि कोटिक गारीं ॥
जरहिं बिषम जर लेहिं उसासा । कवनि राम बिनु जीवन आसा ॥
बिपुल बियोग प्रजा अकुलानी । जनु जलचर गन सूखत पानी ॥
अति बिषाद बस लोग लोगा । ग मातु पहिं रामु गोसा ॥
मुख प्रसन्न चित चौगुन चा । मिटा सोचु जनि राखै रा ॥

दो. नव गयंदु रघुबीर मनु राजु अलान समान ।
छूट जानि बन गवनु सुनि उर अनंदु अधिकान ॥ ५१ ॥

रघुकुलतिलक जोरि दो हाथा । मुदित मातु पद नायउ माथा ॥
दीन्हि असीस ला उर लीन्हे । भूषन बसन निछावरि कीन्हे ॥
बार बार मुख चुंबति माता । नयन नेह जलु पुलकित गाता ॥
गोद राखि पुनि हृदयँ लगा । स्रवत प्रेनरस पयद सुहा ॥
प्रेमु प्रमोदु न कछु कहि जा । रंक धनद पदबी जनु पा ॥
सादर सुंदर बदनु निहारी । बोली मधुर बचन महतारी ॥

कहहु तात जननी बलिहारी। कबहिं लगन मुद मंगलकारी॥
सुकृत सील सुख सीवँ सुहा। जनम लाभ कइ अवधि अघा॥

दो. जेहि चाहत नर नारि सब अति आरत एहि भाँति।
जिमि चातक चातकि तृषित बृष्टि सरद रितु स्वाति॥ ५२॥

तात जाँ बलि बेगि नहाहू। जो मन भाव मधुर कछु खाहू॥
पितु समीप तब जाहु भैआ। भइ बड़ि बार जा बलि मैआ॥
मातु बचन सुनि अति अनुकूला। जनु सनेह सुरतरु के फूला॥
सुख मकरंद भरे श्रियमूला। निरखि राम मनु भवरुँ न भूला॥
धरम धुरीन धरम गति जानी। कहे मातु सन अति मृदु बानी॥
पिताँ दीन्ह मोहि कानन राजू। जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू॥
आयसु देहि मुदित मन माता। जेहिं मुद मंगल कानन जाता॥
जनि सनेह बस डरपसि भोरें। आनँदु अंब अनुग्रह तोरें॥

दो. बरष चारिदस बिपिन बसि करि पितु बचन प्रमान।
आ पाय पुनि देखिहउँ मनु जनि करसि मलान॥ ५३॥

बचन बिनीत मधुर रघुबर के। सर सम लगे मातु उर करके॥

सहमि सूखि सुनि सीतलि बानी। जिमि जवास परें पावस पानी॥
कहि न जा कछु हृदय बिषादू। मनहुँ मृगी सुनि केहरि नादू॥
नयन सजल तन थर थर काँपी। माजहि खा मीन जनु मापी॥
धरि धीरजु सुत बदनु निहारी। गदगद बचन कहति महतारी॥
तात पितहि तुम्ह प्रानपिआरे। देखि मुदित नित चरित तुम्हारे॥
राजु देन कहुँ सुभ दिन साधा। कहे जान बन केहिं अपराधा॥
तात सुनावहु मोहि निदानू। को दिनकर कुल भयउ कृसानू॥

दो. निरखि राम रुख सचिवसुत कारनु कहे बुझा।
सुनि प्रसंगु रहि मूक जिमि दसा बरनि नहिं जा॥ ५४॥

राखि न सकइ न कहि सक जाहू। दुहूँ भाँति उर दारुन दाहू॥
लिखत सुधाकर गा लिखि राहू। बिधि गति बाम सदा सब काहू॥
धरम सनेह उभयँ मति घेरी। भइ गति साँप छुछुंदरि केरी॥
राखउँ सुतहि करउँ अनुरोधू। धरमु जा अरु बंधु बिरोधू॥
कहउँ जान बन तौ बड़ि हानी। संकट सोच बिबस भइ रानी॥
बहुरि समुझि तिय धरमु सयानी। रामु भरतु दो सुत सम जानी॥
सरल सुभा राम महतारी। बोली बचन धीर धरि भारी॥
तात जाँ बलि कीन्हेहु नीका। पितु आयसु सब धरमक टीका॥

दो. राजु देन कहि दीन्ह बनु मोहि न सो दुख लेसु।
तुम्ह बिनु भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेसु॥ ५५॥

जौं केवल पितु आयसु ताता। तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता॥
जौं पितु मातु कहे बन जाना। तौं कानन सत अवध समाना॥
पितु बनदेव मातु बनदेवी। खग मृग चरन सरोरुह सेवी॥
अंतहुँ उचित नृपहि बनबासू। बय बिलोकि हियँ हो हराँसू॥
बड़भागी बनु अवध अभागी। जो रघुबंसतिलक तुम्ह त्यागी॥
जौं सुत कहौ संग मोहि लेहू। तुम्हरे हृदयँ हो संदेहू॥
पूत परम प्रिय तुम्ह सबही के। प्रान प्रान के जीवन जी के॥
ते तुम्ह कहहु मातु बन जाँ। मैं सुनि बचन बैठि पछिताँ॥

दो. यह बिचारि नहिं करउँ हठ झूठ सनेहु बढ़ा।
मानि मातु कर नात बलि सुरति बिसरि जनि जा॥ ५६॥

देव पितर सब तुन्हहि गोसा। राखहुँ पलक नयन की ना॥
अवधि अंबु प्रिय परिजन मीना। तुम्ह करुनाकर धरम धुरीना॥
अस बिचारि सो करहु उपा। सबहि जित जेहिं भेंटेहु आ॥

जाहु सुखेन बनहि बलि जाँ। करि अनाथ जन परिजन गाँ॥
सब कर आजु सुकृत फल बीता। भयउ कराल कालु बिपरीता॥
बहुबिधि बिलपि चरन लपटानी। परम अभागिनि आपुहि जानी॥
दारुन दुसह दाहु उर ब्यापा। बरनि न जाहिं बिलाप कलापा॥
राम उठा मातु उर ला। कहि मृदु बचन बहुरि समुझा॥

दो. समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुला।
जा सासु पद कमल जुग बंदि बैठि सिरु ना॥ ५७॥

दीन्हि असीस सासु मृदु बानी। अति सुकुमारि देखि अकुलानी॥
बैठि नमितमुख सोचति सीता। रूप रासि पति प्रेम पुनीता॥
चलन चहत बन जीवननाथू। केहि सुकृती सन होहि साथू॥
की तनु प्रान कि केवल प्राना। बिधि करतबु कछु जा न जाना॥
चारु चरन नख लेखति धरनी। नूपुर मुखर मधुर कबि बरनी॥
मनहुँ प्रेम बस बिनती करहीं। हमहि सीय पद जनि परिहरहीं॥
मंजु बिलोचन मोचति बारी। बोली देखि राम महतारी॥
तात सुनहु सिय अति सुकुमारी। सासु ससुर परिजनहि पिआरी॥

दो. पिता जनक भूपाल मनि ससुर भानुकुल भानु।

पति रबिकुल कैरव बिपिन बिधु गुन रूप निधानु ॥ ५८ ॥

मैं पुनि पुत्रबधू प्रिय पा । रूप रासि गुन सील सुहा ॥
नयन पुतरि करि प्रीति बढ़ा । राखैं प्रान जानिकिहिं ला ॥
कलपबेलि जिमि बहुबिधि लाली । सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली ॥
फूलत फलत भयउ बिधि बामा । जानि न जा काह परिनामा ॥
पलँग पीठ तजि गोद हिंड़ोरा । सियँ न दीन्ह पगु अवनि कठोरा ॥
जिनमूरि जिमि जोगवत रहँ । दीप बाति नहिं टारन कहँ ॥
सो सिय चलन चहति बन साथा । आयसु काह हो रघुनाथा ।
चंद किरन रस रसिक चकोरी । रबि रुख नयन सकइ किमि जोरी ॥

दो. करि केहरि निसिचर चरहिं दुष्ट जंतु बन भूरि ।
बिष बाटिकाँ कि सोह सुत सुभग सजीवनि मूरि ॥ ५९ ॥

बन हित कोल किरात किसोरी । रचीं बिरंचि बिषय सुख भोरी ॥
पान कृमि जिमि कठिन सुभा । तिन्हहि कलेसु न कानन का ॥
कै तापस तिय कानन जोगू । जिन्ह तप हेतु तजा सब भोगू ॥
सिय बन बसिहि तात केहि भाँती । चित्रलिखित कपि देखि डेराती ॥
सुरसर सुभग बनज बन चारी । डाबर जोगु कि हंसकुमारी ॥

अस बिचारि जस आयसु हो। मैं सिख दैं जानकिहि सो॥
जौं सिय भवन रहै कह अंबा। मोहि कहँ हो बहुत अवलंबा॥
सुनि रघुबीर मातु प्रिय बानी। सील सनेह सुधाँ जनु सानी॥

दो. कहि प्रिय बचन बिबेकमय कीन्हि मातु परितोष।
लगे प्रबोधन जानकिहि प्रगटि बिपिन गुन दोष॥ ६०॥

मासपारायण चौदहवाँ विश्राम

मातु समीप कहत सकुचाहीं। बोले समउ समुझि मन माहीं॥
राजकुमारि सिखावन सुनहू। आन भाँति जियँ जनि कछु गुनहू॥
आपन मोर नीक जौं चहहू। बचनु हमार मानि गृह रहहू॥
आयसु मोर सासु सेवका। सब बिधि भामिनि भवन भला॥
एहि ते अधिक धरमु नहिं दूजा। सादर सासु ससुर पद पूजा॥
जब जब मातु करिहि सुधि मोरी। होहि प्रेम बिकल मति भोरी॥
तब तब तुम्ह कहि कथा पुरानी। सुंदरि समुझाहु मृदु बानी॥
कहउँ सुभायँ सपथ सत मोही। सुमुखि मातु हित राखउँ तोही॥

दो. गुर श्रुति संमत धरम फलु पा बिनहिं कलेस।
हठ बस सब संकट सहे गालव नहुष नरेस॥ ६१॥

मैं पुनि करि प्रवान पितु बानी। बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी॥
दिवस जात नहिं लागिहि बारा। सुंदरि सिखवनु सुनहु हमारा॥
जौ हठ करहु प्रेम बस बामा। तौ तुम्ह दुखु पाब परिनामा॥
काननु कठिन भयंकरु भारी। घोर घामु हिम बारि बयारी॥
कुस कंटक मग काँकर नाना। चलब पयादेहिं बिनु पदत्राना॥
चरन कमल मुदु मंजु तुम्हारे। मारग अगम भूमिधर भारे॥
कंदर खोह नदीं नद नारे। अगम अगाध न जाहिं निहारे॥
भालु बाघ बृक केहरि नागा। करहिं नाद सुनि धीरजु भागा॥

दो. भूमि सयन बलकल बसन असनु कंद फल मूल।
ते कि सदा सब दिन मिलिहिं सबु समय अनुकूल॥ ६२॥

नर अहार रजनीचर चरहीं। कपट बेष बिधि कोटिक करहीं॥
लागइ अति पहार कर पानी। बिपिन बिपति नहिं जा बखानी॥
ब्याल कराल बिहग बन घोरा। निसिचर निकर नारि नर चोरा॥
डरपहिं धीर गहन सुधि आँ। मृगलोचनि तुम्ह भीरु सुभाँ॥
हंसगवनि तुम्ह नहिं बन जोगू। सुनि अपजसु मोहि देहि लोगू॥
मानस सलिल सुधाँ प्रतिपाली। जिइ कि लवन पयोधि मराली॥

नव रसाल बन बिहरनसीला। सोह कि कोकिल बिपिन करीला॥
रहहु भवन अस हृदयँ बिचारी। चंदबदनि दुखु कानन भारी॥

दो. सहज सुहृद गुर स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि॥
सो पछिता अघा उर अवसि हो हित हानि॥ ६३॥

सुनि मृदु बचन मनोहर पिय के। लोचन ललित भरे जल सिय के॥
सीतल सिख दाहक भइ कैंसें। चकइहि सरद चंद निसि जैंसें॥
उतरु न आव बिकल बैदेही। तजन चहत सुचि स्वामि सनेही॥
बरबस रोकि बिलोचन बारी। धरि धीरजु उर अवनिकुमारी॥
लागि सासु पग कह कर जोरी। छमबि देबि बड़ि अबिनय मोरी॥
दीन्हि प्रानपति मोहि सिख सो। जेहि बिधि मोर परम हित हो॥
मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं। पिय बियोग सम दुखु जग नाहीं॥

दो. प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुखद सुजान।
तुम्ह बिनु रघुकुल कुमुद बिधु सुरपुर नरक समान॥ ६४॥

मातु पिता भगिनी प्रिय भा। प्रिय परिवारु सुहृद समुदा॥
सासु ससुर गुर सजन सहा। सुत सुंदर सुसील सुखदा॥

जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते। पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते॥
तनु धनु धामु धरनि पुर राजू। पति बिहीन सबु सोक समाजू॥
भोग रोगसम भूषन भारू। जम जातना सरिस संसारू॥
प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं। मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं॥
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी। तैसि नाथ पुरुष बिनु नारी॥
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारें। सरद बिमल बिधु बदनु निहारें॥

दो. खग मृग परिजन नगरु बनु बलकल बिमल दुकूल।
नाथ साथ सुरसदन सम परनसाल सुख मूल॥ ६५॥

बनदेवीं बनदेव उदारा। करिहहिं सासु ससुर सम सारा॥
कुस किसलय साथरी सुहा। प्रभु सँग मंजु मनोज तुरा॥
कंद मूल फल अमि अहारू। अवध सौध सत सरिस पहारू॥
छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकि। रहिहउँ मुदित दिवस जिमि कोकी॥
बन दुख नाथ कहे बहुतेरे। भय बिषाद परिताप घनेरे॥
प्रभु बियोग लवलेस समाना। सब मिलि होहिं न कृपानिधाना॥
अस जियँ जानि सुजान सिरोमनि। ले संग मोहि छाड़ि जनि॥
बिनती बहुत करौं का स्वामी। करुनामय उर अंतरजामी॥

दो. राखि अवध जो अवधि लगि रहत न जनिहिं प्रान।
दीनबंधु संदर सुखद सील सनेह निधान॥ ६६॥

मोहि मग चलत न होहि हारी। छिनु छिनु चरन सरोज निहारी॥
सबहि भाँति पिय सेवा करिहौं। मारग जनित सकल श्रम हरिहौं॥
पाय पखारी बैठि तरु छाहीं। करिहउँ बा मुदित मन माहीं॥
श्रम कन सहित स्याम तनु देखें। कहँ दुख समउ प्रानपति पेखें॥
सम महि तृन तरुपल्लव डासी। पाग पलोटिहि सब निसि दासी॥
बारबार मृदु मूरति जोही। लागहि तात बयारि न मोही।
को प्रभु सँग मोहि चितवनिहारा। सिंघबधुहि जिमि ससक सिआरा॥
मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू। तुम्हहि उचित तप मो कहुँ भोगू॥

दो. ऐसे बचन कठोर सुनि जौं न ह्रदउ बिलगान।
तौ प्रभु बिषम बियोग दुख सहिहहिं पावँर प्रान॥ ६७॥

अस कहि सीय बिकल भइ भारी। बचन बियोगु न सकी सँभारी॥
देखि दसा रघुपति जियँ जाना। हठि राखें नहिं राखिहि प्राना॥
कहे कृपाल भानुकुलनाथा। परिहरि सोचु चलहु बन साथा॥
नहिं बिषाद कर अवसरु आजू। बेगि करहु बन गवन समाजू॥

कहि प्रिय बचन प्रिया समुझा। लगे मातु पद आसिष पा॥
बेगि प्रजा दुख मेटब आ। जननी निठुर बिसरि जनि जा॥
फिरहि दसा बिधि बहुरि कि मोरी। देखिहउँ नयन मनोहर जोरी॥
सुदिन सुघरी तात कब होहि। जननी जित बदन बिधु जोहि॥

दो. बहुरि बच्छ कहि लालु कहि रघुपति रघुबर तात।
कबहिं बोला लगा हियँ हरषि निरखिहउँ गात॥ ६८॥

लखि सनेह कातरि महतारी। बचनु न आव बिकल भइ भारी॥
राम प्रबोधु कीन्ह बिधि नाना। समउ सनेहु न जा बखाना॥
तब जानकी सासु पग लागी। सुनि माय मैं परम अभागी॥
सेवा समय दैं बनु दीन्हा। मोर मनोरथु सफल न कीन्हा॥
तजब छोभु जनि छाड़ि छोहू। करमु कठिन कछु दोसु न मोहू॥
सुनि सिय बचन सासु अकुलानी। दसा कवनि बिधि कहौं बखानी॥
बारहि बार ला उर लीन्ही। धरि धीरजु सिख आसिष दीन्ही॥
अचल हो अहिवातु तुम्हारा। जब लगि गंग जमुन जल धारा॥

दो. सीतहि सासु असीस सिख दीन्हि अनेक प्रकार।
चली ना पद पदुम सिरु अति हित बारहिं बार॥ ६९॥

समाचार जब लछिमन पा। ब्याकुल बिलख बदन उठि धा॥
कंप पुलक तन नयन सनीरा। गहे चरन अति प्रेम अधीरा॥
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े। मीनु दीन जनु जल तें काढ़े॥
सोचु हृदयँ बिधि का होनिहारा। सबु सुखु सुकृत सिरान हमारा॥
मो कहुँ काह कहब रघुनाथा। रखिहहिं भवन कि लेहहिं साथा॥
राम बिलोकि बंधु कर जोरें। देह गेह सब सन तृनु तोरें॥
बोले बचनु राम नय नागर। सील सनेह सरल सुख सागर॥
तात प्रेम बस जनि कदराहू। समुझि हृदयँ परिनाम उछाहू॥

दो. मातु पिता गुरु स्वामि सिख सिर धरि करहि सुभायँ।
लहे लाभु तिन्ह जनम कर नतरु जनमु जग जायँ॥ ७०॥

अस जियँ जानि सुनहु सिख भा। करहु मातु पितु पद सेवका॥
भवन भरतु रिपुसूदन नाहीं। रा बृद्ध मम दुखु मन माहीं॥
मैं बन जाँ तुम्हहि ले साथा। हो सबहि बिधि अवध अनाथा॥
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू। सब कहुँ परइ दुसह दुख भारू॥
रहहु करहु सब कर परितोषू। नतरु तात होहि बड़ दोषू॥
जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृपु अवसि नरक अधिकारी॥

रहहु तात असि नीति बिचारी। सुनत लखनु भ ब्याकुल भारी॥
सिरें बचन सूखि ग कैंसें। परसत तुहिन तामरसु जैसें॥

दो. उतरु न आवत प्रेम बस गहे चरन अकुला।
नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह तजहु त काह बसा॥ ७१॥

दीन्हि मोहि सिख नीकि गोसां। लागि अगम अपनी कदरां॥
नरबर धीर धरम धुर धारी। निगम नीति कहुँ ते अधिकारी॥
मैं सिसु प्रभु सनेहँ प्रतिपाला। मंदरु मेरु कि लेहिं मराला॥
गुर पितु मातु न जानउँ काहू। कहउँ सुभा नाथ पतिआहू॥
जहँ लगि जगत सनेह सगा। प्रीति प्रतीति निगम निजु गा॥
मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी। दीनबंधु उर अंतरजामी॥
धरम नीति उपदेसि ताही। कीरति भूति सुगति प्रिय जाही॥
मन क्रम बचन चरन रत हो। कृपासिंधु परिहरि कि सो॥

दो. करुनासिंधु सुबंध के सुनि मृदु बचन बिनीत।
समुझा उर ला प्रभु जानि सनेहँ सभीत॥ ७२॥

मागहु बिदा मातु सन जा। आवहु बेगि चलहु बन भा॥

मुदित भ सुनि रघुबर बानी। भयउ लाभ बड़ गइ बड़ि हानी॥
हरषित हृदयँ मातु पहिं आ। मनहुँ अंध फिरि लोचन पा।
जा जननि पग नायउ माथा। मनु रघुनंदन जानकि साथा॥
पूँछे मातु मलिन मन देखी। लखन कही सब कथा बिसेषी॥
ग सहमि सुनि बचन कठोरा। मृगी देखि दव जनु चहु ओरा॥
लखन लखे भा अनरथ आजू। एहिं सनेह बस करब अकाजू॥
मागत बिदा सभय सकुचाहीं। जा संग बिधि कहिहि कि नाही॥

दो. समुझि सुमित्राँ राम सिय रूप सुसीलु सुभा।
नृप सनेहु लखि धुने सिरु पापिनि दीन्ह कुदा॥ ७३॥

धीरजु धरे कुवसर जानी। सहज सुहृद बोली मृदु बानी॥
तात तुम्हारि मातु बैदेही। पिता रामु सब भाँति सनेही॥
अवध तहाँ जहँ राम निवासू। तहँइँ दिवसु जहँ भानु प्रकासू॥
जौ पै सीय रामु बन जाहीं। अवध तुम्हार काजु कछु नाहिं॥
गुर पितु मातु बंधु सुर सा। सेहिं सकल प्रान की नां॥
रामु प्रानप्रिय जीवन जी के। स्वारथ रहित सखा सबही कै॥
पूजनीय प्रिय परम जहाँ तें। सब मानिहिं राम के नातें॥
अस जियँ जानि संग बन जाहू। लेहु तात जग जीवन लाहू॥

दो. भूरि भाग भाजनु भयहु मोहि समेत बलि जाँ।
जौम तुम्हरें मन छाड़ि छलु कीन्ह राम पद ठाँ॥ ७४॥

पुत्रवती जुबती जग सो। रघुपति भगतु जासु सुतु हो॥
नतरु बाँझ भलि बादि बिआनी। राम बिमुख सुत तें हित जानी॥
तुम्हरेहिं भाग रामु बन जाहीं। दूसर हेतु तात कछु नाहीं॥
सकल सुकृत कर बड़ फलु एहू। राम सीय पद सहज सनेहू॥
राग रोषु इरिषा मदु मोहू। जनि सपनेहुँ इन्ह के बस होहू॥
सकल प्रकार बिकार बिहा। मन क्रम बचन करेहु सेवका॥
तुम्ह कहुँ बन सब भाँति सुपासू। सँग पितु मातु रामु सिय जासू॥
जेहिं न रामु बन लहहिं कलेसू। सुत सो करेहु इहइ उपदेसू॥

छं. उपदेसु यहु जेहिं तात तुम्हरे राम सिय सुख पावहीं।
पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति बन बिसरावहीं।
तुलसी प्रभुहि सिख दे आयसु दीन्ह पुनि आसिष द।
रति हो अबिरल अमल सिय रघुबीर पद नित नित न॥

सो. मातु चरन सिरु ना चले तुरत संकित हृदयँ।

बागुर बिषम तोरा मनहुँ भाग मृगु भाग बस ॥ ७५ ॥

ग लखनु जहँ जानकिनाथू । भे मन मुदित पा प्रिय साथू ॥
बंदि राम सिय चरन सुहा । चले संग नृपमंदिर आ ॥
कहहिं परसपर पुर नर नारी । भलि बना बिधि बात बिगारी ॥
तन कृस दुखु बदन मलीने । बिकल मनहुँ माखी मधु छीने ॥
कर मीजहिं सिरु धुनि पछिताहीं । जनु बिन पंख बिहग अकुलाहीं ॥
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा । बरनि न जा बिषादु अपारा ॥
सचिवँ उठा रा बैठारे । कहि प्रिय बचन रामु पगु धारे ॥
सिय समेत दो तनय निहारी । ब्याकुल भयउ भूमिपति भारी ॥

दो. सीय सहित सुत सुभग दो देखि देखि अकुला ।
बारहिं बार सनेह बस रा ले उर ला ॥ ७६ ॥

सकइ न बोलि बिकल नरनाहू । सोक जनित उर दारुन दाहू ॥
ना सीसु पद अति अनुरागा । उठि रघुबीर बिदा तब मागा ॥
पितु असीस आयसु मोहि दीजै । हरष समय बिसमउ कत कीजै ॥
तात किँ प्रिय प्रेम प्रमादू । जसु जग जा हो अपबादू ॥
सुनि सनेह बस उठि नरनाहाँ । बैठारे रघुपति गहि बाहाँ ॥

सुनहु तात तुम्ह कहुँ मुनि कहहीं। रामु चराचर नायक अहहीं॥
सुभ अरु असुभ करम अनुहारी। ईस दे फलु हृदयँ बिचारी॥
करइ जो करम पाव फल सो। निगम नीति असि कह सबु को॥

दो. -औरु करै अपराधु को और पाव फल भोगु।
अति बिचित्र भगवंत गति को जग जानै जोगु॥ ७७॥

रायँ राम राखन हित लागी। बहुत उपाय कि छलु त्यागी॥
लखी राम रुख रहत न जाने। धरम धुरंधर धीर सयाने॥
तब नृप सीय ला उर लीन्ही। अति हित बहुत भाँति सिख दीन्ही॥
कहि बन के दुख दुसह सुना। सासु ससुर पितु सुख समुझा॥
सिय मनु राम चरन अनुरागा। घरु न सुगमु बनु बिषमु न लागा॥
औरउ सबहिं सीय समुझा। कहि कहि बिपिन बिपति अधिका॥
सचिव नारि गुर नारि सयानी। सहित सनेह कहहिं मृदु बानी॥
तुम्ह कहुँ तौ न दीन्ह बनबासू। करहु जो कहहिं ससुर गुर सासू॥

दो. -सिख सीतलि हित मधुर मृदु सुनि सीतहि न सोहानि।
सरद चंद चंदनि लगत जनु चक अकुलानि॥ ७८॥

सीय सकुच बस उतरु न दे। सो सुनि तमकि उठी कैके॥
मुनि पट भूषन भाजन आनी। आगें धरि बोली मृदु बानी॥
नृपहि प्रान प्रिय तुम्ह रघुबीरा। सील सनेह न छाड़िहि भीरा॥
सुकृत सुजसु परलोकु नसा। तुम्हहि जान बन कहिहि न का॥
अस बिचारि सो करहु जो भावा। राम जननि सिख सुनि सुखु पावा॥
भूपहि बचन बानसम लागे। करहिं न प्रान पयान अभागे॥
लोग बिकल मुरुछित नरनाहू। काह करि कछु सूझ न काहू॥
रामु तुरत मुनि बेषु बना। चले जनक जननिहि सिरु ना॥

दो. सजि बन साजु समाजु सबु बनिता बंधु समेत।
बंदि बिप्र गुर चरन प्रभु चले करि सबहि अचेत॥ ७९॥

निकसि बसिष्ठ द्वार भ ठाढ़े। देखे लोग बिरह दव दाढ़े॥
कहि प्रिय बचन सकल समुझा। बिप्र बृंद रघुबीर बोला॥
गुर सन कहि बरषासन दीन्हे। आदर दान बिनय बस कीन्हे॥
जाचक दान मान संतोषे। मीत पुनीत प्रेम परितोषे॥
दासीं दास बोला बहोरी। गुरहि सौंपि बोले कर जोरी॥
सब कै सार सँभार गोसां। करबि जनक जननी की ना॥
बारहिं बार जोरि जुग पानी। कहत रामु सब सन मृदु बानी॥

सो सब भाँति मोर हितकारी। जेहि तें रहै भुआल सुखारी॥

दो. मातु सकल मोरे बिरहँ जेहिं न होहिं दुख दीन।
सो उपा तुम्ह करेहु सब पुर जन परम प्रबीन॥ ८०॥

एहि बिधि राम सबहि समुझावा। गुर पद पदुम हरषि सिरु नावा।
गनपती गौरि गिरीसु मना। चले असीस पा रघुरा॥
राम चलत अति भयउ बिषादू। सुनि न जा पुर आरत नादू॥
कुसगुन लंक अवध अति सोकू। हहरष बिषाद बिबस सुरलोकू॥
गइ मुरुछा तब भूपति जागे। बोलि सुमंत्रु कहन अस लागे॥
रामु चले बन प्रान न जाहीं। केहि सुख लागि रहत तन माहीं।
एहि तें कवन ब्यथा बलवाना। जो दुखु पा तजहिं तनु प्राना॥
पुनि धरि धीर कहइ नरनाहू। लै रथु संग सखा तुम्ह जाहू॥

दो. -सुठि सुकुमार कुमार दो जनकसुता सुकुमारि।
रथ चढ़ा देखरा बनु फिरेहु गँ दिन चारि॥ ८१॥

जौ नहिं फिरहिं धीर दो भा। सत्यसंध दृढ़ब्रत रघुरा॥
तौ तुम्ह बिनय करेहु कर जोरी। फेरि प्रभु मिथिलेसकिसोरी॥

जब सिय कानन देखि डेरा। कहेहु मोरि सिख अवसरु पा॥
सासु ससुर अस कहे सँदेसू। पुत्रि फिरि बन बहुत कलेसू॥
पितृगृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी। रहेहु जहाँ रुचि हो तुम्हारी॥
एहि बिधि करेहु उपाय कदंबा। फिरइ त हो प्रान अवलंबा॥
नाहिं त मोर मरनु परिनामा। कछु न बसा भँ बिधि बामा॥
अस कहि मुरुछि परा महि रा। रामु लखनु सिय आनि देखा॥

दो. -पा रजायसु ना सिरु रथु अति बेग बना।
गयउ जहाँ बाहेर नगर सीय सहित दो भा॥ ८२॥

तब सुमंत्र नृप बचन सुना। करि बिनती रथ रामु चढ़ा॥
चढ़ि रथ सीय सहित दो भा। चले हृदयँ अवधहि सिरु ना॥
चलत रामु लखि अवध अनाथा। बिकल लोग सब लागे साथा॥
कृपासिंधु बहुबिधि समुझावहिं। फिरहिं प्रेम बस पुनि फिरि आवहिं॥
लागति अवध भयावनि भारी। मानहुँ कालराति अँधिआरी॥
घोर जंतु सम पुर नर नारी। डरपहिं एकहि एक निहारी॥
घर मसान परिजन जनु भूता। सुत हित मीत मनहुँ जमदूता॥
बागन्ह बिटप बेलि कुम्हिलाहीं। सरित सरोवर देखि न जाहीं॥

दो. हय गय कोटिन्ह केलिमृग पुरपसु चातक मोर।
पिक रथांग सुक सारिका सारस हंस चकोर॥ ८३॥

राम बियोग बिकल सब ठाढ़े। जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े॥
नगरु सफल बनु गहबर भारी। खग मृग बिपुल सकल नर नारी॥
बिधि कैके किरातिनि कीन्ही। जेंहि दव दुसह दसहुँ दिसि दीन्ही॥
सहि न सके रघुबर बिरहागी। चले लोग सब ब्याकुल भागी॥
सबहिं बिचार कीन्ह मन माहीं। राम लखन सिय बिनु सुखु नाहीं॥
जहाँ रामु तहँ सबु समाजू। बिनु रघुबीर अवध नहिं काजू॥
चले साथ अस मंत्रु दृढ़ा। सुर दुर्लभ सुख सदन बिहा॥
राम चरन पंकज प्रिय जिन्हही। बिषय भोग बस करहिं कि तिन्हही॥

दो. बालक बृद्ध बिहा गृँह लगे लोग सब साथ।
तमसा तीर निवासु किय प्रथम दिवस रघुनाथ॥ ८४॥

रघुपति प्रजा प्रेमबस देखी। सदय हृदयँ दुखु भयउ बिसेषी॥
करुनामय रघुनाथ गोसाँई। बेगि पाहिं पीर परा॥
कहि सप्रेम मृदु बचन सुहा। बहुबिधि राम लोग समुझा॥
कि धरम उपदेस घनेरे। लोग प्रेम बस फिरहिं न फेरे॥

सीलु सनेहु छाड़ि नहिं जा। असमंजस बस भे रघुरा॥
लोग सोग श्रम बस ग सो। कछुक देवमायाँ मति मो॥
जबहिं जाम जुग जामिनि बीती। राम सचिव सन कहे सप्रीती॥
खोज मारि रथु हाँकहु ताता। आन उपायँ बनिहि नहिं बाता॥

दो. राम लखन सुय जान चढ़ि संभु चरन सिरु ना॥
सचिवँ चलायउ तुरत रथु इत उत खोज दुरा॥ ८५॥

जागे सकल लोग भँ भोरू। गे रघुनाथ भयउ अति सोरू॥
रथ कर खोज कतहहुँ नहिं पावहिं। राम राम कहि चहु दिसि धावहिं॥
मनहुँ बारिनिधि बूड़ जहाजू। भयउ बिकल बड़ बनिक समाजू॥
एकहि एक देंहिं उपदेसू। तजे राम हम जानि कलेसू॥
निंदहिं आपु सराहहिं मीना। धिग जीवनु रघुबीर बिहीना॥
जौं पै प्रिय बियोगु बिधि कीन्हा। तौ कस मरनु न मागें दीन्हा॥
एहि बिधि करत प्रलाप कलापा। आ अवध भरे परितापा॥
बिषम बियोगु न जा बखाना। अवधि आस सब राखहिं प्राना॥

दो. राम दरस हित नेम ब्रत लगे करन नर नारि।
मनहुँ कोक कोकी कमल दीन बिहीन तमारि॥ ८६॥

सीता सचिव सहित दो भा। सृंगबेरपुर पहुँचे जा॥
उतरे राम देवसरि देखी। कीन्ह दंडवत हरषु बिसेषी॥
लखन सचिवँ सियँ कि प्रनामा। सबहि सहित सुखु पायउ रामा॥
गंग सकल मुद मंगल मूला। सब सुख करनि हरनि सब सूला॥
कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा। रामु बिलोकहिं गंग तरंगा॥
सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुना। बिबुध नदी महिमा अधिका॥
मज्जनु कीन्ह पंथ श्रम गय। सुचि जलु पित मुदित मन भय॥
सुमिरत जाहि मिटइ श्रम भारू। तेहि श्रम यह लौकिक ब्यवहारू॥

दो. सुध्द सचिदानंदमय कंद भानुकुल केतु।
चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु॥ ८७॥

यह सुधि गुहँ निषाद जब पा। मुदित लि प्रिय बंधु बोला॥
लि फल मूल भेंट भरि भारा। मिलन चले हिँयँ हरषु अपारा॥
करि दंडवत भेंट धरि आगें। प्रभुहि बिलोकत अति अनुरागें॥
सहज सनेह बिबस रघुरा। पूँछी कुसल निकट बैठा॥
नाथ कुसल पद पंकज देखें। भयउँ भागभाजन जन लेखें॥
देव धरनि धनु धामु तुम्हारा। मैं जनु नीचु सहित परिवारा॥

कृपा करि पुर धारि पा। थापिय जनु सबु लोगु सिहा॥
कहेहु सत्य सबु सखा सुजाना। मोहि दीन्ह पितु आयसु आना॥

दो. बरष चारिदस बासु बन मुनि ब्रत बेषु अहारु।
ग्राम बासु नहिं उचित सुनि गुहहि भयउ दुखु भारु॥ ८८॥

राम लखन सिय रूप निहारी। कहहिं सप्रेम ग्राम नर नारी॥
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे। जिन्ह पठ बन बालक ऐसे॥
एक कहहिं भल भूपति कीन्हा। लोयन लाहु हमहि बिधि दीन्हा॥
तब निषादपति उर अनुमाना। तरु सिंसुपा मनोहर जाना॥
लै रघुनाथहि ठाँ देखावा। कहे राम सब भाँति सुहावा॥
पुरजन करि जोहारु घर आ। रघुबर संध्या करन सिधा॥
गुहँ सँवारि साँथरी डसा। कुस किसलयमय मृदुल सुहा॥
सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी। दोना भरि भरि राखेसि पानी॥

दो. सिय सुमंत्र भ्राता सहित कंद मूल फल खा।
सयन कीन्ह रघुबंसमनि पाय पलोटत भा॥ ८९॥

उठे लखनु प्रभु सोवत जानी। कहि सचिवहि सोवन मृदु बानी॥

कछुक दूर सजि बान सरासन। जागन लगे बैठि बीरासन॥
गुँह बोला पाहरू प्रतीती। ठावँ ठाँव राखे अति प्रीती॥
आपु लखन पहिं बैठे जा। कटि भाथी सर चाप चढ़ा॥
सोवत प्रभुहि निहारि निषादू। भयउ प्रेम बस हृदयँ बिषादू॥
तनु पुलकित जलु लोचन बह। बचन सप्रेम लखन सन कह॥
भूपति भवन सुभायँ सुहावा। सुरपति सदनु न पटतर पावा॥
मनिमय रचित चारु चौबारे। जनु रतिपति निज हाथ सँवारे॥

दो. सुचि सुबिचित्र सुभोगमय सुमन सुगंध सुबास।
पलँग मंजु मनिदीप जहँ सब बिधि सकल सुपास॥ ९०॥

बिबिध बसन उपधान तुरा। छीर फेन मृदु बिसद सुहा॥
तहँ सिय रामु सयन निसि करहीं। निज छबि रति मनोज मदु हरहीं॥
ते सिय रामु साथरीं सो। श्रमित बसन बिनु जाहिं न जो॥
मातु पिता परिजन पुरबासी। सखा सुसील दास अरु दासी॥
जोगवहिं जिन्हहि प्रान की ना। महि सोवत ते राम गोसां॥
पिता जनक जग बिदित प्रभा। ससुर सुरेस सखा रघुरा॥
रामचंदु पति सो बैदेही। सोवत महि बिधि बाम न केही॥
सिय रघुबीर कि कानन जोगू। करम प्रधान सत्य कह लोगू॥

दो. कैकयनंदिनि मंदमति कठिन कुटिलपनु कीन्ह ।
जेहीं रघुनंदन जानकिहि सुख अवसर दुखु दीन्ह ॥ ९१ ॥

भइ दिनकर कुल बिटप कुठारी । कुमति कीन्ह सब बिस्व दुखारी ॥
भयउ बिषादु निषादहि भारी । राम सीय महि सयन निहारी ॥
बोले लखन मधुर मृदु बानी । ग्यान बिराग भगति रस सानी ॥
काहु न को सुख दुख कर दाता । निज कृत करम भोग सबु भ्राता ॥
जोग बियोग भोग भल मंदा । हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा ॥
जनमु मरनु जहँ लगि जग जालू । संपती बिपति करमु अरु कालू ॥
धरनि धामु धनु पुर परिवारू । सरगु नरकु जहँ लगि ब्यवहारू ॥
देखि सुनि गुनि मन माहीं । मोह मूल परमारथु नाहीं ॥

दो. सपनें हो भिखारि नृप रंकु नाकपति हो ।
जागें लाभु न हानि कछु तिमि प्रपंच जियँ जो ॥ ९२ ॥

अस बिचारि नहिं कीजा रोसू । काहुहि बादि न दे दोसू ॥
मोह निसाँ सबु सोवनिहारा । देखि सपन अनेक प्रकारा ॥
एहिं जग जामिनि जागहिं जोगी । परमारथी प्रपंच बियोगी ॥

जानि तबहिं जीव जग जागा। जब जब बिषय बिलास बिरागा॥
हो बिबेकु मोह भ्रम भागा। तब रघुनाथ चरन अनुरागा॥
सखा परम परमारथु एहू। मन क्रम बचन राम पद नेहू॥
राम ब्रह्म परमारथ रूपा। अबिगत अलख अनादि अनूपा॥
सकल बिकार रहित गतभेदा। कहि नित नेति निरूपहिं बेदा।

दो. भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल।
करत चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटहि जग जाल॥ ९३॥

मासपारायण पंद्रहवा विश्राम

सखा समुझि अस परिहरि मोहु। सिय रघुबीर चरन रत होहू॥
कहत राम गुन भा भिनुसारा। जागे जग मंगल सुखदारा॥
सकल सोच करि राम नहावा। सुचि सुजान बट छीर मगावा॥
अनुज सहित सिर जटा बना। देखि सुमंत्र नयन जल छा॥
हृदयँ दाहु अति बदन मलीना। कह कर जोरि बचन अति दीना॥
नाथ कहे अस कोसलनाथा। लै रथु जाहु राम कें साथा॥
बनु देखा सुरसरि अन्हवा। आनेहु फेरि बेगि दो भा॥
लखनु रामु सिय आनेहु फेरी। संसय सकल सँकोच निबेरी॥

दो. नृप अस कहे गोसाँ जस कहइ करौं बलि सो।
करि बिनती पायन्ह परे दीन्ह बाल जिमि रो॥ ९४॥

तात कृपा करि कीजि सो। जातें अवध अनाथ न हो॥
मंत्रहि राम उठा प्रबोधा। तात धरम मतु तुम्ह सबु सोधा॥
सिबि दधीचि हरिचंद नरेसा। सहे धरम हित कोटि कलेसा॥
रंतिदेव बलि भूप सुजाना। धरमु धरे सहि संकट नाना॥
धरमु न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान बखाना॥
मैं सो धरमु सुलभ करि पावा। तजें तिहूँ पुर अपजसु छावा॥
संभावित कहुँ अपजस लाहू। मरन कोटि सम दारुन दाहू॥
तुम्ह सन तात बहुत का कहँ। दिँ उतरु फिरि पातकु लहँ॥

दो. पितु पद गहि कहि कोटि नति बिनय करब कर जोरि।
चिंता कवनिहु बात कै तात करि जनि मोरि॥ ९५॥

तुम्ह पुनि पितु सम अति हित मोरें। बिनती करउँ तात कर जोरें॥
सब बिधि सो करतब्य तुम्हारें। दुख न पाव पितु सोच हमारें॥
सुनि रघुनाथ सचिव संबादू। भयउ सपरिजन बिकल निषादू॥
पुनि कछु लखन कही कटु बानी। प्रभु बरजे बड़ अनुचित जानी॥

सकुचि राम निज सपथ देवा। लखन सँदेसु कहि जनि जा॥
कह सुमंत्रु पुनि भूप सँदेसू। सहि न सकिहि सिय बिपिन कलेसू॥
जेहि बिधि अवध आव फिरि सीया। सो रघुबरहि तुम्हहि करनीया॥
नतरु निपट अवलंब बिहीना। मैं न जिब जिमि जल बिनु मीना॥

दो. मइकें ससरें सकल सुख जबहिं जहाँ मनु मान॥
तँह तब रहिहि सुखेन सिय जब लगि बिपति बिहान॥ ९६॥

बिनती भूप कीन्ह जेहि भाँती। आरति प्रीति न सो कहि जाती॥
पितु सँदेसु सुनि कृपानिधाना। सियहि दीन्ह सिख कोटि बिधाना॥
सासु ससुर गुर प्रिय परिवारू। फिरतु त सब कर मिटै खभारू॥
सुनि पति बचन कहति बैदेही। सुनहु प्रानपति परम सनेही॥
प्रभु करुनामय परम बिबेकी। तनु तजि रहति छाँह किमि छेंकी॥
प्रभा जा कहँ भानु बिहा। कहँ चंद्रिका चंदु तजि जा॥
पतिहि प्रेममय बिनय सुना। कहति सचिव सन गिरा सुहा॥
तुम्ह पितु ससुर सरिस हितकारी। उतरु दैं फिरि अनुचित भारी॥

दो. आरति बस सनमुख भइँ बिलगु न मानब तात।
आरजसुत पद कमल बिनु बादि जहाँ लगि नात॥ ९७॥

पितु बैभव बिलास मैं डीठा। नृप मनि मुकुट मिलित पद पीठा॥
सुखनिधान अस पितु गृह मोरें। पिय बिहीन मन भाव न भोरें॥
ससुर चक्कवइ कोसलरा। भुवन चारिदस प्रगट प्रभा॥
आगें हो जेहि सुरपति ले। अरध सिंघासन आसनु दे॥
ससुरु एतादृस अवध निवासू। प्रिय परिवारु मातु सम सासू॥
बिनु रघुपति पद पदुम परागा। मोहि के सपनेहुँ सुखद न लागा॥
अगम पंथ बनभूमि पहारा। करि केहरि सर सरित अपारा॥
कोल किरात कुरंग बिहंगा। मोहि सब सुखद प्रानपति संगा॥

दो. सासु ससुर सन मोरि हुँति बिनय करबि परि पायँ॥
मोर सोचु जनि करि कछु मैं बन सुखी सुभायँ॥ ९८॥

प्राननाथ प्रिय देवर साथा। बीर धुरीन धरें धनु भाथा॥
नहिं मग श्रमु भ्रमु दुख मन मोरें। मोहि लगि सोचु करि जनि भोरें॥
सुनि सुमंत्रु सिय सीतलि बानी। भयउ बिकल जनु फनि मनि हानी॥
नयन सूझ नहिं सुनइ न काना। कहि न सकइ कछु अति अकुलाना॥
राम प्रबोधु कीन्ह बहु भाँति। तदपि होति नहिं सीतलि छाती॥
जतन अनेक साथ हित कीन्हे। उचित उतर रघुनंदन दीन्हे॥

मेटि जा नहिं राम रजा। कठिन करम गति कछु न बसा॥
राम लखन सिय पद सिरु ना। फिरे बनिक जिमि मूर गवाँई॥

दो. -रथ हाँके हय राम तन हेरि हेरि हिहिनाहिं।
देखि निषाद बिषादबस धुनहिं सीस पछिताहिं॥ ९९॥

जासु बियोग बिकल पसु ऐसे। प्रजा मातु पितु जीहहिं कैसें॥
बरबस राम सुमंत्रु पठा। सुरसरि तीर आपु तब आ॥
मागी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना॥
चरन कमल रज कहुँ सबु कह। मानुष करनि मूरि कछु अह॥
छुत सिला भइ नारि सुहा। पाहन तें न काठ कठिना॥
तरनि मुनि घरिनि हो जा। बाट परइ मोरि नाव उड़ा॥
एहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारू। नहिं जानउँ कछु अउर कबारू॥
जौ प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू॥

छं. पद कमल धो चढ़ा नाव न नाथ उतरा चहौं।
मोहि राम रारि आन दसरथ सपथ सब साची कहौं॥
बरु तीर मारहुँ लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं॥

सो. सुनि केबट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहसे करुनान चितइ जानकी लखन तन॥ १००॥

कृपासिंधु बोले मुसुका। सो करु जेंहि तव नाव न जा॥
वेगि आनु जल पाय पखारू। होत बिलंबु उतारहि पारू॥
जासु नाम सुमरत एक बारा। उतरहिं नर भवसिंधु अपारा॥
सो कृपालु केवटहि निहोरा। जेहिं जगु किय तिहु पगहु ते थोरा॥
पद नख निरखि देवसरि हरषी। सुनि प्रभु बचन मोहँ मति करषी॥
केवट राम रजायसु पावा। पानि कठवता भरि ले आवा॥
अति आनंद उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा॥
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं। एहि सम पुन्यपुंज को नाहीं॥

दो. पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ ले पार॥ १०१॥

उतरि ठाड़ भ सुरसरि रेता। सीयराम गुह लखन समेता॥
केवट उतरि दंडवत कीन्हा। प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा॥
पिय हिय की सिय जाननिहारी। मनि मुदरी मन मुदित उतारी॥

कहे कृपाल लेहि उतरा। केवट चरन गहे अकुला॥
नाथ आजु मैं काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावा॥
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी। आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी॥
अब कछु नाथ न चाहि मोरें। दीनदयाल अनुग्रह तोरें॥
फिरती बार मोहि जे देबा। सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा॥

दो. बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहिं कछु केवटु ले।
बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु दे॥ १०२॥

तब मज्जनु करि रघुकुलनाथा। पूजि पारथिव नायउ माथा॥
सियँ सुरसरिहि कहे कर जोरी। मातु मनोरथ पुरउबि मोरी॥
पति देवर संग कुसल बहोरी। आ करौं जेहिं पूजा तोरी॥
सुनि सिय बिनय प्रेम रस सानी। भइ तब बिमल बारि बर बानी॥
सुनु रघुबीर प्रिया बैदेही। तव प्रभा जग बिदित न केही॥
लोकप होहिं बिलोकत तोरें। तोहि सेवहिं सब सिधि कर जोरें॥
तुम्ह जो हमहि बड़ि बिनय सुना। कृपा कीन्हि मोहि दीन्हि बड़ा॥
तदपि देबि मैं देबि असीसा। सफल होपन हित निज बागीसा॥

दो. प्राननाथ देवर सहित कुसल कोसला आ।

पूजहि सब मनकामना सुजसु रहिहि जग छा ॥ १०३ ॥

गंग बचन सुनि मंगल मूला । मुदित सीय सुरसरि अनुकुला ॥
तब प्रभु गुहहि कहे घर जाहू । सुनत सूख मुखु भा उर दाहू ॥
दीन बचन गुह कह कर जोरी । बिनय सुनहु रघुकुलमनि मोरी ॥
नाथ साथ रहि पंथु देखा । करि दिन चारि चरन सेवका ॥
जेहिं बन जा रहब रघुरा । परनकुटी मैं करबि सुहा ॥
तब मोहि कहँ जसि देब रजा । सो करिहउँ रघुबीर दोहा ॥
सहज सनेह राम लखि तासु । संग लीन्ह गुह हृदय हुलासू ॥
पुनि गुहँ ग्याति बोलि सब लीन्हे । करि परितोषु बिदा तब कीन्हे ॥

दो. तब गनपति सिव सुमिरि प्रभु ना सुरसरिहि माथ ।
सखा अनुज सिया सहित बन गवनु कीन्ह रघुनाथ ॥ १०४ ॥

तेहि दिन भयउ बिटप तर बासू । लखन सखाँ सब कीन्ह सुपासू ॥
प्रात प्रातकृत करि रघुसा । तीरथराजु दीख प्रभु जा ॥
सचिव सत्य श्रध्दा प्रिय नारी । माधव सरिस मीतु हितकारी ॥
चारि पदारथ भरा भँडारु । पुन्य प्रदेस देस अति चारु ॥
छेत्र अगम गढ़ु गाढ़ सुहावा । सपनेहुँ नहिं प्रतिपच्छिन्ह पावा ॥

सेन सकल तीरथ बर बीरा। कलुष अनीक दलन रनधीरा॥
संगमु सिंहासनु सुठि सोहा। छत्रु अखयबटु मुनि मनु मोहा॥
चवँर जमुन अरु गंग तरंगा। देखि होहिं दुख दारिद भंगा॥

दो. सेवहिं सुकृति साधु सुचि पावहिं सब मनकाम।
बंदी बेद पुरान गन कहहिं बिमल गुन ग्राम॥ १०५॥

को कहि सकइ प्रयाग प्रभा। कलुष पुंज कुंजर मृगरा॥
अस तीरथपति देखि सुहावा। सुख सागर रघुबर सुखु पावा॥
कहि सिय लखनहि सखहि सुना। श्रीमुख तीरथराज बड़ा॥
करि प्रनामु देखत बन बागा। कहत महातम अति अनुरागा॥
एहि बिधि आ बिलोकी बेनी। सुमिरत सकल सुमंगल देनी॥
मुदित नहा कीन्हि सिव सेवा। पुजि जथाबिधि तीरथ देवा॥
तब प्रभु भरद्वाज पहिं आ। करत दंडवत मुनि उर ला॥
मुनि मन मोद न कछु कहि जा। ब्रह्मानंद रासि जनु पा॥

दो. दीन्हि असीस मुनीस उर अति अनंदु अस जानि।
लोचन गोचर सुकृत फल मनहुँ कि बिधि आनि॥ १०६॥

कुसल प्रस्न करि आसन दीन्हे। पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हे॥
कंद मूल फल अंकुर नीके। दि आनि मुनि मनहुँ अमी के॥
सीय लखन जन सहित सुहा। अति रुचि राम मूल फल खा॥
भ बिगतश्रम रामु सुखारे। भरव्दाज मृदु बचन उचारे॥
आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू। आजु सुफल जप जोग बिरागू॥
सफल सकल सुभ साधन साजू। राम तुम्हहि अवलोकत आजू॥
लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी। तुम्हारें दरस आस सब पूजी॥
अब करि कृपा देहु बर एहू। निज पद सरसिज सहज सनेहू॥

दो. करम बचन मन छाड़ि छलु जब लगि जनु न तुम्हार।
तब लगि सुखु सपनेहुँ नहीं किँ कोटि उपचार॥

सुनि मुनि बचन रामु सकुचाने। भाव भगति आनंद अघाने॥
तब रघुबर मुनि सुजसु सुहावा। कोटि भाँति कहि सबहि सुनावा॥
सो बड सो सब गुन गन गेहू। जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू॥
मुनि रघुबीर परसपर नवहीं। बचन अगोचर सुखु अनुभवहीं॥
यह सुधि पा प्रयाग निवासी। बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी॥
भरद्वाज आश्रम सब आ। देखन दसरथ सुन सुहा॥
राम प्रनाम कीन्ह सब काहू। मुदित भ लहि लोयन लाहू॥
देहिं असीस परम सुखु पा। फिरे सराहत सुंदरता॥

दो. राम कीन्ह बिश्राम निसि प्रात प्रयाग नहा।
चले सहित सिय लखन जन मुददित मुनिहि सिरु ना॥ १०८॥

राम सप्रेम कहे मुनि पाहीं। नाथ कहि हम केहि मग जाहीं॥
मुनि मन बिहसि राम सन कहहीं। सुगम सकल मग तुम्ह कहुँ अहहीं॥
साथ लागि मुनि सिष्य बोला। सुनि मन मुदित पचासक आ॥
सबन्हि राम पर प्रेम अपारा। सकल कहहि मगु दीख हमारा॥
मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे। जिन्ह बहु जनम सुकृत सब कीन्हे॥
करि प्रनामु रिषि आयसु पा। प्रमुदित हृदयँ चले रघुरा॥
ग्राम निकट जब निकसहि जा। देखहि दरसु नारि नर धा॥
होहि सनाथ जनम फलु पा। फिरहि दुखित मनु संग पठा॥

दो. बिदा कि बटु बिनय करि फिरे पा मन काम।
उतरि नहा जमुन जल जो सरीर सम स्याम॥ १०९॥

सुनत तीरवासी नर नारी। धा निज निज काज बिसारी॥
लखन राम सिय सुन्दरता। देखि करहिं निज भाग्य बड़ा॥
अति लालसा बसहिं मन माहीं। नाँ गाँ बूझत सकुचाहीं॥

जे तिन्ह महुँ बयबिरिध सयाने। तिन्ह करि जुगुति रामु पहिचाने॥
सकल कथा तिन्ह सबहि सुना। बनहि चले पितु आयसु पा॥
सुनि सबिषाद सकल पछिताहीं। रानी रायँ कीन्ह भल नाहीं॥
तेहि अवसर एक तापसु आवा। तेजपुंज लघुबयस सुहावा॥
कवि अलखित गति बेषु बिरागी। मन क्रम बचन राम अनुरागी॥

दो. सजल नयन तन पुलकि निज इष्टदे पहिचानि।
परे दंड जिमि धरनितल दसा न जा बखानि॥ ११०॥

राम सप्रेम पुलकि उर लावा। परम रंक जनु पारसु पावा॥
मनहुँ प्रेमु परमारथु दो। मिलत धरे तन कह सबु को॥
बहुरि लखन पायन्ह सो लागा। लीन्ह उठा उमगि अनुरागा॥
पुनि सिय चरन धूरि धरि सीसा। जननि जानि सिसु दीन्हि असीसा॥
कीन्ह निषाद दंडवत तेही। मिले मुदित लखि राम सनेही॥
पित नयन पुट रूपु पियूषा। मुदित सुसनु पा जिमि भूखा॥
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे। जिन्ह पठ बन बालक ऐसे॥
राम लखन सिय रूपु निहारी। होहिं सनेह बिकल नर नारी॥

दो. तब रघुबीर अनेक बिधि सखहि सिखावनु दीन्ह।

राम रजायसु सीस धरि भवन गवनु तेँइँ कीन्ह ॥ १११ ॥

पुनि सियँ राम लखन कर जोरी । जमुनहि कीन्ह प्रनामु बहोरी ॥
चले ससीय मुदित दो भा । रबितनुजा कइ करत बड़ा ॥
पथिक अनेक मिलहिं मग जाता । कहहिं सप्रेम देखि दो भ्राता ॥
राज लखन सब अंग तुम्हारें । देखि सोचु अति हृदय हमारें ॥
मारग चलहु पयादेहि पाँ । ज्योतिषु झूठ हमारें भाँ ॥
अगमु पंथ गिरि कानन भारी । तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी ॥
करि केहरि बन जा न जो । हम सँग चलहि जो आयसु हो ॥
जाब जहाँ लगि तहँ पहुँचा । फिरब बहोरि तुम्हहि सिरु ना ॥

दो. एहि बिधि पूँछहिं प्रेम बस पुलक गात जलु नैन ।
कृपासिंधु फेरहि तिन्हहि कहि बिनीत मृदु बैन ॥ ११२ ॥

जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं । तिन्हहि नाग सुर नगर सिहाहीं ॥
केहि सुकृतीं केहि घरीं बसा । धन्य पुन्यमय परम सुहा ॥
जहँ जहँ राम चरन चलि जाहीं । तिन्ह समान अमरावति नाहीं ॥
पुन्यपुंज मग निकट निवासी । तिन्हहि सराहहिं सुरपुरबासी ॥
जे भरि नयन बिलोकहिं रामहि । सीता लखन सहित घनस्यामहि ॥

जे सर सरित राम अवगाहहिं। तिन्हहि देव सर सरित सराहहिं॥
जेहि तरु तर प्रभु बैठहिं जा। करहिं कलपतरु तासु बड़ा॥
परसि राम पद पदुम परागा। मानति भूमि भूरि निज भागा॥

दो. छाँह करहि घन बिबुधगन बरषहि सुमन सिहाहिं।
देखत गिरि बन बिहग मृग रामु चले मग जाहिं॥ ११३॥

सीता लखन सहित रघुरा। गाँव निकट जब निकसहिं जा॥
सुनि सब बाल बृद्ध नर नारी। चलहिं तुरत गृहकाजु बिसारी॥
राम लखन सिय रूप निहारी। पा नयनफलु होहिं सुखारी॥
सजल बिलोचन पुलक सरीरा। सब भ मगन देखि दो बीरा॥
बरनि न जा दसा तिन्ह केरी। लहि जनु रंकन्ह सुरमनि ढेरी॥
एकन्ह एक बोलि सिख देहीं। लोचन लाहु लेहु छन एहीं॥
रामहि देखि एक अनुरागे। चितवत चले जाहिं सँग लागे॥
एक नयन मग छबि उर आनी। होहिं सिथिल तन मन बर बानी॥

दो. एक देखिं बट छाँह भलि डासि मृदुल तृन पात।
कहहिं गवाँइ छिनुकु श्रमु गवनब अबहिं कि प्रात॥ ११४॥

एक कलस भरि आनहिं पानी। अँचइ नाथ कहहिं मृदु बानी॥
सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी। राम कृपाल सुसील बिसेषी॥
जानी श्रमित सीय मन माहीं। घरिक बिलंबु कीन्ह बट छाहीं॥
मुदित नारि नर देखहिं सोभा। रूप अनूप नयन मनु लोभा॥
एकटक सब सोहहिं चहुँ ओरा। रामचंद्र मुख चंद चकोरा॥
तरुन तमाल बरन तनु सोहा। देखत कोटि मदन मनु मोहा॥
दामिनि बरन लखन सुठि नीके। नख सिख सुभग भावते जी के॥
मुनिपट कटिन्ह कसें तूनीरा। सोहहिं कर कमलिनि धनु तीरा॥

दो. जटा मुकुट सीसनि सुभग उर भुज नयन बिसाल।
सरद परब बिधु बदन बर लसत स्वेद कन जाल॥ ११५॥

बरनि न जा मनोहर जोरी। सोभा बहुत थोरि मति मोरी॥
राम लखन सिय सुंदरता। सब चितवहिं चित मन मति ला॥
थके नारि नर प्रेम पिआसे। मनहुँ मृगी मृग देखि दिआ से॥
सीय समीप ग्रामतिय जाहीं। पूँछत अति सनेहँ सकुचाहीं॥
बार बार सब लागहिं पाँ। कहहिं बचन मृदु सरल सुभाँ॥
राजकुमारि बिनय हम करहीं। तिय सुभायँ कछु पूँछत डरहीं।
स्वामिनि अबिनय छमबि हमारी। बिलगु न मानब जानि गवाँरी॥

राजकुँर दो सहज सलोने। इन्ह तें लही दुति मरकत सोने॥

दो. स्यामल गौर किसोर बर सुंदर सुषमा ऐन।
सरद सर्बरीनाथ मुखु सरद सरोरुह नैन॥ ११६॥

मासपारायण सोलहवाँ विश्राम
नवान्हपारायण चौथा विश्राम

कोटि मनोज लजावनिहारे। सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे॥
सुनि सनेहमय मंजुल बानी। सकुची सिय मन महुँ मुसुकानी॥
तिन्हहि बिलोकि बिलोकति धरनी। दुहुँ सकोच सकुचित बरबरनी॥
सकुचि सप्रेम बाल मृग नयनी। बोली मधुर बचन पिकबयनी॥
सहज सुभाय सुभग तन गोरे। नामु लखनु लघु देवर मोरे॥
बहुरि बदनु बिधु अंचल ढाँकी। पिय तन चितइ भौंह करि बाँकी॥
खंजन मंजु तिरीछे नयननि। निज पति कहे तिन्हहि सियँ सयननि॥
भइ मुदित सब ग्रामबधूटीं। रंकन्ह राय रासि जनु लूटीं॥

दो. अति सप्रेम सिय पायँ परि बहुबिधि देहिं असीस।
सदा सोहागिनि होहु तुम्ह जब लगि महि अहि सीस॥ ११७॥

पारबती सम पतिप्रिय होहू। देबि न हम पर छाड़ब छोहू॥
पुनि पुनि बिनय करि कर जोरी। जौं एहि मारग फिरि बहोरी॥
दरसनु देब जानि निज दासी। लखीं सीयँ सब प्रेम पिआसी॥
मधुर बचन कहि कहि परितोषीं। जनु कुमुदिनीं कौमुदीं पोषीं॥
तबहिं लखन रघुबर रुख जानी। पूँछे मगु लोगन्हि मृदु बानी॥
सुनत नारि नर भ दुखारी। पुलकित गात बिलोचन बारी॥
मिटा मोदु मन भ मलीने। बिधि निधि दीन्ह लेत जनु छीने॥
समुझि करम गति धीरजु कीन्हा। सोधि सुगम मगु तिन्ह कहि दीन्हा॥

दो. लखन जानकी सहित तब गवनु कीन्ह रघुनाथ।
फेरे सब प्रिय बचन कहि लि ला मन साथ॥ ११८॥

फिरत नारि नर अति पछिताहीं। देहि दोषु देहिं मन माहीं॥
सहित बिषाद परसपर कहहीं। बिधि करतब उलटे सब अहहीं॥
निपट निरंकुस निठुर निसंकू। जेहिं ससि कीन्ह सरुज सकलंकू॥
रूख कलपतरु सागरु खारा। तेहिं पठ बन राजकुमारा॥
जौं पे इन्हहि दीन्ह बनबासू। कीन्ह बादि बिधि भोग बिलासू॥
ए बिचरहिं मग बिनु पदत्राना। रचे बादि बिधि बाहन नाना॥
ए महि परहिं डासि कुस पाता। सुभग सेज कत सृजत बिधाता॥

तरुबर बास इन्हहि बिधि दीन्हा। धवल धाम रचि रचि श्रमु कीन्हा॥

दो. जौं ए मुनि पट धर जटिल सुंदर सुठि सुकुमार।
बिबिध भाँति भूषन बसन बादि कि करतार॥ ११९॥

जौं ए कंद मूल फल खाहीं। बादि सुधादि असन जग माहीं॥
एक कहहिं ए सहज सुहा। आपु प्रगट भ बिधि न बना॥
जहँ लगि बेद कही बिधि करनी। श्रवन नयन मन गोचर बरनी॥
देखहु खोजि भुन दस चारी। कहँ अस पुरुष कहाँ असि नारी॥
इन्हहि देखि बिधि मनु अनुरागा। पटतर जोग बनावै लागा॥
कीन्ह बहुत श्रम ऐक न आ। तेहिं इरिषा बन आनि दुरा॥
एक कहहिं हम बहुत न जानहिं। आपुहि परम धन्य करि मानहिं॥
ते पुनि पुन्यपुंज हम लेखे। जे देखहिं देखिहहिं जिन्ह देखे॥

दो. एहि बिधि कहि कहि बचन प्रिय लेहिं नयन भरि नीर।
किमि चलिहहि मारग अगम सुठि सुकुमार सरीर॥ १२०॥

नारि सनेह बिकल बस होहीं। चक साँझ समय जनु सोहीं॥
मृदु पद कमल कठिन मगु जानी। गहबरि हृदयँ कहहिं बर बानी॥

परसत मृदुल चरन अरुनारे। सकुचति महि जिमि हृदय हमारे॥
जौं जगदीस इन्हहि बनु दीन्हा। कस न सुमनमय मारगु कीन्हा॥
जौं मागा पा बिधि पाहीं। ए रखिहिं सखि आँखिन्ह माहीं॥
जे नर नारि न अवसर आ। तिन्ह सिय रामु न देखन पा॥
सुनि सुरुप बूझहिं अकुला। अब लगि ग कहाँ लगि भा॥
समरथ धा बिलोकहिं जा। प्रमुदित फिरहिं जनमफलु पा॥

दो. अबला बालक बृद्ध जन कर मीजहिं पछिताहिं॥
होहिं प्रेमबस लोग इमि रामु जहाँ जहँ जाहिं॥ १२१॥

गाँव गाँव अस हो अनंदू। देखि भानुकुल कैरव चंदू॥
जे कछु समाचार सुनि पावहिं। ते नृप रानिहि दोसु लगावहिं॥
कहहिं एक अति भल नरनाहू। दीन्ह हमहि जो लोचन लाहू॥
कहहिं परस्पर लोग लोगां। बातें सरल सनेह सुहां॥
ते पितु मातु धन्य जिन्ह जा। धन्य सो नगरु जहाँ तें आ॥
धन्य सो देसु सैलु बन गाँ। जहँ जहँ जाहिं धन्य सो ठाँ॥
सुख पायउ बिरंचि रचि तेही। ए जेहि के सब भाँति सनेही॥
राम लखन पथि कथा सुहा। रही सकल मग कानन छा॥

दो. एहि बिधि रघुकुल कमल रबि मग लोगन्ह सुख देत।
जाहिं चले देखत बिपिन सिय सौमित्रि समेत॥ १२२॥

आगे रामु लखनु बने पाछें। तापस बेष बिराजत काछें॥
उभय बीच सिय सोहति कैसे। ब्रह्म जीव बिच माया जैसे॥
बहुरि कहउँ छबि जसि मन बस। जनु मधु मदन मध्य रति लस॥
उपमा बहुरि कहउँ जियँ जोही। जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही॥
प्रभु पद रेख बीच बिच सीता। धरति चरन मग चलति सभीता॥
सीय राम पद अंक बराँ। लखन चलहिं मगु दाहिन लाँ॥
राम लखन सिय प्रीति सुहा। बचन अगोचर किमि कहि जा॥
खग मृग मगन देखि छबि होहीं। लि चोरि चित राम बटोहीं॥

दो. जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय सिय समेत दो भा।
भव मगु अगमु अनंदु ते बिनु श्रम रहे सिरा॥ १२३॥

अजहुँ जासु उर सपनेहुँ का। बसहुँ लखनु सिय रामु बटा॥
राम धाम पथ पाहि सो। जो पथ पाव कबहुँ मुनि को॥
तब रघुबीर श्रमित सिय जानी। देखि निकट बटु सीतल पानी॥
तहँ बसि कंद मूल फल खा। प्रात नहा चले रघुरा॥

देखत बन सर सैल सुहा। बालमीकि आश्रम प्रभु आ॥
राम दीख मुनि बासु सुहावन। सुंदर गिरि काननु जलु पावन॥
सरनि सरोज बिटप बन फूले। गुंजत मंजु मधुप रस भूले॥
खग मृग बिपुल कोलाहल करहीं। बिरहित बैर मुदित मन चरहीं॥

दो. सुचि सुंदर आश्रमु निरखि हरषे राजिवनेन।
सुनि रघुबर आगमनु मुनि आगें आयउ लेन॥ १२४॥

मुनि कहुँ राम दंडवत कीन्हा। आसिरबादु बिप्रबर दीन्हा॥
देखि राम छबि नयन जुड़ाने। करि सनमानु आश्रमहिं आने॥
मुनिबर अतिथि प्रानप्रिय पा। कंद मूल फल मधुर मगा॥
सिय सौमित्रि राम फल खा। तब मुनि आश्रम दि सुहा॥
बालमीकि मन आनँदु भारी। मंगल मूरति नयन निहारी॥
तब कर कमल जोरि रघुरा। बोले बचन श्रवन सुखदा॥
तुम्ह त्रिकाल दरसी मुनिनाथा। बिस्व बदर जिमि तुम्हरें हाथा॥
अस कहि प्रभु सब कथा बखानी। जेहि जेहि भाँति दीन्ह बनु रानी॥

दो. तात बचन पुनि मातु हित भा भरत अस रा।
मो कहुँ दरस तुम्हार प्रभु सबु मम पुन्य प्रभा॥ १२५॥

देखि पाय मुनिराय तुम्हारे। भ सुकृत सब सुफल हमारे॥
अब जहँ रार आयसु हो। मुनि उदबेगु न पावै को॥
मुनि तापस जिन्ह तें दुखु लहहीं। ते नरेस बिनु पावक दहहीं॥
मंगल मूल बिप्र परितोषू। दहइ कोटि कुल भूसुर रोषू॥
अस जियँ जानि कहि सो ठाँ। सिय सौमित्रि सहित जहँ जाँ॥
तहँ रचि रुचिर परन तृन साला। बासु करौ कछु काल कृपाला॥
सहज सरल सुनि रघुबर बानी। साधु साधु बोले मुनि ग्यानी॥
कस न कहहु अस रघुकुलकेतू। तुम्ह पालक संतत श्रुति सेतू॥

छं. श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी।
जो सृजति जगु पालति हरति रूख पा कृपानिधान की॥
जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचर धनी।
सुर काज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी॥

सो. राम सरुप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर।
अबिगत अकथ अपार नेति नित निगम कह॥ १२६॥

जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे। बिधि हरि संभु नचावनिहारे॥

ते न जानहिं मरमु तुम्हारा। औरु तुम्हहि को जाननिहारा॥
सो जानइ जेहि देहु जना। जानत तुम्हहि तुम्हइ हो जा॥
तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन। जानहिं भगत भगत उर चंदन॥
चिदानंदमय देह तुम्हारी। बिगत बिकार जान अधिकारी॥
नर तनु धरेहु संत सुर काजा। कहहु करहु जस प्राकृत राजा॥
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे। जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे॥
तुम्ह जो कहहु करहु सबु साँचा। जस काछि तस चाहि नाचा॥

दो. पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाँ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाँ॥ १२७॥

सुनि मुनि बचन प्रेम रस साने। सकुचि राम मन महुँ मुसुकाने॥
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी। बानी मधुर अमि रस बोरी॥
सुनहु राम अब कहउँ निकेता। जहाँ बसहु सिय लखन समेता॥
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना। कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना॥
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे। तिन्ह के हिय तुम्ह कहुँ गृह रूरे॥
लोचन चातक जिन्ह करि राखे। रहहिं दरस जलधर अभिलाषे॥
निदरहिं सरित सिंधु सर भारी। रूप बिंदु जल होहिं सुखारी॥
तिन्ह के हृदय सदन सुखदायक। बसहु बंधु सिय सह रघुनायक॥

दो. जसु तुम्हार मानस बिमल हंसिनि जीहा जासु।
मुकुताहल गुन गन चुनइ राम बसहु हियँ तासु॥ १२८॥

प्रभु प्रसाद सुचि सुभग सुबासा। सादर जासु लहइ नित नासा॥
तुम्हहि निबेदित भोजन करहीं। प्रभु प्रसाद पट भूषन धरहीं॥
सीस नवहिं सुर गुरु द्विज देखी। प्रीति सहित करि बिनय बिसेषी॥
कर नित करहिं राम पद पूजा। राम भरोस हृदयँ नहि दूजा॥
चरन राम तीरथ चलि जाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन माहीं॥
मंत्रराजु नित जपहिं तुम्हारा। पूजहिं तुम्हहि सहित परिवारा॥
तरपन होम करहिं बिधि नाना। बिप्र जेवाँइ देहिं बहु दाना॥
तुम्ह तें अधिक गुरहि जियँ जानी। सकल भायँ सेवहिं सनमानी॥

दो. सबु करि मागहिं एक फलु राम चरन रति हो।
तिन्ह कें मन मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दो॥ १२९॥

काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥
जिन्ह कें कपट दंभ नहिं माया। तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया॥
सब के प्रिय सब के हितकारी। दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी॥

कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत सरन तुम्हारी॥
तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन माहीं॥
जननी सम जानहिं परनारी। धनु पराव बिष तें बिष भारी॥
जे हरषहिं पर संपति देखी। दुखित होहिं पर बिपति बिसेषी॥
जिन्हहि राम तुम्ह प्रानपिआरे। तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे॥

दो. स्वामि सखा पितु मातु गुर जिन्ह के सब तुम्ह तात।
मन मंदिर तिन्ह कें बसहु सीय सहित दो भ्रात॥ १३०॥

अवगुन तजि सब के गुन गहहीं। बिप्र धेनु हित संकट सहहीं॥
नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका। घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका॥
गुन तुम्हार समुझइ निज दोसा। जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसा॥
राम भगत प्रिय लागहिं जेही। तेहि उर बसहु सहित बैदेही॥
जाति पाँति धनु धरम बड़ा। प्रिय परिवार सदन सुखदा॥
सब तजि तुम्हहि रहइ उर ला। तेहि के हृदयँ रहहु रघुरा॥
सरगु नरकु अपबरगु समाना। जहँ तहँ देख धरें धनु बाना॥
करम बचन मन रार चेरा। राम करहु तेहि कें उर डेरा॥

दो. जाहि न चाहि कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु।

बसहु निरंतर तासु मन सो रार निज गेहु ॥ १३१ ॥

एहि बिधि मुनिबर भवन देखा । बचन सप्रेम राम मन भा ॥
कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक । आश्रम कहउँ समय सुखदायक ॥
चित्रकूट गिरि करहु निवासू । तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू ॥
सैलु सुहावन कानन चारू । करि केहरि मृग बिहग बिहारू ॥
नदी पुनीत पुरान बखानी । अत्रिप्रिया निज तपबल आनी ॥
सुरसरि धार नाँ मंदाकिनि । जो सब पातक पोतक डाकिनि ॥
अत्रि आदि मुनिबर बहु बसहीं । करहिं जोग जप तप तन कसहीं ॥
चलहु सफल श्रम सब कर करहू । राम देहु गौरव गिरिबरहू ॥

दो. चित्रकूट महिमा अमित कहीं महामुनि गा ।
आ नहा सरित बर सिय समेत दो भा ॥ १३२ ॥

रघुबर कहे लखन भल घाटू । करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू ॥
लखन दीख पय उतर करारा । चहुँ दिसि फिरे धनुष जिमि नारा ॥
नदी पनच सर सम दम दाना । सकल कलुष कलि साज नाना ॥
चित्रकूट जनु अचल अहेरी । चुकइ न घात मार मुठभेरी ॥
अस कहि लखन ठाँ देखरावा । थलु बिलोकि रघुबर सुखु पावा ॥

रमे राम मनु देवन्ह जाना। चले सहित सुर थपति प्रधाना॥
कोल किरात बेष सब आ। रचे परन तृन सदन सुहा॥
बरनि न जाहि मंजु दु साला। एक ललित लघु एक बिसाला॥

दो. लखन जानकी सहित प्रभु राजत रुचिर निकेत।
सोह मदनु मुनि बेष जनु रति रितुराज समेत॥ १३३॥

मासपारायण सत्रहँवा विश्राम

अमर नाग किंनर दिसिपाला। चित्रकूट आ तेहि काला॥
राम प्रनामु कीन्ह सब काहू। मुदित देव लहि लोचन लाहू॥
बरषि सुमन कह देव समाजू। नाथ सनाथ भ हम आजू॥
करि बिनती दुख दुसह सुना। हरषित निज निज सदन सिधा॥
चित्रकूट रघुनंदनु छा। समाचार सुनि सुनि मुनि आ॥
आवत देखि मुदित मुनिबृंदा। कीन्ह दंडवत रघुकुल चंदा॥
मुनि रघुबरहि ला उर लेहीं। सुफल होन हित आसिष देहीं॥
सिय सौमित्र राम छबि देखहिं। साधन सकल सफल करि लेखहिं॥

दो. जथाजोग सनमानि प्रभु बिदा कि मुनिबृंद।
करहि जोग जप जाग तप निज आश्रमन्हि सुछंद॥ १३४॥

यह सुधि कोल किरातन्ह पा। हरषे जनु नव निधि घर आ॥
कंद मूल फल भरि भरि दोना। चले रंक जनु लूटन सोना॥
तिन्ह महँ जिन्ह देखे दो भ्राता। अपर तिन्हहि पूँछहि मगु जाता॥
कहत सुनत रघुबीर निका। आ सबन्हि देखे रघुरा॥
करहिं जोहारु भेंट धरि आगे। प्रभुहि बिलोकहिं अति अनुरागे॥
चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े। पुलक सरीर नयन जल बाढ़े॥
राम सनेह मगन सब जाने। कहि प्रिय बचन सकल सनमाने॥
प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी। बचन बिनीत कहहिं कर जोरी॥

दो. अब हम नाथ सनाथ सब भ देखि प्रभु पाय।
भाग हमारे आगमनु रार कोसलराय॥ १३५॥

धन्य भूमि बन पंथ पहारा। जहँ जहँ नाथ पा तुम्ह धारा॥
धन्य बिहग मृग काननचारी। सफल जनम भ तुम्हहि निहारी॥
हम सब धन्य सहित परिवारा। दीख दरसु भरि नयन तुम्हारा॥
कीन्ह बासु भल ठाँ बिचारी। इहाँ सकल रितु रहब सुखारी॥
हम सब भाँति करब सेवका। करि केहरि अहि बाघ बरा॥
बन बेहड़ गिरि कंदर खोहा। सब हमार प्रभु पग पग जोहा॥

तहँ तहँ तुम्हहि अहेर खेलाब। सर निरझर जलठाँ देखाब॥
हम सेवक परिवार समेता। नाथ न सकुचब आयसु देता॥

दो. बेद बचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुना ऐन।
बचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालक बैन॥ १३६॥

रामहि केवल प्रेमु पिआरा। जानि ले जो जाननिहारा॥
राम सकल बनचर तब तोषे। कहि मृदु बचन प्रेम परिपोषे॥
बिदा कि सिर ना सिधा। प्रभु गुन कहत सुनत घर आ॥
एहि बिधि सिय समेत दो भा। बसहिं बिपिन सुर मुनि सुखदा॥
जब ते आ रहे रघुनायकु। तब तें भयउ बनु मंगलदायकु॥
फूलहिं फलहिं बिटप बिधि नाना॥ मंजु बलित बर बेलि बिताना॥
सुरतरु सरिस सुभायँ सुहा। मनहुँ बिबुध बन परिहरि आ॥
गंज मंजुतर मधुकर श्रेनी। त्रिबिध बयारि बहइ सुख देनी॥

दो. नीलकंठ कलकंठ सुक चातक चक्क चकोर।
भाँति भाँति बोलहिं बिहग श्रवन सुखद चित चोर॥ १३७॥

केरि केहरि कपि कोल कुरंगा। बिगतबैर बिचरहिं सब संगा॥

फिरत अहेर राम छबि देखी। होहिं मुदित मृगबंद बिसेषी॥
बिबुध बिपिन जहँ लगि जग माहीं। देखि राम बनु सकल सिहाहीं॥
सुरसरि सरसइ दिनकर कन्या। मेकलसुता गोदावरि धन्या॥
सब सर सिंधु नदी नद नाना। मंदाकिनि कर करहिं बखाना॥
उदय अस्त गिरि अरु कैलासू। मंदर मेरु सकल सुरबासू॥
सैल हिमाचल आदिक जेते। चित्रकूट जसु गावहिं तेते॥
बिंधि मुदित मन सुखु न समा। श्रम बिनु बिपुल बड़ा पा॥

दो. चित्रकूट के बिहग मृग बेलि बिटप तृन जाति।
पुन्य पुंज सब धन्य अस कहहिं देव दिन राति॥ १३८॥

नयनवंत रघुबरहि बिलोकी। पा जनम फल होहिं बिसोकी॥
परसि चरन रज अचर सुखारी। भ परम पद के अधिकारी॥
सो बनु सैलु सुभायँ सुहावन। मंगलमय अति पावन पावन॥
महिमा कहि कवनि बिधि तासू। सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू॥
पय पयोधि तजि अवध बिहा। जहँ सिय लखनु रामु रहे आ॥
कहि न सकहिं सुषमा जसि कानन। जौं सत सहस होंहिं सहसानन॥
सो मैं बरनि कहौं बिधि केहीं। डाबर कमठ कि मंदर लेहीं॥
सेवहिं लखनु करम मन बानी। जा न सीलु सनेहु बखानी॥

दो. -छिनु छिनु लखि सिय राम पद जानि आपु पर नेहु।
करत न सपनेहुँ लखनु चितु बंधु मातु पितु गेहु॥ १३९॥

राम संग सिय रहति सुखारी। पुर परिजन गृह सुरति बिसारी॥
छिनु छिनु पिय बिधु बदनु निहारी। प्रमुदित मनहुँ चकोरकुमारी॥
नाह नेहु नित बढ़त बिलोकी। हरषित रहति दिवस जिमि कोकी॥
सिय मनु राम चरन अनुरागा। अवध सहस सम बनु प्रिय लागा॥
परनकुटी प्रिय प्रियतम संगा। प्रिय परिवारु कुरंग बिहंगा॥
सासु ससुर सम मुनितिय मुनिबर। असनु अमि सम कंद मूल फर॥
नाथ साथ साँथरी सुहा। मयन सयन सय सम सुखदा॥
लोकप होहिं बिलोकत जासू। तेहि कि मोहि सक बिषय बिलासू॥

दो. -सुमिरत रामहि तजहिं जन तृन सम बिषय बिलासु।
रामप्रिया जग जननि सिय कछु न आचरजु तासु॥ १४०॥

सीय लखन जेहि बिधि सुखु लहहीं। सो रघुनाथ करहि सो कहहीं॥
कहहिं पुरातन कथा कहानी। सुनहिं लखनु सिय अति सुखु मानी।
जब जब रामु अवध सुधि करहीं। तब तब बारि बिलोचन भरहीं॥

सुमिरि मातु पितु परिजन भा। भरत सनेहु सीलु सेवका॥
कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी। धीरजु धरहिं कुसमउ बिचारी॥
लखि सिय लखनु बिकल हो जाहीं। जिमि पुरुषहि अनुसर परिछाहीं॥
प्रिया बंधु गति लखि रघुनंदनु। धीर कृपाल भगत उर चंदनु॥
लगे कहन कछु कथा पुनीता। सुनि सुखु लहहिं लखनु अरु सीता॥

दो. रामु लखन सीता सहित सोहत परन निकेत।
जिमि बासव बस अमरपुर सची जयंत समेत॥ १४१॥

जोगवहिं प्रभु सिय लखनहिं कैसें। पलक बिलोचन गोलक जैसें॥
सेवहिं लखनु सीय रघुबीरहि। जिमि अबिबेकी पुरुष सरीरहि॥
एहि बिधि प्रभु बन बसहिं सुखारी। खग मृग सुर तापस हितकारी॥
कहैं राम बन गवनु सुहावा। सुनहु सुमंत्र अवध जिमि आवा॥
फिरे निषादु प्रभुहि पहुँचा। सचिव सहित रथ देखेसि आ॥
मंत्री बिकल बिलोकि निषादू। कहि न जा जस भयउ बिषादू॥
राम राम सिय लखन पुकारी। परे धरनितल ब्याकुल भारी॥
देखि दखिन दिसि हय हिहिनाहीं। जनु बिनु पंख बिहग अकुलाहीं॥

दो. नहिं तृन चरहिं पिहिं जलु मोचहिं लोचन बारि।

ब्याकुल भ निषाद सब रघुबर बाजि निहारि ॥ १४२ ॥

धरि धीरज तब कहइ निषादू । अब सुमंत्र परिहरहु बिषादू ॥
तुम्ह पंडित परमारथ ग्याता । धरहु धीर लखि बिमुख बिधाता
बिबिध कथा कहि कहि मृदु बानी । रथ बैठारे बरबस आनी ॥
सोक सिथिल रथ सकइ न हाँकी । रघुबर बिरह पीर उर बाँकी ॥
चरफराहिं मग चलहिं न घोरे । बन मृग मनहुँ आनि रथ जोरे ॥
अढुकि परहिं फिरि हेरहिं पीछें । राम बियोगि बिकल दुख तीछें ॥
जो कह रामु लखनु बैदेही । हिंकरि हिंकरि हित हेरहिं तेही ॥
बाजि बिरह गति कहि किमि जाती । बिनु मनि फनिक बिकल जेहि भाँती ॥

दो. भयउ निषाद बिषादबस देखत सचिव तुरंग ।
बोलि सुसेवक चारि तब दि सारथी संग ॥ १४३ ॥

गुह सारथिहि फिरे पहुँचा । बिरहु बिषादु बरनि नहिं जा ॥
चले अवध ले रथहि निषादा । होहि छनहिं छन मगन बिषादा ॥
सोच सुमंत्र बिकल दुख दीना । धिग जीवन रघुबीर बिहीना ॥
रहिहि न अंतहुँ अधम सरीरू । जसु न लहे बिछुरत रघुबीरू ॥
भ अजस अघ भाजन प्राना । कवन हेतु नहिं करत पयाना ॥

अहह मंद मनु अवसर चूका। अजहुँ न हृदय होत दु टूका॥
मीजि हाथ सिरु धुनि पछिता। मनहँ कृपन धन रासि गवाँई॥
बिरिद बाँधि बर बीरु कहा। चले समर जनु सुभट परा॥

दो. बिप्र बिबेकी बेदबिद संमत साधु सुजाति।
जिमि धोखें मदपान कर सचिव सोच तेहि भाँति॥ १४४॥

जिमि कुलीन तिय साधु सयानी। पतिदेवता करम मन बानी॥
रहै करम बस परिहरि नाहू। सचिव हृदयँ तिमि दारुन दाहु॥
लोचन सजल डीठि भइ थोरी। सुनइ न श्रवन बिकल मति भोरी॥
सूखहिं अधर लागि मुहँ लाटी। जि न जा उर अवधि कपाटी॥
बिबरन भयउ न जा निहारी। मारेसि मनहुँ पिता महतारी॥
हानि गलानि बिपुल मन ब्यापी। जमपुर पंथ सोच जिमि पापी॥
बचनु न आव हृदयँ पछिता। अवध काह मैं देखब जा॥
राम रहित रथ देखिहि जो। सकुचिहि मोहि बिलोकत सो॥

दो. -धा पूँछिहहिं मोहि जब बिकल नगर नर नारि।
उतरु देब मैं सबहि तब हृदयँ बज्रु बैठारि॥ १४५॥

पुछिहहिं दीन दुखित सब माता। कहब काह मैं तिन्हहि बिधाता॥
पूछिहि जबहिं लखन महतारी। कहिहउँ कवन सँदेस सुखारी॥
राम जननि जब आहि धा। सुमिरि बच्छु जिमि धेनु लवा॥
पूँछत उतरु देब मैं तेही। गे बनु राम लखनु बैदेही॥
जो पूँछिहि तेहि ऊतरु देबा।जा अवध अब यहु सुखु लेबा॥
पूँछिहि जबहिं रा दुख दीना। जिवनु जासु रघुनाथ अधीना॥
देहउँ उतरु कौनु मुहु ला। आयउँ कुसल कुँर पहुँचा॥
सुनत लखन सिय राम सँदेसू। तृन जिमि तनु परिहरिहि नरेसू॥

दो. -हृदउ न बिदरे पंक जिमि बिछुरत प्रीतमु नीरु॥
जानत हौं मोहि दीन्ह बिधि यहु जातना सरीरु॥ १४६॥

एहि बिधि करत पंथ पछितावा। तमसा तीर तुरत रथु आवा॥
बिदा कि करि बिनय निषादा। फिरे पायँ परि बिकल बिषादा॥
पैठत नगर सचिव सकुचा। जनु मारेसि गुर बाँभन गा॥
बैठि बिटप तर दिवसु गवाँवा। साँझ समय तब अवसरु पावा॥
अवध प्रबेसु कीन्ह अँधिआरें। पैठ भवन रथु राखि दुआरें॥
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पा। भूप द्वार रथु देखन आ॥
रथु पहिचानि बिकल लखि घोरे। गरहिं गात जिमि आतप ओरे॥

नगर नारि नर ब्याकुल कैंसें। निघटत नीर मीनगन जैंसें॥

दो. -सचिव आगमनु सुनत सबु बिकल भयउ रनिवासु।
भवन भयंकरु लाग तेहि मानहुँ प्रेत निवासु॥ १४७॥

अति आरति सब पूँछहिं रानी। उतरु न आव बिकल भइ बानी॥
सुनइ न श्रवन नयन नहिं सूझा। कहहु कहाँ नृप तेहि तेहि बूझा॥
दासिन्ह दीख सचिव बिकला। कौसल्या गृहँ गं लवा॥
जा सुमंत्र दीख कस राजा। अमि रहित जनु चंदु बिराजा॥
आसन सयन बिभूषन हीना। परे भूमितल निपट मलीना॥
ले उसासु सोच एहि भाँती। सुरपुर तें जनु खँसे जजाती॥
लेत सोच भरि छिनु छिनु छाती। जनु जरि पंख परे संपाती॥
राम राम कह राम सनेही। पुनि कह राम लखन बैदेही॥

दो. देखि सचिवँ जय जीव कहि कीन्हे दंड प्रनामु।
सुनत उठे ब्याकुल नृपति कहु सुमंत्र कहँ रामु॥ १४८॥

भूप सुमंत्रु लीन्ह उर ला। बूड़त कछु अधार जनु पा॥
सहित सनेह निकट बैठारी। पूँछत रा नयन भरि बारी॥

राम कुसल कहु सखा सनेही। कहँ रघुनाथु लखनु बैदेही॥
आने फेरि कि बनहि सिधा। सुनत सचिव लोचन जल छा॥
सोक बिकल पुनि पूँछ नरेसू। कहु सिय राम लखन संदेसू॥
राम रूप गुन सील सुभा। सुमिरि सुमिरि उर सोचत रा॥
रा सुना दीन्ह बनबासू। सुनि मन भयउ न हरषु हराँसू॥
सो सुत बिछुरत ग न प्राना। को पापी बड़ मोहि समाना॥

दो. सखा रामु सिय लखनु जहँ तहाँ मोहि पहुँचा।
नाहिं त चाहत चलन अब प्रान कहउँ सतिभा॥ १४९॥

पुनि पुनि पूँछत मंत्रहि रा। प्रियतम सुन सँदेस सुना॥
करहि सखा सो बेगि उपा। रामु लखनु सिय नयन देखा॥
सचिव धीर धरि कह मुदु बानी। महाराज तुम्ह पंडित ग्यानी॥
बीर सुधीर धुरंधर देवा। साधु समाजु सदा तुम्ह सेवा॥
जनम मरन सब दुख भोगा। हानि लाभ प्रिय मिलन बियोगा॥
काल करम बस हौहिं गोसां। बरबस राति दिवस की नां॥
सुख हरषहिं जड़ दुख बिलखाहीं। दो सम धीर धरहिं मन माहीं॥
धीरज धरहु बिबेकु बिचारी। छाड़ि सोच सकल हितकारी॥

दो. प्रथम बासु तमसा भयउ दूसर सुरसरि तीर।
न्हा रहे जलपानु करि सिय समेत दो बीर॥ १५०॥

केवट कीन्हि बहुत सेवका। सो जामिनि सिंगरौर गवाँई॥
होत प्रात बट छीरु मगावा। जटा मुकुट निज सीस बनावा॥
राम सखाँ तब नाव मगा। प्रिया चढ़ा चढ़े रघुरा॥
लखन बान धनु धरे बना। आपु चढ़े प्रभु आयसु पा॥
बिकल बिलोकि मोहि रघुबीरा। बोले मधुर बचन धरि धीरा॥
तात प्रनामु तात सन कहेहु। बार बार पद पंकज गहेहू॥
करबि पायँ परि बिनय बहोरी। तात करि जनि चिंता मोरी॥
बन मग मंगल कुसल हमारें। कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारें॥

छं. तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुखु पाहौं।
प्रतिपालि आयसु कुसल देखन पाय पुनि फिरि आहौं॥
जननीं सकल परितोषि परि परि पायँ करि बिनती घनी।
तुलसी करेहु सो जतनु जेहिं कुसली रहहिं कोसल धनी॥

सो. गुर सन कहब सँदेसु बार बार पद पदुम गहि।
करब सो उपदेसु जेहिं न सोच मोहि अवधपति॥ १५१॥

पुरजन परिजन सकल निहोरी। तात सुनाहु बिनती मोरी॥
सो सब भाँति मोर हितकारी। जातें रह नरनाहु सुखारी॥
कहब सँदेसु भरत के आँ। नीति न तजि राजपदु पाँ॥
पालेहु प्रजहि करम मन बानी। सेहु मातु सकल सम जानी॥
ओर निबाहेहु भायप भा। करि पितु मातु सुजन सेवका॥
तात भाँति तेहि राखब रा। सोच मोर जेहिं करै न का॥
लखन कहे कछु बचन कठोरा। बरजि राम पुनि मोहि निहोरा॥
बार बार निज सपथ देवा। कहबि न तात लखन लरिका॥

दो. कहि प्रनाम कछु कहन लिय सिय भइ सिथिल सनेह।
थकित बचन लोचन सजल पुलक पल्लवित देह॥ १५२॥

तेहि अवसर रघुबर रूख पा। केवट पारहि नाव चला॥
रघुकुलतिलक चले एहि भाँती। देखउँ ठाढ़ कुलिस धरि छाती॥
मैं आपन किमि कहौं कलेसू। जित फिरैं ले राम सँदेसू॥
अस कहि सचिव बचन रहि गय। हानि गलानि सोच बस भय॥
सुत बचन सुनतहिं नरनाहू। परे धरनि उर दारुन दाहू॥
तलफत बिषम मोह मन मापा। माजा मनहुँ मीन कहुँ ब्यापा॥

करि बिलाप सब रोवहिं रानी। महा बिपति किमि जा बखानी॥
सुनि बिलाप दुखहू दुखु लागा। धीरजहू कर धीरजु भागा॥

दो. भयउ कोलाहलु अवध अति सुनि नृप रार सोरु।
बिपुल बिहग बन परे निसि मानहुँ कुलिस कठोरु॥ १५३॥

प्रान कंठगत भयउ भुआलू। मनि बिहीन जनु ब्याकुल ब्यालू॥
इद्रीं सकल बिकल भइँ भारी। जनु सर सरसिज बनु बिनु बारी॥
कौसल्याँ नृपु दीख मलाना। रबिकुल रबि अँथयउ जियँ जाना।
उर धरि धीर राम महतारी। बोली बचन समय अनुसारी॥
नाथ समुझि मन करि बिचारू। राम बियोग पयोधि अपारू॥
करनधार तुम्ह अवध जहाजू। चढ़े सकल प्रिय पथिक समाजू॥
धीरजु धरि त पा पारू। नाहिं त बूड़िहि सबु परिवारू॥
जौं जियँ धरि बिनय पिय मोरी। रामु लखनु सिय मिलहिं बहोरी॥

दो. -प्रिया बचन मृदु सुनत नृपु चितयउ आँखि उघारि।
तलफत मीन मलीन जनु सींचत सीतल बारि॥ १५४॥

धरि धीरजु उठी बैठ भुआलू। कहु सुमंत्र कहँ राम कृपालू॥

कहाँ लखनु कहँ रामु सनेही। कहँ प्रिय पुत्रबधू बैदेही॥
बिलपत रा बिकल बहु भाँती। भइ जुग सरिस सिराति न राती॥
तापस अंध साप सुधि आ। कौसल्यहि सब कथा सुना॥
भयउ बिकल बरनत इतिहासा। राम रहित धिग जीवन आसा॥
सो तनु राखि करब मैं काहा। जेंहि न प्रेम पनु मोर निबाहा॥
हा रघुनंदन प्रान पिरीते। तुम्ह बिनु जित बहुत दिन बीते॥
हा जानकी लखन हा रघुबर। हा पितु हित चित चातक जलधर।

दो. राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुबर बिरहँ रा गयउ सुरधाम॥ १५५॥

जिन मरन फलु दसरथ पावा। अंड अनेक अमल जसु छावा॥
जित राम बिधु बदनु निहारा। राम बिरह करि मरनु सँवारा॥
सोक बिकल सब रोवहिं रानी। रूपु सील बलु तेजु बखानी॥
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा। परहीं भूमितल बारहिं बारा॥
बिलपहिं बिकल दास अरु दासी। घर घर रुदनु करहिं पुरबासी॥
अँथयउ आजु भानुकुल भानू। धरम अवधि गुन रूप निधानू॥
गारीं सकल कैकइहि देहीं। नयन बिहीन कीन्ह जग जेहीं॥
एहि बिधि बिलपत रैनि बिहानी। आ सकल महामुनि ग्यानी॥

दो. तब बसिष्ठ मुनि समय सम कहि अनेक इतिहास।
सोक नेवारे सबहि कर निज बिग्यान प्रकास॥ १५६॥

तेल नाँव भरि नृप तनु राखा। दूत बोला बहुरि अस भाषा॥
धावहु बेगि भरत पहिं जाहू। नृप सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू॥
एतने कहेहु भरत सन जा। गुर बोला पठयउ दो भा॥
सुनि मुनि आयसु धावन धा। चले बेग बर बाजि लजा॥
अनरथु अवध अरंभे जब तें। कुसगुन होहिं भरत कहुँ तब तें॥
देखहिं राति भयानक सपना। जागि करहिं कटु कोटि कलपना॥
बिप्र जेवाँइ देहिं दिन दाना। सिव अभिषेक करहिं बिधि नाना॥
मागहिं हृदयँ महेस मना। कुसल मातु पितु परिजन भा॥

दो. एहि बिधि सोचत भरत मन धावन पहुँचे आ।
गुर अनुसासन श्रवन सुनि चले गनेसु मना॥ १५७॥

चले समीर बेग हय हाँके। नाघत सरित सैल बन बाँके॥
हृदयँ सोचु बड़ कछु न सोहा। अस जानहिं जियँ जाँ उड़ा॥
एक निमेष बरस सम जा। एहि बिधि भरत नगर निरा॥

असगुन होहिं नगर पैठारा। रटहिं कुभाँति कुखेत करारा॥
खर सिआर बोलहिं प्रतिकूला। सुनि सुनि हो भरत मन सूला॥
श्रीहत सर सरिता बन बागा। नगरु बिसेषि भयावनु लागा॥
खग मृग हय गय जाहिं न जो। राम बियोग कुरोग बिगो॥
नगर नारि नर निपट दुखारी। मनहुँ सबन्हि सब संपति हारी॥

दो. पुरजन मिलिहिं न कहहिं कछु गवँहिं जोहारहिं जाहिं।
भरत कुसल पूँछि न सकहिं भय बिषाद मन माहिं॥ १५८॥

हाट बाट नहिं जा निहारी। जनु पुर दहँ दिसि लागि दवारी॥
आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि। हरषी रबिकुल जलरुह चंदिनि॥
सजि आरती मुदित उठि धा। द्वारेहिं भेंटि भवन ले आ॥
भरत दुखित परिवारु निहारा। मानहुँ तुहिन बनज बनु मारा॥
कैके हरषित एहि भाँति। मनहुँ मुदित दव ला किराती॥
सुतहि ससोच देखि मनु मारें। पूँछति नैहर कुसल हमारें॥
सकल कुसल कहि भरत सुना। पूँछी निज कुल कुसल भला॥
कहु कहँ तात कहाँ सब माता। कहँ सिय राम लखन प्रिय भ्राता॥

दो. सुनि सुत बचन सनेहमय कपट नीर भरि नैन।

भरत श्रवन मन सूल सम पापिनि बोली बैन ॥ १५९ ॥

तात बात मैं सकल सँवारी । भै मंथरा सहाय बिचारी ॥
कछुक काज बिधि बीच बिगारे । भूपति सुरपति पुर पगु धारे ॥
सुनत भरतु भ बिबस बिषादा । जनु सहमे करि केहरि नादा ॥
तात तात हा तात पुकारी । परे भूमितल ब्याकुल भारी ॥
चलत न देखन पायउँ तोही । तात न रामहि सौंपेहु मोही ॥
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी । कहु पितु मरन हेतु महतारी ॥
सुनि सुत बचन कहति कैके । मरमु पाँछि जनु माहुर दे ॥
आदिहु तें सब आपनि करनी । कुटिल कठोर मुदित मन बरनी ॥

दो. भरतहि बिसरे पितु मरन सुनत राम बन गौनु ।
हेतु अपनपउ जानि जियँ थकित रहे धरि मौनु ॥ १६० ॥

बिकल बिलोकि सुतहि समुझावति । मनहुँ जरे पर लोनु लगावति ॥
तात रा नहिं सोचे जोगू । बिढ़इ सुकृत जसु कीन्हे भोगू ॥
जीवत सकल जनम फल पा । अंत अमरपति सदन सिधा ॥
अस अनुमानि सोच परिहरहू । सहित समाज राज पुर करहू ॥
सुनि सुठि सहमे राजकुमारू । पाकें छत जनु लाग अँगारू ॥

धीरज धरि भरि लेहिं उसासा। पापनि सबहि भाँति कुल नासा॥
जौं पै कुरुचि रही अति तोही। जनमत काहे न मारे मोही॥
पेड़ काटि तैं पालउ सींचा। मीन जिन निति बारि उलीचा॥

दो. हंसबंसु दसरथु जनकु राम लखन से भा।
जननी तूँ जननी भ बिधि सन कछु न बसा॥ १६१॥

जब तैं कुमति कुमत जियँ ठय। खंड खंड हो हृदउ न गय॥
बर मागत मन भइ नहिं पीरा। गरि न जीह मुहँ परे न कीरा॥
भूपँ प्रतीत तोरि किमि कीन्ही। मरन काल बिधि मति हरि लीन्ही॥
बिधिहुँ न नारि हृदय गति जानी। सकल कपट अघ अवगुन खानी॥
सरल सुसील धरम रत रा। सो किमि जानै तीय सुभा॥
अस को जीव जंतु जग माहीं। जेहि रघुनाथ प्रानप्रिय नाहीं॥
भे अति अहित रामु ते तोही। को तू अहसि सत्य कहु मोही॥
जो हसि सो हसि मुहँ मसि ला। आँखि ओट उठि बैठहिं जा॥

दो. राम बिरोधी हृदय तें प्रगट कीन्ह बिधि मोहि।
मो समान को पातकी बादि कहउँ कछु तोहि॥ १६२॥

सुनि सत्रुघुन मातु कुटिला। जरहिं गात रिस कछु न बसा॥
तेहि अवसर कुबरी तहँ आ। बसन बिभूषन बिबिध बना॥
लखि रिस भरे लखन लघु भा। बरत अनल घृत आहुति पा॥
हुमगि लात तकि कूबर मारा। परि मुह भर महि करत पुकारा॥
कूबर टूटे फूट कपारू। दलित दसन मुख रुधिर प्रचारू॥
आह दइ मैं काह नसावा। करत नीक फलु अनइस पावा॥
सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी। लगे घसीटन धरि धरि झोंटी॥
भरत दयानिधि दीन्हि छड़ा। कौसल्या पहिं गे दो भा॥

दो. मलिन बसन बिबरन बिकल कृस सरीर दुख भार।
कनक कलप बर बेलि बन मानहुँ हनी तुसार॥ १६३॥

भरतहि देखि मातु उठि धा। मुरुछित अवनि परी झइँ आ॥
देखत भरतु बिकल भ भारी। परे चरन तन दसा बिसारी॥
मातु तात कहँ देहि देखा। कहँ सिय रामु लखनु दो भा॥
कैकइ कत जनमी जग माझा। जौं जनमि त भइ काहे न बाँझा॥
कुल कलंकु जेहिं जनमे मोही। अपजस भाजन प्रियजन द्रोही॥
को तिभुवन मोहि सरिस अभागी। गति असि तोरि मातु जेहि लागी॥
पितु सुरपुर बन रघुबर केतू। मैं केवल सब अनरथ हेतु॥

धिग मोहि भयउँ बेनु बन आगी। दुसह दाह दुख दूषन भागी॥

दो. मातु भरत के बचन मृदु सुनि सुनि उठी सँभारि॥
लि उठा लगा उर लोचन मोचति बारि॥ १६४॥

सरल सुभाय मायँ हियँ ला। अति हित मनहुँ राम फिरि आ॥
भेंटे बहुरि लखन लघु भा। सोकु सनेहु न हृदयँ समा॥
देखि सुभा कहत सबु को। राम मातु अस काहे न हो॥
माताँ भरतु गोद बैठारे। आँसु पौंछि मृदु बचन उचारे॥
अजहुँ बच्छ बलि धीरज धरहू। कुसमउ समुझि सोक परिहरहू॥
जनि मानहु हियँ हानि गलानी। काल करम गति अघटित जानि॥
काहुहि दोसु देहु जनि ताता। भा मोहि सब बिधि बाम बिधाता॥
जो एतेहुँ दुख मोहि जिआवा। अजहुँ को जानइ का तेहि भावा॥

दो. पितु आयस भूषन बसन तात तजे रघुबीर।
बिसमउ हरषु न हृदयँ कछु पहिरे बलकल चीर। १६५॥

मुख प्रसन्न मन रंग न रोषू। सब कर सब बिधि करि परितोषू॥
चले बिपिन सुनि सिय सँग लागी। रहइ न राम चरन अनुरागी॥

सुनतहिं लखनु चले उठि साथा। रहहिं न जतन कि रघुनाथा॥
तब रघुपति सबही सिरु ना। चले संग सिय अरु लघु भा॥
रामु लखनु सिय बनहि सिधा। गइँ न संग न प्रान पठा॥
यहु सबु भा इन्ह आँखिन्ह आगें। तउ न तजा तनु जीव अभागें॥
मोहि न लाज निज नेहु निहारी। राम सरिस सुत मैं महतारी॥
जि मरै भल भूपति जाना। मोर हृदय सत कुलिस समाना॥

दो. कौसल्या के बचन सुनि भरत सहित रनिवास।
ब्याकुल बिलपत राजगृह मानहुँ सोक नेवासु॥ १६६॥

बिलपहिं बिकल भरत दो भा। कौसल्याँ लि हृदयँ लगा॥
भाँति अनेक भरतु समुझा। कहि बिबेकमय बचन सुना॥
भरतहुँ मातु सकल समुझां। कहि पुरान श्रुति कथा सुहां॥
छल बिहीन सुचि सरल सुबानी। बोले भरत जोरि जुग पानी॥
जे अघ मातु पिता सुत मारें। गा गोठ महिसुर पुर जारें॥
जे अघ तिय बालक बध कीन्हें। मीत महीपति माहुर दीन्हें॥
जे पातक उपपातक अहहीं। करम बचन मन भव कबि कहहीं॥
ते पातक मोहि होहुँ बिधाता। जौं यहु हो मोर मत माता॥

दो. जे परिहरि हरि हर चरन भजहिं भूतगन घोर।
तेहि कइ गति मोहि दे बिधि जौं जननी मत मोर॥ १६७॥

बेचहिं बेदु धरमु दुहि लेहीं। पिसुन पराय पाप कहि देहीं॥
कपटी कुटिल कलहप्रिय क्रोधी। बेद बिदूषक बिस्व बिरोधी॥
लोभी लंपट लोलुपचारा। जे ताकहिं परधनु परदारा॥
पावौं मैं तिन्ह के गति घोरा। जौं जननी यहु संमत मोरा॥
जे नहिं साधुसंग अनुरागे। परमारथ पथ बिमुख अभागे॥
जे न भजहिं हरि नरतनु पा। जिन्हहि न हरि हर सुजसु सोहा॥
तजि श्रुतिपंथु बाम पथ चलहीं। बंचक बिरचि बेष जगु छलहीं॥
तिन्ह कै गति मोहि संकर दे। जननी जौं यहु जानौं भे॥

दो. मातु भरत के बचन सुनि साँचे सरल सुभायँ।
कहति राम प्रिय तात तुम्ह सदा बचन मन कायँ॥ १६८॥

राम प्रानहु तें प्रान तुम्हारे। तुम्ह रघुपतिहि प्रानहु तें प्यारे॥
बिधु बिष चवै स्रवै हिमु आगी। होइ बारिचर बारि बिरागी॥
भँ ग्यानु बरु मिटै न मोहू। तुम्ह रामहि प्रतिकूल न होहू॥
मत तुम्हार यहु जो जग कहहीं। सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहहीं॥

अस कहि मातु भरतु हियँ ला। थन पय स्रवहिं नयन जल छा॥
करत बिलाप बहुत यहि भाँती। बैठेहिं बीति गइ सब राती॥
बामदे बसिष्ठ तब आ। सचिव महाजन सकल बोला॥
मुनि बहु भाँति भरत उपदेसे। कहि परमारथ बचन सुदेसे॥

दो. तात हृदयँ धीरजु धरहु करहु जो अवसर आजु।
उठे भरत गुर बचन सुनि करन कहे सबु साजु॥ १६९॥

नृपतनु बेद बिदित अन्हवावा। परम बिचित्र बिमानु बनावा॥
गहि पद भरत मातु सब राखी। रहीं रानि दरसन अभिलाषी॥
चंदन अगर भार बहु आ। अमित अनेक सुगंध सुहा॥
सरजु तीर रचि चिता बना। जनु सुरपुर सोपान सुहा॥
एहि बिधि दाह क्रिया सब कीन्ही। बिधिवत न्हा तिलांजुलि दीन्ही॥
सोधि सुमृति सब बेद पुराना। कीन्ह भरत दसगात बिधाना॥
जहँ जस मुनिबर आयसु दीन्हा। तहँ तस सहस भाँति सबु कीन्हा॥
भ बिसुद्ध दि सब दाना। धेनु बाजि गज बाहन नाना॥

दो. सिंघासन भूषन बसन अन्न धरनि धन धाम।
दि भरत लहि भूमिसुर भे परिपूरन काम॥ १७०॥

पितु हित भरत कीन्हि जसि करनी। सो मुख लाख जा नहिं बरनी॥
सुदिनु सोधि मुनिबर तब आ। सचिव महाजन सकल बोला॥
बैठे राजसभाँ सब जा। पठ बोलि भरत दो भा॥
भरतु बसिष्ठ निकट बैठारे। नीति धरममय बचन उचारे॥
प्रथम कथा सब मुनिबर बरनी। कैकइ कुटिल कीन्हि जसि करनी॥
भूप धरमब्रतु सत्य सराहा। जेहिं तनु परिहरि प्रेमु निबाहा॥
कहत राम गुन सील सुभा। सजल नयन पुलके मुनिरा॥
बहुरि लखन सिय प्रीति बखानी। सोक सनेह मगन मुनि ग्यानी॥

दो. सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहे मुनिनाथ।
हानि लाभु जीवन मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ॥ १७१॥

अस बिचारि केहि दे दोसू। ब्यरथ काहि पर कीजि रोसू॥
तात बिचारु केहि करहु मन माहीं। सोच जोगु दसरथु नृपु नाहीं॥
सोचि बिप्र जो बेद बिहीना। तजि निज धरमु बिषय लयलीना॥
सोचि नृपति जो नीति न जाना। जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना॥
सोचि बयसु कृपन धनवानू। जो न अतिथि सिव भगति सुजानू॥
सोचि सूद्रु बिप्र अवमानी। मुखर मानप्रिय ग्यान गुमानी॥

सोचि पुनि पति बंचक नारी। कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी॥
सोचि बटु निज ब्रतु परिहर। जो नहिं गुर आयसु अनुसर॥

दो. सोचि गृही जो मोह बस करइ करम पथ त्याग।
सोचि जति प्रंपच रत बिगत बिबेक बिराग॥ १७२॥

बैखानस सो सोचै जोगु। तपु बिहा जेहि भावइ भोगू॥
सोचि पिसुन अकारन क्रोधी। जननि जनक गुर बंधु बिरोधी॥
सब बिधि सोचि पर अपकारी। निज तनु पोषक निरदय भारी॥
सोचनीय सबहि बिधि सो। जो न छाड़ि छलु हरि जन हो॥
सोचनीय नहिं कोसलरा। भुवन चारिदस प्रगट प्रभा॥
भयउ न अहइ न अब होनिहारा। भूप भरत जस पिता तुम्हारा॥
बिधि हरि हरु सुरपति दिसिनाथा। बरनहिं सब दसरथ गुन गाथा॥

दो. कहहु तात केहि भाँति को करिहि बड़ा तासु।
राम लखन तुम्ह सत्रुहन सरिस सुन सुचि जासु॥ १७३॥

सब प्रकार भूपति बड़भागी। बादि बिषादु करि तेहि लागी॥
यहु सुनि समुझि सोचु परिहरहू। सिर धरि राज रजायसु करहू॥

राँय राजपदु तुम्ह कहुँ दीन्हा। पिता बचनु फुर चाहि कीन्हा॥
तजे रामु जेहिं बचनहि लागी। तनु परिहरे राम बिरहागी॥
नृपहि बचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना। करहु तात पितु बचन प्रवाना॥
करहु सीस धरि भूप रजा। हइ तुम्ह कहँ सब भाँति भला॥
परसुराम पितु अग्या राखी। मारी मातु लोक सब साखी॥
तनय जजातिहि जौबनु दय। पितु अग्याँ अघ अजसु न भय॥

दो. अनुचित उचित बिचारु तजि जे पालहिं पितु बैन।
ते भाजन सुख सुजस के बसहिं अमरपति ऐन॥ १७४॥

अवसि नरेस बचन फुर करहू। पालहु प्रजा सोकु परिहरहू॥
सुरपुर नृप पाहि परितोषू। तुम्ह कहुँ सुकृत सुजसु नहिं दोषू॥
बेद बिदित संमत सबही का। जेहि पितु दे सो पावइ टीका॥
करहु राजु परिहरहु गलानी। मानहु मोर बचन हित जानी॥
सुनि सुखु लहब राम बैदेहीं। अनुचित कहब न पंडित केहीं॥
कौसल्यादि सकल महतारीं। ते प्रजा सुख होहिं सुखारीं॥
परम तुम्हार राम कर जानिहि। सो सब बिधि तुम्ह सन भल मानिहि॥
सौंपेहु राजु राम कै आँ। सेवा करेहु सनेह सुहाँ॥

दो. कीजि गुर आयसु अवसि कहहिं सचिव कर जोरि।
रघुपति आँ उचित जस तस तब करब बहोरि॥ १७५॥

कौसल्या धरि धीरजु कह। पूत पथ्य गुर आयसु अह॥
सो आदरि करि हित मानी। तजि बिषादु काल गति जानी॥
बन रघुपति सुरपति नरनाहू। तुम्ह एहि भाँति तात कदराहू॥
परिजन प्रजा सचिव सब अंबा। तुम्हही सुत सब कहँ अवलंबा॥
लखि बिधि बाम कालु कठिना। धीरजु धरहु मातु बलि जा॥
सिर धरि गुर आयसु अनुसरहू। प्रजा पालि परिजन दुखु हरहू॥
गुर के बचन सचिव अभिनंदनु। सुने भरत हिय हित जनु चंदनु॥
सुनी बहोरि मातु मृदु बानी। सील सनेह सरल रस सानी॥

छं. सानी सरल रस मातु बानी सुनि भरत ब्याकुल भ।
लोचन सरोरुह स्रवत सींचत बिरह उर अंकुर न॥
सो दसा देखत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देह की।
तुलसी सराहत सकल सादर सीवँ सहज सनेह की॥

सो. भरतु कमल कर जोरि धीर धुरंधर धीर धरि।
बचन अमिँ जनु बोरि देत उचित उत्तर सबहि॥ १७६॥

मासपारायण अठारहवाँ विश्राम

मोहि उपदेसु दीन्ह गुर नीका। प्रजा सचिव संमत सबही का॥
मातु उचित धरि आयसु दीन्हा। अवसि सीस धरि चाहउँ कीन्हा॥
गुर पितु मातु स्वामि हित बानी। सुनि मन मुदित करि भलि जानी॥
उचित कि अनुचित किँ बिचारू। धरमु जा सिर पातक भारू॥
तुम्ह तौ देहु सरल सिख सो। जो आचरत मोर भल हो॥
जद्यपि यह समुझत हउँ नीकें। तदपि होत परितोषु न जी कें॥
अब तुम्ह बिनय मोरि सुनि लेहू। मोहि अनुहरत सिखावनु देहू॥
ऊतरु दैं छमब अपराधू। दुखित दोष गुन गनहिं न साधू॥

दो. पितु सुरपुर सिय रामु बन करन कहहु मोहि राजु।
एहि तें जानहु मोर हित कै आपन बड़ काजु॥ १७७॥

हित हमार सियपति सेवका। सो हरि लीन्ह मातु कुटिला॥
मैं अनुमानि दीख मन माहीं। आन उपायँ मोर हित नाहीं॥
सोक समाजु राजु केहि लेखें। लखन राम सिय बिनु पद देखें॥
बादि बसन बिनु भूषन भारू। बादि बिरति बिनु ब्रह्म बिचारू॥
सरुज सरीर बादि बहु भोगा। बिनु हरिभगति जायँ जप जोगा॥

जायँ जीव बिनु देह सुहा। बादि मोर सबु बिनु रघुरा॥
जाँ राम पहिं आयसु देहू। एकहिं आँक मोर हित एहू॥
मोहि नृप करि भल आपन चहहू। सो सनेह जड़ता बस कहहू॥

दो. कैके सु कुटिलमति राम बिमुख गतलाज।
तुम्ह चाहत सुखु मोहबस मोहि से अधम कें राज॥ १७८॥

कहउँ साँचु सब सुनि पतिआहू। चाहि धरमसील नरनाहू॥
मोहि राजु हठि देहहु जबहीं। रसा रसातल जाहि तबहीं॥
मोहि समान को पाप निवासू। जेहि लगि सीय राम बनबासू॥
रायँ राम कहुँ काननु दीन्हा। बिछुरत गमनु अमरपुर कीन्हा॥
मैं सठु सब अनरथ कर हेतू। बैठ बात सब सुनउँ सचेतू॥
बिनु रघुबीर बिलोकि अबासू। रहे प्रान सहि जग उपहासू॥
राम पुनीत बिषय रस रूखे। लोलुप भूमि भोग के भूखे॥
कहँ लगि कहौं हृदय कठिना। निदरि कुलिसु जेहिं लही बड़ा॥

दो. कारन तें कारजु कठिन हो दोसु नहि मोर।
कुलिस अस्थि तें उपल तें लोह कराल कठोर॥ १७९॥

कैके भव तनु अनुरागे। पाँवर प्रान अघा अभागे॥
जौं प्रिय बिरहँ प्रान प्रिय लागे। देखब सुनब बहुत अब आगे॥
लखन राम सिय कहुँ बनु दीन्हा। पठइ अमरपुर पति हित कीन्हा॥
लीन्ह बिधवपन अपजसु आपू। दीन्हे प्रजहि सोकु संतापू॥
मोहि दीन्ह सुखु सुजसु सुराजू। कीन्ह कैकें सब कर काजू॥
एहि तें मोर काह अब नीका। तेहि पर देन कहहु तुम्ह टीका॥
कैक जठर जनमि जग माहीं। यह मोहि कहँ कछु अनुचित नाहीं॥
मोरि बात सब बिधिहिं बना। प्रजा पाँच कत करहु सहा॥

दो. ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस तेहि पुनि बीछी मार।
तेहि पिआ बारुनी कहहु काह उपचार॥ १८०॥

कैकइ सुन जोगु जग जो। चतुर बिरंचि दीन्ह मोहि सो॥
दसरथ तनय राम लघु भा। दीन्हि मोहि बिधि बादि बड़ा॥
तुम्ह सब कहहु कढ़ावन टीका। राय रजायसु सब कहँ नीका॥
उतरु दैं केहि बिधि केहि केही। कहहु सुखेन जथा रुचि जेही॥
मोहि कुमातु समेत बिहा। कहहु कहिहि के कीन्ह भला॥
मो बिनु को सचराचर माहीं। जेहि सिय रामु प्रानप्रिय नाहीं॥
परम हानि सब कहँ बड़ लाहू। अदिनु मोर नहि दूषन काहू॥

संसय सील प्रेम बस अहहू। सबु उचित सब जो कछु कहहू॥

दो. राम मातु सुठि सरलचित मो पर प्रेमु बिसेषि।
कहइ सुभाय सनेह बस मोरि दीनता देखि॥ १८१।

गुर बिबेक सागर जगु जाना। जिन्हहि बिस्व कर बदर समाना॥
मो कहँ तिलक साज सज सो। भँ बिधि बिमुख बिमुख सबु को॥
परिहरि रामु सीय जग माहीं। को न कहिहि मोर मत नाहीं॥
सो मैं सुनब सहब सुखु मानी। अंतहुँ कीच तहाँ जहँ पानी॥
डरु न मोहि जग कहिहि कि पोचू। परलोकहु कर नाहिन सोचू॥
एकइ उर बस दुसह दवारी। मोहि लगि भे सिय रामु दुखारी॥
जीवन लाहु लखन भल पावा। सबु तजि राम चरन मनु लावा॥
मोर जनम रघुबर बन लागी। झूठ काह पछिताँ अभागी॥

दो. आपनि दारुन दीनता कहउँ सबहि सिरु ना।
देखें बिनु रघुनाथ पद जिय कै जरनि न जा॥ १८२॥

आन उपा मोहि नहि सूझा। को जिय कै रघुबर बिनु बूझा॥
एकहिं आँक इहइ मन माहीं। प्रातकाल चलिहउँ प्रभु पाहीं॥

जद्यपि मैं अनभल अपराधी। भै मोहि कारन सकल उपाधी॥
तदपि सरन सनमुख मोहि देखी। छमि सब करिहहिं कृपा बिसेषी॥
सील सकुच सुठि सरल सुभा। कृपा सनेह सदन रघुरा॥
अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा। मैं सिसु सेवक जद्यपि बामा॥
तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी। आयसु आसिष देहु सुबानी॥
जेहिं सुनि बिनय मोहि जनु जानी। आवहिं बहुरि रामु रजधानी॥

दो. जद्यपि जनमु कुमातु तें मैं सठु सदा सदोस।
आपन जानि न त्यागिहहिं मोहि रघुबीर भरोस॥ १८३॥

भरत बचन सब कहँ प्रिय लागे। राम सनेह सुधाँ जनु पागे॥
लोग बियोग बिषम बिष दागे। मंत्र सबीज सुनत जनु जागे॥
मातु सचिव गुर पुर नर नारी। सकल सनेहँ बिकल भ भारी॥
भरतहि कहहि सराहि सराही। राम प्रेम मूरति तनु आही॥
तात भरत अस काहे न कहहू। प्रान समान राम प्रिय अहहू॥
जो पावँरु अपनी जड़ता। तुम्हहि सुगा मातु कुटिला॥
सो सठु कोटिक पुरुष समेता। बसिहि कलप सत नरक निकेता॥
अहि अघ अवगुन नहि मनि गह। हरइ गरल दुख दारिद दह॥

दो. अवसि चलि बन रामु जहँ भरत मंत्रु भल कीन्ह ।
सोक सिंधु बूड़त सबहि तुम्ह अवलंबनु दीन्ह ॥ १८४ ॥

भा सब कें मन मोदु न थोरा । जनु घन धुनि सुनि चातक मोरा ॥
चलत प्रात लखि निरनउ नीके । भरतु प्रानप्रिय भे सबही के ॥
मुनिहि बंदि भरतहि सिरु ना । चले सकल घर बिदा करा ॥
धन्य भरत जीवनु जग माहीं । सीलु सनेहु सराहत जाहीं ॥
कहहि परसपर भा बड़ काजू । सकल चलै कर साजहिं साजू ॥
जेहि राखहिं रहु घर रखवारी । सो जानइ जनु गरदनि मारी ॥
को कह रहन कहि नहिं काहू । को न चहइ जग जीवन लाहू ॥

दो. जरउ सो संपति सदन सुखु सुहद मातु पितु भा ।
सनमुख होत जो राम पद करै न सहस सहा ॥ १८५ ॥

घर घर साजहिं बाहन नाना । हरषु हृदयँ परभात पयाना ॥
भरत जा घर कीन्ह बिचारू । नगरु बाजि गज भवन भँडारू ॥
संपति सब रघुपति कै आही । जौ बिनु जतन चलौं तजि ताही ॥
तौ परिनाम न मोरि भला । पाप सिरोमनि साँ दोहा ॥
करइ स्वामि हित सेवकु सो । दूषन कोटि दे किन को ॥

अस बिचारि सुचि सेवक बोले। जे सपनेहुँ निज धरम न डोले॥
कहि सबु मरमु धरमु भल भाषा। जो जेहि लायक सो तेहिं राखा॥
करि सबु जतनु राखि रखवारे। राम मातु पहिं भरतु सिधारे॥

दो. आरत जननी जानि सब भरत सनेह सुजान।
कहे बनावन पालकीं सजन सुखासन जान॥ १८६॥

चक्क चक्कि जिमि पुर नर नारी। चहत प्रात उर आरत भारी॥
जागत सब निसि भयउ बिहाना। भरत बोला सचिव सुजाना॥
कहे लेहु सबु तिलक समाजू। बनहिं देब मुनि रामहिं राजू॥
बेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे। तुरत तुरग रथ नाग सँवारे॥
अरुंधती अरु अगिनि समा। रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिरा॥
बिप्र बृंद चढ़ि बाहन नाना। चले सकल तप तेज निधाना॥
नगर लोग सब सजि सजि जाना। चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना॥
सिबिका सुभग न जाहिं बखानी। चढ़ि चढ़ि चलत भ सब रानी॥

दो. सौंपि नगर सुचि सेवकनि सादर सकल चला।
सुमिरि राम सिय चरन तब चले भरत दो भा॥ १८७॥

राम दरस बस सब नर नारी। जनु करि करिनि चले तकि बारी॥
बन सिय रामु समुझि मन माहीं। सानुज भरत पयादेहिं जाहीं॥
देखि सनेहु लोग अनुरागे। उतरि चले हय गय रथ त्यागे॥
जा समीप राखि निज डोली। राम मातु मृदु बानी बोली॥
तात चढ़हु रथ बलि महतारी। होहि प्रिय परिवारु दुखारी॥
तुम्हरें चलत चलिहि सबु लोगू। सकल सोक कृस नहिं मग जोगू॥
सिर धरि बचन चरन सिरु ना। रथ चढ़ि चलत भ दो भा॥
तमसा प्रथम दिवस करि बासू। दूसर गोमति तीर निवासू॥

दो. पय अहार फल असन एक निसि भोजन एक लोग।
करत राम हित नेम ब्रत परिहरि भूषन भोग॥ १८८॥

स तीर बसि चले बिहाने। सृंगबेरपुर सब निराने॥
समाचार सब सुने निषादा। हृदयँ बिचार करइ सबिषादा॥
कारन कवन भरतु बन जाहीं। है कछु कपट भा मन माहीं॥
जौं पै जियँ न होति कुटिला। तौ कत लीन्ह संग कटका॥
जानहिं सानुज रामहि मारी। करउँ अकंटक राजु सुखारी॥
भरत न राजनीति उर आनी। तब कलंकु अब जीवन हानी॥
सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा। रामहि समर न जीतनिहारा॥

का आचरजु भरतु अस करहीं। नहिं बिष बेलि अमि फल फरहीं॥

दो. अस बिचारि गुहँ ग्याति सन कहे सजग सब होहु।
हथवाँसहु बोरहु तरनि कीजि घाटारोहु॥ १८९॥

होहु सँजोल रोकहु घाटा। ठाटहु सकल मरै के ठाटा॥
सनमुख लोह भरत सन लेँ। जित न सुरसरि उतरन देँ॥
समर मरनु पुनि सुरसरि तीरा। राम काजु छनभंगु सरीरा॥
भरत भा नृपु मै जन नीचू। बड़ें भाग असि पा मीचू॥
स्वामि काज करिहउँ रन रारी। जस धवलिहउँ भुवन दस चारी॥
तजउँ प्रान रघुनाथ निहोरें। दुहूँ हाथ मुद मोदक मोरें॥
साधु समाज न जाकर लेखा। राम भगत महुँ जासु न रेखा॥
जायँ जित जग सो महि भारू। जननी जौबन बिटप कुठारू॥

दो. बिगत बिषाद निषादपति सबहि बढ़ा उछाहु।
सुमिरि राम मागे तुरत तरकस धनुष सनाहु॥ १९०॥

बेगहु भाहु सजहु सँजो। सुनि रजा कदरा न को॥
भलेहिं नाथ सब कहहिं सहरषा। एकहिं एक बढ़ावइ करषा॥

चले निषाद जोहारि जोहारी। सूर सकल रन रूचइ रारी॥
सुमिरि राम पद पंकज पनहीं। भाथीं बाँधि चढ़ान्हि धनहीं॥
अँगरी पहिरि कूँड़ि सिर धरहीं। फरसा बाँस सेल सम करहीं॥
एक कुसल अति ओड़न खाँड़े। कूदहि गगन मनहुँ छिति छाँड़े॥
निज निज साजु समाजु बना। गुह रातहि जोहारे जा॥
देखि सुभट सब लायक जाने। लै लै नाम सकल सनमाने॥

दो. भाहु लावहु धोख जनि आजु काज बड़ मोहि।
सुनि सरोष बोले सुभट बीर अधीर न होहि॥ १९१॥

राम प्रताप नाथ बल तोरे। करहिं कटकु बिनु भट बिनु घोरे॥
जीवत पा न पाछें धरहीं। रुंड मुंडमय मेदिनि करहीं॥
दीख निषादनाथ भल टोलू। कहे बजा जुझा ढोलू॥
एतना कहत छींक भइ बाँए। कहे सगुनिन्ह खेत सुहा॥
बूढ़ु एकु कह सगुन बिचारी। भरतहि मिलि न होहि रारी॥
रामहि भरतु मनावन जाहीं। सगुन कहइ अस बिग्रहु नाहीं॥
सुनि गुह कहइ नीक कह बूढ़ा। सहसा करि पछिताहिं बिमूढ़ा॥
भरत सुभा सीलु बिनु बूझें। बड़ि हित हानि जानि बिनु जूझें॥

दो. गहहु घाट भट समिटि सब लेँ मरम मिलि जा।
बूझि मित्र अरि मध्य गति तस तब करिहउँ आ॥ १९२॥

लखन सनेहु सुभायँ सुहाँ। बैरु प्रीति नहिं दुरइँ दुराँ॥
अस कहि भेंट सँजोवन लागे। कंद मूल फल खग मृग मागे॥
मीन पीन पाठीन पुराने। भरि भरि भार कहारन्ह आने॥
मिलन साजु सजि मिलन सिधा। मंगल मूल सगुन सुभ पा॥
देखि दूरि तें कहि निज नामू। कीन्ह मुनीसहि दंड प्रनामू॥
जानि रामप्रिय दीन्हि असीसा। भरतहि कहे बुझा मुनीसा॥
राम सखा सुनि संदनु त्यागा। चले उतरि उमगत अनुरागा॥
गाँ जाति गुहँ नाँ सुना। कीन्ह जोहारु माथ महि ला॥

दो. करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर ला।
मनहुँ लखन सन भेंट भइ प्रेम न हृदयँ समा॥ १९३॥

भेंटत भरतु ताहि अति प्रीती। लोग सिहाहिं प्रेम कै रीती॥
धन्य धन्य धुनि मंगल मूला। सुर सराहि तेहि बरिसहिं फूला॥
लोक बेद सब भाँतिहिं नीचा। जासु छाँह छु ले सींचा॥
तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता। मिलत पुलक परिपूरित गाता॥

राम राम कहि जे जमुहाहीं। तिन्हहि न पाप पुंज समुहाहीं॥
यह तौ राम ला उर लीन्हा। कुल समेत जगु पावन कीन्हा॥
करमनास जलु सुरसरि पर। तेहि को कहहु सीस नहिं धर॥
उलटा नामु जपत जगु जाना। बालमीकि भ ब्रह्म समाना॥

दो. स्वपच सबर खस जमन जड़ पावँर कोल किरात।
रामु कहत पावन परम होत भुवन बिख्यात॥ १९४॥

नहिं अचिरजु जुग जुग चलि आ। केहि न दीन्हि रघुबीर बड़ा॥
राम नाम महिमा सुर कहहीं। सुनि सुनि अवधलोग सुखु लहहीं॥
रामसखहि मिलि भरत सप्रेमा। पूँछी कुसल सुमंगल खेमा॥
देखि भरत कर सील सनेहू। भा निषाद तेहि समय बिदेहू॥
सकुच सनेहु मोदु मन बाढ़ा। भरतहि चितवत एकटक ठाढ़ा॥
धरि धीरजु पद बंदि बहोरी। बिनय सप्रेम करत कर जोरी॥
कुसल मूल पद पंकज पेखी। मैं तिहुँ काल कुसल निज लेखी॥
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरें। सहित कोटि कुल मंगल मोरें॥

दो. समुझि मोरि करतूति कुलु प्रभु महिमा जियँ जो।
जो न भजइ रघुबीर पद जग बिधि बंचित सो॥ १९५॥

कपटी कायर कुमति कुजाती। लोक बेद बाहेर सब भाँती॥
राम कीन्ह आपन जबही तें। भयउँ भुवन भूषन तबही तें॥
देखि प्रीति सुनि बिनय सुहा। मिले बहोरि भरत लघु भा॥
कहि निषाद निज नाम सुबानीं। सादर सकल जोहारीं रानीं॥
जानि लखन सम देहिं असीसा। जिहु सुखी सय लाख बरीसा॥
निरखि निषादु नगर नर नारी। भ सुखी जनु लखनु निहारी॥
कहहिं लहे एहिं जीवन लाहू। भेंटे रामभद्र भरि बाहू॥
सुनि निषादु निज भाग बड़ा। प्रमुदित मन लइ चले लेवा॥

दो. सनकारे सेवक सकल चले स्वामि रुख पा।
घर तरु तर सर बाग बन बास बनान्हि जा॥ १९६॥

सृंगबेरपुर भरत दीख जब। भे सनेहँ सब अंग सिथिल तब॥
सोहत दिँ निषादहि लागू। जनु तनु धरें बिनय अनुरागू॥
एहि बिधि भरत सेनु सबु संगा। दीखि जा जग पावनि गंगा॥
रामघाट कहँ कीन्ह प्रनामू। भा मनु मगनु मिले जनु रामू॥
करहिं प्रनाम नगर नर नारी। मुदित ब्रह्ममय बारि निहारी॥
करि मज्जनु मागहिं कर जोरी। रामचंद्र पद प्रीति न थोरी॥

भरत कहे सुरसरि तव रेनू। सकल सुखद सेवक सुरधेनू॥
जोरि पानि बर मागउँ एहू। सीय राम पद सहज सनेहू॥

दो. एहि बिधि मज्जनु भरतु करि गुर अनुसासन पा।
मातु नहानीं जानि सब डेरा चले लवा॥ १९७॥

जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा। भरत सोधु सबही कर लीन्हा॥
सुर सेवा करि आयसु पा। राम मातु पहिं गे दो भा॥
चरन चाँपि कहि कहि मृदु बानी। जननीं सकल भरत सनमानी॥
भाहि सौंपि मातु सेवका। आपु निषादहि लीन्ह बोला॥
चले सखा कर सों कर जोरें। सिथिल सरीर सनेह न थोरें॥
पूँछत सखहि सो ठाँ देखा। नेकु नयन मन जरनि जुड़ा॥
जहँ सिय रामु लखनु निसि सो। कहत भरे जल लोचन को॥
भरत बचन सुनि भयउ बिषादू। तुरत तहाँ लइ गयउ निषादू॥

दो. जहँ सिंसुपा पुनीत तर रघुबर किय बिश्रामु।
अति सनेहँ सादर भरत कीन्हे दंड प्रनामु॥ १९८॥

कुस साँथरीनिहारि सुहा। कीन्ह प्रनामु प्रदच्छिन जा॥

चरन रेख रज आँखिन्ह ला। बनइ न कहत प्रीति अधिका॥
कनक बिंदु दु चारिक देखे। राखे सीस सीय सम लेखे॥
सजल बिलोचन हृदयँ गलानी। कहत सखा सन बचन सुबानी॥
श्रीहत सीय बिरहँ दुतिहीना। जथा अवध नर नारि बिलीना॥
पिता जनक दैं पटतर केही। करतल भोगु जोगु जग जेही॥
ससुर भानुकुल भानु भुआलू। जेहि सिहात अमरावतिपालू॥
प्राननाथु रघुनाथ गोसा। जो बड़ होत सो राम बड़ा॥

दो. पति देवता सुतीय मनि सीय साँथरी देखि।
बिहरत हृदउ न हहरि हर पबि तें कठिन बिसेषि॥ १९९॥

लालन जोगु लखन लघु लोने। भे न भा अस अहहिं न होने॥
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे। सिय रघुबरहि प्रानपिआरे॥
मृदु मूरति सुकुमार सुभा। तात बा तन लाग न का॥
ते बन सहहिं बिपति सब भाँती। निदरे कोटि कुलिस एहिं छाती॥
राम जनमि जगु कीन्ह उजागर। रूप सील सुख सब गुन सागर॥
पुरजन परिजन गुर पितु माता। राम सुभा सबहि सुखदाता॥
बैरि राम बड़ा करहीं। बोलनि मिलनि बिनय मन हरहीं॥
सारद कोटि कोटि सत सेषा। करि न सकहिं प्रभु गुन गन लेखा॥

दो. सुखस्वरुप रघुबंसमनि मंगल मोद निधान।
ते सोवत कुस डासि महि बिधि गति अति बलवान॥ २००॥

राम सुना दुखु कान न का। जीवनतरु जिमि जोगवइ रा॥
पलक नयन फनि मनि जेहि भाँती। जोगवहिं जननि सकल दिन राती॥
ते अब फिरत बिपिन पदचारी। कंद मूल फल फूल अहारी॥
धिग कैके अमंगल मूला। भइसि प्रान प्रियतम प्रतिकूला॥
मैं धिग धिग अघ उदधि अभागी। सबु उतपातु भयउ जेहि लागी॥
कुल कलंकु करि सृजे बिधाताँ। साँदोह मोहि कीन्ह कुमाताँ॥
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू। नाथ करि कत बादि बिषादू॥
राम तुम्हहि प्रिय तुम्ह प्रिय रामहि। यह निरजोसु दोसु बिधि बामहि॥

छं. बिधि बाम की करनी कठिन जेंहिं मातु कीन्ही बावरी।
तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सरहना रावरी॥
तुलसी न तुम्ह सो राम प्रीतमु कहतु हौं सौहें किँ।
परिनाम मंगल जानि अपने आनि धीरजु हिँ॥

सो. अंतरजामी रामु सकुच सप्रेम कृपायतन।

चलि करि बिश्रामु यह बिचारि दृढ़ आनि मन ॥ २०१ ॥

सखा बचन सुनि उर धरि धीरा । बास चले सुमिरत रघुबीरा ॥
यह सुधि पा नगर नर नारी । चले बिलोकन आरत भारी ॥
परदखिना करि करहिं प्रनामा । देहिं कैकइहि खोरि निकामा ॥
भरी भरि बारि बिलोचन लेहीं । बाम बिधाताहि दूषन देहीं ॥
एक सराहहिं भरत सनेहू । को कह नृपति निबाहे नेहू ॥
निंदहिं आपु सराहि निषादहि । को कहि सकइ बिमोह बिषादहि ॥
एहि बिधि राति लोगु सबु जागा । भा भिनुसार गुदारा लागा ॥
गुरहि सुनावँ चढ़ा सुहां । नं नाव सब मातु चढ़ां ॥
दंड चारि महँ भा सबु पारा । उतरि भरत तब सबहि सँभारा ॥

दो. प्रातक्रिया करि मातु पद बंदि गुरहि सिरु ना ।
आगें कि निषाद गन दीन्हे कटकु चला ॥ २०२ ॥

कियउ निषादनाथु अगुआं । मातु पालकीं सकल चलां ॥
साथ बोला भा लघु दीन्हा । बिप्रन्ह सहित गवनु गुर कीन्हा ॥
आपु सुरसरिहि कीन्ह प्रनामू । सुमिरे लखन सहित सिय रामू ॥
गवने भरत पयोदेहिं पा । कोतल संग जाहिं डोरिआ ॥

कहहिं सुसेवक बारहिं बारा। हो नाथ अस्व असवारा॥
रामु पयोदेहि पायँ सिधा। हम कहँ रथ गज बाजि बना॥
सिर भर जाँ उचित अस मोरा। सब तें सेवक धरमु कठोरा॥
देखि भरत गति सुनि मृदु बानी। सब सेवक गन गरहिं गलानी॥

दो. भरत तीसरे पहर कहँ कीन्ह प्रबेसु प्रयाग।
कहत राम सिय राम सिय उमगि उमगि अनुराग॥ २०३॥

झलका झलकत पायन्ह कैंसें। पंकज कोस ओस कन जैसें॥
भरत पयादेहिं आ आजू। भयउ दुखित सुनि सकल समाजू॥
खबरि लीन्ह सब लोग नहा। कीन्ह प्रनामु त्रिबेनिहिं आ॥
सबिधि सितासित नीर नहाने। दि दान महिसुर सनमाने॥
देखत स्यामल धवल हलोरे। पुलकि सरीर भरत कर जोरे॥
सकल काम प्रद तीरथरा। बेद बिदित जग प्रगट प्रभा॥
मागउँ भीख त्यागि निज धरमू। आरत काह न करइ कुकरमू॥
अस जियँ जानि सुजान सुदानी। सफल करहिं जग जाचक बानी॥

दो. अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरबान।
जनम जनम रति राम पद यह बरदानु न आन॥ २०४॥

जानहुँ रामु कुटिल करि मोही। लोग कहउ गुर साहिब द्रोही॥
सीता राम चरन रति मोरें। अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरें॥
जलदु जनम भरि सुरति बिसारउ। जाचत जलु पबि पाहन डारउ॥
चातकु रटनि घटें घटि जा। बढ़े प्रेमु सब भाँति भला॥
कनकहिं बान चढ़इ जिमि दाहें। तिमि प्रियतम पद नेम निबाहें॥
भरत बचन सुनि माझ त्रिबेनी। भइ मृदु बानि सुमंगल देनी॥
तात भरत तुम्ह सब बिधि साधू। राम चरन अनुराग अगाधू॥
बाद गलानि करहु मन माहीं। तुम्ह सम रामहि को प्रिय नाहीं॥

दो. तनु पुलके हियँ हरषु सुनि बेनि बचन अनुकूल।
भरत धन्य कहि धन्य सुर हरषित बरषहिं फूल॥ २०५॥

प्रमुदित तीरथराज निवासी। बैखानस बटु गृही उदासी॥
कहहिं परसपर मिलि दस पाँचा। भरत सनेह सीलु सुचि साँचा॥
सुनत राम गुन ग्राम सुहा। भरद्वाज मुनिबर पहिं आ॥
दंड प्रनामु करत मुनि देखे। मूरतिमंत भाग्य निज लेखे॥
धा उठा ला उर लीन्हे। दीन्हि असीस कृतारथ कीन्हे॥
आसनु दीन्ह ना सिरु बैठे। चहत सकुच गृहँ जनु भजि पैठे॥

मुनि पूँछब कछु यह बड़ सोचू। बोले रिषि लखि सीलु सँकोचू॥
सुनहु भरत हम सब सुधि पा। बिधि करतब पर किछु न बसा॥

दो. तुम्ह गलानि जियँ जनि करहु समुझी मातु करतूति।
तात कैकइहि दोसु नहिं ग गिरा मति धूति॥ २०६॥

यहउ कहत भल कहिहि न को। लोकु बेद बुध संमत दो॥
तात तुम्हार बिमल जसु गा। पाहि लोकउ बेदु बड़ा॥
लोक बेद संमत सबु कह। जेहि पितु दे राजु सो लह॥
रा सत्यब्रत तुम्हहि बोला। देत राजु सुखु धरमु बड़ा॥
राम गवनु बन अनरथ मूला। जो सुनि सकल बिस्व भइ सूला॥
सो भावी बस रानि अयानी। करि कुचालि अंतहुँ पछितानी॥
तहँउँ तुम्हार अलप अपराधू। कहै सो अधम अयान असाधू॥
करतेहु राजु त तुम्हहि न दोषू। रामहि होत सुनत संतोषू॥

दो. अब अति कीन्हेहु भरत भल तुम्हहि उचित मत एहु।
सकल सुमंगल मूल जग रघुबर चरन सनेहु॥ २०७॥

सो तुम्हार धनु जीवनु प्राना। भूरिभाग को तुम्हहि समाना॥

यह तम्हार आचरजु न ताता। दसरथ सुन राम प्रिय भ्राता॥
सुनहु भरत रघुबर मन माहीं। पेम पात्रु तुम्ह सम को नाहीं॥
लखन राम सीतहि अति प्रीती। निसि सब तुम्हहि सराहत बीती॥
जाना मरमु नहात प्रयागा। मगन होहिं तुम्हरें अनुरागा॥
तुम्ह पर अस सनेहु रघुबर कें। सुख जीवन जग जस जड़ नर कें॥
यह न अधिक रघुबीर बड़ा। प्रनत कुटुंब पाल रघुरा॥
तुम्ह तौ भरत मोर मत एहू। धरें देह जनु राम सनेहू॥

दो. तुम्ह कहँ भरत कलंक यह हम सब कहँ उपदेसु।
राम भगति रस सिद्धि हित भा यह समउ गनेसु॥ २०८॥

नव बिधु बिमल तात जसु तोरा। रघुबर किंकर कुमुद चकोरा॥
उदित सदा अँथइहि कबहूँ ना। घटिहि न जग नभ दिन दिन दूना॥
कोक तिलोक प्रीति अति करिही। प्रभु प्रताप रबि छबिहि न हरिही॥
निसि दिन सुखद सदा सब काहू। ग्रसिहि न कैकइ करतबु राहू॥
पूरन राम सुपेम पियूषा। गुर अवमान दोष नहिं दूषा॥
राम भगत अब अमिँ अघाहूँ। कीन्हेहु सुलभ सुधा बसुधाहूँ॥
भूप भगीरथ सुरसरि आनी। सुमिरत सकल सुंमगल खानी॥
दसरथ गुन गन बरनि न जाहीं। अधिकु कहा जेहि सम जग नाहीं॥

दो. जासु सनेह सकोच बस राम प्रगट भ आ ॥
जे हर हिय नयननि कबहुँ निरखे नहीं अघा ॥ २०९ ॥

कीरति बिधु तुम्ह कीन्ह अनूपा । जहँ बस राम पेम मृगरूपा ॥
तात गलानि करहु जियँ जाँ । डरहु दरिद्रहि पारसु पाँ ॥ ॥
सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं । उदासीन तापस बन रहहीं ॥
सब साधन कर सुफल सुहावा । लखन राम सिय दरसनु पावा ॥
तेहि फल कर फलु दरस तुम्हारा । सहित पयाग सुभाग हमारा ॥
भरत धन्य तुम्ह जसु जगु जय । कहि अस पेम मगन पुनि भय ॥
सुनि मुनि बचन सभासद हरषे । साधु सराहि सुमन सुर बरषे ॥
धन्य धन्य धुनि गगन पयागा । सुनि सुनि भरतु मगन अनुरागा ॥

दो. पुलक गात हियँ रामु सिय सजल सरोरुह नैन ।
करि प्रनामु मुनि मंडलिहि बोले गदगद बैन ॥ २१० ॥

मुनि समाजु अरु तीरथराजू । साँचिहुँ सपथ अघा अकाजू ॥
एहिं थल जौं किछु कहि बना । एहि सम अधिक न अघ अधमा ॥
तुम्ह सर्बग्य कहउँ सतिभा । उर अंतरजामी रघुरा ॥

मोहि न मातु करतब कर सोचू। नहिं दुखु जियँ जगु जानिहि पोचू॥
नाहिन डरु बिगरिहि परलोकू। पितहु मरन कर मोहि न सोकू॥
सुकृत सुजस भरि भुन सुहा। लछिमन राम सरिस सुत पा॥
राम बिरहँ तजि तनु छनभंगू। भूप सोच कर कवन प्रसंगू॥
राम लखन सिय बिनु पग पनहीं। करि मुनि बेष फिरहिं बन बनही॥

दो. अजिन बसन फल असन महि सयन डासि कुस पात।
बसि तरु तर नित सहत हिम आतप बरषा बात॥ २११॥

एहि दुख दाहँ दहइ दिन छाती। भूख न बासर नीद न राती॥
एहि कुरोग कर औषधु नाहीं। सोधेँ सकल बिस्व मन माहीं॥
मातु कुमत बढ़ अघ मूला। तेहिं हमार हित कीन्ह बँसूला॥
कलि कुकाठ कर कीन्ह कुजंत्रू। गाड़ि अवधि पढ़ि कठिन कुमंत्रु॥
मोहि लगि यहु कुठाटु तेहिं ठाटा। घालेसि सब जगु बारहबाटा॥
मिटइ कुजोगु राम फिरि आँ। बसइ अवध नहिं आन उपाँ॥
भरत बचन सुनि मुनि सुखु पा। सबहिं कीन्ह बहु भाँति बड़ा॥
तात करहु जनि सोचु बिसेषी। सब दुखु मिटहि राम पग देखी॥

दो. करि प्रबोध मुनिबर कहे अतिथि पेमप्रिय होहु।

कंद मूल फल फूल हम देहिं लेहु करि छोहु ॥ २१२ ॥

सुनि मुनि बचन भरत हिँय सोचू । भयउ कुवसर कठिन सँकोचू ॥
जानि गरु गुर गिरा बहोरी । चरन बंदि बोले कर जोरी ॥
सिर धरि आयसु करि तुम्हारा । परम धरम यहु नाथ हमारा ॥
भरत बचन मुनिबर मन भा । सुचि सेवक सिष निकट बोला ॥
चाहि कीन्ह भरत पहुना । कंद मूल फल आनहु जा ॥
भलेहीं नाथ कहि तिन्ह सिर ना । प्रमुदित निज निज काज सिधा ॥
मुनिहि सोच पाहुन बड़ नेवता । तसि पूजा चाहि जस देवता ॥
सुनि रिधि सिधि अनिमादिक आ । आयसु हो सो करहिं गोसा ॥

दो. राम बिरह ब्याकुल भरतु सानुज सहित समाज ।
पहुना करि हरहु श्रम कहा मुदित मुनिराज ॥ २१३ ॥

रिधि सिधि सिर धरि मुनिबर बानी । बड़भागिनि आपुहि अनुमानी ॥
कहहिं परसपर सिधि समुदा । अतुलित अतिथि राम लघु भा ॥
मुनि पद बंदि करि सो आजू । हो सुखी सब राज समाजू ॥
अस कहि रचे रुचिर गृह नाना । जेहि बिलोकि बिलखाहिं बिमाना ॥
भोग बिभूति भूरि भरि राखे । देखत जिन्हहि अमर अभिलाषे ॥

दासीं दास साजु सब लीन्हें। जोगवत रहहिं मनहि मनु दीन्हें॥
सब समाजु सजि सिधि पल माहीं। जे सुख सुरपुर सपनेहुँ नाहीं॥
प्रथमहिं बास दि सब केही। सुंदर सुखद जथा रुचि जेही॥

दो. बहुरि सपरिजन भरत कहुँ रिषि अस आयसु दीन्ह।
बिधि बिसमय दायकु बिभव मुनिबर तपबल कीन्ह॥ २१४॥

मुनि प्रभा जब भरत बिलोका। सब लघु लगे लोकपति लोका॥
सुख समाजु नहिं जा बखानी। देखत बिरति बिसारहीं ग्यानी॥
आसन सयन सुबसन बिताना। बन बाटिका बिहग मृग नाना॥
सुरभि फूल फल अमि समाना। बिमल जलासय बिबिध बिधाना।
असन पान सुच अमि अमी से। देखि लोग सकुचात जमी से॥
सुर सुरभी सुरतरु सबही कें। लखि अभिलाषु सुरेस सची कें॥
रितु बसंत बह त्रिबिध बयारी। सब कहँ सुलभ पदारथ चारी॥
स्रक चंदन बनितादिक भोगा। देखि हरष बिसमय बस लोगा॥

दो. संपत चक भरतु चक मुनि आयस खेलवार॥
तेहि निसि आश्रम पिंजराँ राखे भा भिनुसार॥ २१५॥

मासपारायण उन्नीसवाँ विश्राम

कीन्ह निमज्जनु तीरथराजा। ना मुनिहि सिरु सहित समाजा॥
रिषि आयसु असीस सिर राखी। करि दंडवत बिनय बहु भाषी॥
पथ गति कुसल साथ सब लीन्हे। चले चित्रकूटहिं चितु दीन्हें॥
रामसखा कर दीन्हें लागू। चलत देह धरि जनु अनुरागू॥
नहिं पद त्रान सीस नहिं छाया। पेमु नेमु ब्रतु धरमु अमाया॥
लखन राम सिय पंथ कहानी। पूँछत सखहि कहत मृदु बानी॥
राम बास थल बिटप बिलोकें। उर अनुराग रहत नहिं रोकैं॥
दैखि दसा सुर बरिसहिं फूला। भइ मृदु महि मगु मंगल मूला॥

दो. किँ जाहिं छाया जलद सुखद बहइ बर बात।
तस मगु भयउ न राम कहँ जस भा भरतहि जात॥ २१६॥

जड़ चेतन मग जीव घनेरे। जे चित प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे॥
ते सब भ परम पद जोगू। भरत दरस मेटा भव रोगू॥
यह बड़ि बात भरत कइ नाहीं। सुमिरत जिनहि रामु मन माहीं॥
बारक राम कहत जग जे। होत तरन तारन नर ते॥
भरतु राम प्रिय पुनि लघु भ्राता। कस न हो मगु मंगलदाता॥
सिद्ध साधु मुनिबर अस कहहीं। भरतहि निरखि हरषु हियँ लहहीं॥

देखि प्रभा सुरेसहि सोचू। जगु भल भलेहि पोच कहुँ पोचू॥
गुर सन कहे करि प्रभु सो। रामहि भरतहि भेंट न हो॥

दो. रामु सँकोची प्रेम बस भरत सपेम पयोधि।
बनी बात बेगरन चहति करि जतनु छलु सोधि॥ २१७॥

बचन सुनत सुरगुरु मुसकाने। सहसनयन बिनु लोचन जाने॥
मायापति सेवक सन माया। करइ त उलटि परइ सुरराया॥
तब किछु कीन्ह राम रुख जानी। अब कुचालि करि होहि हानी॥
सुनु सुरेस रघुनाथ सुभा। निज अपराध रिसाहिं न का॥
जो अपराधु भगत कर कर। राम रोष पावक सो जर॥
लोकहुँ बेद बिदित इतिहासा। यह महिमा जानहिं दुरबासा॥
भरत सरिस को राम सनेही। जगु जप राम रामु जप जेही॥

दो. मनहुँ न आनि अमरपति रघुबर भगत अकाजु।
अजसु लोक परलोक दुख दिन दिन सोक समाजु॥ २१८॥

सुनु सुरेस उपदेसु हमारा। रामहि सेवकु परम पिआरा॥
मानत सुखु सेवक सेवका। सेवक बैर बैरु अधिका॥

जद्यपि सम नहिं राग न रोषू। गहहिं न पाप पूनु गुन दोषू॥
करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा॥
तदपि करहिं सम बिषम बिहारा। भगत अभगत हृदय अनुसारा॥
अगुन अलेप अमान एकरस। रामु सगुन भ भगत पेम बस॥
राम सदा सेवक रुचि राखी। बेद पुरान साधु सुर साखी॥
अस जियँ जानि तजहु कुटिला। करहु भरत पद प्रीति सुहा॥

दो. राम भगत परहित निरत पर दुख दुखी दयाल।
भगत सिरोमनि भरत तें जनि डरपहु सुरपाल॥ २१९॥

सत्यसंध प्रभु सुर हितकारी। भरत राम आयस अनुसारी॥
स्वारथ बिबस बिकल तुम्ह होहू। भरत दोसु नहिं रार मोहू॥
सुनि सुरबर सुरगुर बर बानी। भा प्रमोदु मन मिटी गलानी॥
बरषि प्रसून हरषि सुररा। लगे सराहन भरत सुभा॥
एहि बिधि भरत चले मग जाहीं। दसा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं॥
जबहिं रामु कहि लेहिं उसासा। उमगत पेमु मनहँ चहु पासा॥
द्रवहिं बचन सुनि कुलिस पषाना। पुरजन पेमु न जा बखाना॥
बीच बास करि जमुनहिं आ। निरखि नीरु लोचन जल छा॥

दो. रघुबर बरन बिलोकि बर बारि समेत समाज।
होत मगन बारिधि बिरह चढ़े बिबेक जहाज॥ २२०॥

जमुन तीर तेहि दिन करि बासू। भयउ समय सम सबहि सुपासू॥
रातहिं घाट घाट की तरनी। आं अगनित जाहिं न बरनी॥
प्रात पार भ एकहि खेंवाँ। तोषे रामसखा की सेवाँ॥
चले नहा नदिहि सिर ना। साथ निषादनाथ दो भा॥
आगें मुनिबर बाहन आछें। राजसमाज जा सबु पाछें॥
तेहिं पाछें दो बंधु पयादें। भूषन बसन बेष सुठि सादें॥
सेवक सुहृद सचिवसुत साथा। सुमिरत लखनु सीय रघुनाथा॥
जहँ जहँ राम बास बिश्रामा। तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रनामा॥

दो. मगबासी नर नारि सुनि धाम काम तजि धा।
देखि सरूप सनेह सब मुदित जनम फलु पा॥ २२१॥

कहहिं सपेम एक एक पाहीं। रामु लखनु सखि होहिं कि नाहीं॥
बय बपु बरन रूप सो आली। सीलु सनेहु सरिस सम चाली॥
बेषु न सो सखि सीय न संगा। आगें अनी चली चतुरंगा॥
नहिं प्रसन्न मुख मानस खेदा। सखि संदेहु हो एहिं भेदा॥

तासु तरक तियगन मन मानी। कहहिं सकल तेहि सम न सयानी॥
तेहि सराहि बानी फुरि पूजी। बोली मधुर बचन तिय दूजी॥
कहि सपेम सब कथाप्रसंगू। जेहि बिधि राम राज रस भंगू॥
भरतहि बहुरि सराहन लागी। सील सनेह सुभाय सुभागी॥

दो. चलत पयादें खात फल पिता दीन्ह तजि राजु।
जात मनावन रघुबरहि भरत सरिस को आजु॥ २२२॥

भायप भगति भरत आचरनू। कहत सुनत दुख दूषन हरनू॥
जो कछु कहब थोर सखि सो। राम बंधु अस काहे न हो॥
हम सब सानुज भरतहि देखें। भइन्ह धन्य जुबती जन लेखें॥
सुनि गुन देखि दसा पछिताहीं। कैकइ जननि जोगु सुतु नाहीं॥
को कह दूषनु रानिहि नाहिन। बिधि सबु कीन्ह हमहि जो दाहिन॥
कहँ हम लोक बेद बिधि हीनी। लघु तिय कुल करतूति मलीनी॥
बसहिं कुदेस कुगाँव कुबामा। कहँ यह दरसु पुन्य परिनामा॥
अस अनंदु अचिरिजु प्रति ग्रामा। जनु मरुभूमि कलपतरु जामा॥

दो. भरत दरसु देखत खुले मग लोगन्ह कर भागु।
जनु सिंघलबासिन्ह भयउ बिधि बस सुलभ प्रयागु॥ २२३॥

निज गुन सहित राम गुन गाथा। सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा॥
तीरथ मुनि आश्रम सुरधामा। निरखि निमज्जहिं करहिं प्रनामा॥
मनहीं मन मागहिं बरु एहू। सीय राम पद पदुम सनेहू॥
मिलहिं किरात कोल बनबासी। बैखानस बटु जती उदासी॥
करि प्रनामु पूँछहिं जेहिं तेही। केहि बन लखनु रामु बैदेही॥
ते प्रभु समाचार सब कहहीं। भरतहि देखि जनम फलु लहहीं॥
जे जन कहहिं कुसल हम देखे। ते प्रिय राम लखन सम लेखे॥
एहि बिधि बूझत सबहि सुबानी। सुनत राम बनबास कहानी॥

दो. तेहि बासर बसि प्रातहीं चले सुमिरि रघुनाथ।
राम दरस की लालसा भरत सरिस सब साथ॥ २२४॥

मंगल सगुन होहिं सब काहू। फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू॥
भरतहि सहित समाज उछाहू। मिलिहहिं रामु मिटहि दुख दाहू॥
करत मनोरथ जस जियँ जाके। जाहिं सनेह सुराँ सब छाके॥
सिथिल अंग पग मग डगि डोलहिं। बिहबल बचन पेम बस बोलहिं॥
रामसखाँ तेहि समय देखावा। सैल सिरोमनि सहज सुहावा॥
जासु समीप सरित पय तीरा। सीय समेत बसहिं दो बीरा॥

देखि करहिं सब दंड प्रनामा। कहि जय जानकि जीवन रामा॥
प्रेम मगन अस राज समाजू। जनु फिरि अवध चले रघुराजू॥

दो. भरत प्रेमु तेहि समय जस तस कहि सकइ न सेषु।
कबिहिं अगम जिमि ब्रह्मसुखु अह मम मलिन जनेषु॥ २२५।

सकल सनेह सिथिल रघुबर कें। ग कोस दु दिनकर ढरकें॥
जलु थलु देखि बसे निसि बीतें। कीन्ह गवन रघुनाथ पिरीतें॥
उहाँ रामु रजनी अवसेषा। जागे सीयँ सपन अस देखा॥
सहित समाज भरत जनु आ। नाथ बियोग ताप तन ता॥
सकल मलिन मन दीन दुखारी। देखीं सासु आन अनुहारी॥
सुनि सिय सपन भरे जल लोचन। भ सोचबस सोच बिमोचन॥
लखन सपन यह नीक न हो। कठिन कुचाह सुनाहि को॥
अस कहि बंधु समेत नहाने। पूजि पुरारि साधु सनमाने॥

छं. सनमानि सुर मुनि बंदि बैठे उत्तर दिसि देखत भ।
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे बिकल प्रभु आश्रम ग॥
तुलसी उठे अवलोकि कारनु काह चित सचकित रहे।
सब समाचार किरात कोलन्हि आ तेहि अवसर कहे॥

दो. सुनत सुमंगल बैन मन प्रमोद तन पुलक भर।
सरद सरोरुह नैन तुलसी भरे सनेह जल॥ २२६॥

बहुरि सोचबस भे सियरवनू। कारन कवन भरत आगवनू॥
एक आ अस कहा बहोरी। सेन संग चतुरंग न थोरी॥
सो सुनि रामहि भा अति सोचू। इत पितु बच इत बंधु सकोचू॥
भरत सुभा समुझि मन माहीं। प्रभु चित हित थिति पावत नाही॥
समाधान तब भा यह जाने। भरतु कहे महुँ साधु सयाने॥
लखन लखे प्रभु हृदयँ खभारू। कहत समय सम नीति बिचारू॥
बिनु पूँछ कछु कहउँ गोसां। सेवकु समयँ न ढीठ ढिठा॥
तुम्ह सर्बग्य सिरोमनि स्वामी। आपनि समुझि कहउँ अनुगामी॥

दो. नाथ सुहृद सुठि सरल चित सील सनेह निधान॥
सब पर प्रीति प्रतीति जियँ जानि आपु समान॥ २२७॥

बिष जीव पा प्रभुता। मूढ़ मोह बस होहिं जना॥
भरतु नीति रत साधु सुजाना। प्रभु पद प्रेम सकल जगु जाना॥
ते आजु राम पदु पा। चले धरम मरजाद मेटा॥

कुटिल कुबंध कुवसरु ताकी। जानि राम बनवास एकाकी॥
करि कुमंत्रु मन साजि समाजू। आ करै अकंटक राजू॥
कोटि प्रकार कलपि कुटला। आ दल बटोरि दो भा॥
जौं जियँ होति न कपट कुचाली। केहि सोहाति रथ बाजि गजाली॥
भरतहि दोसु दे को जाँ। जग बौरा राज पदु पाँ॥

दो. ससि गुर तिय गामी नघुषु चढ़े भूमिसुर जान।
लोक बेद तें बिमुख भा अधम न बेन समान॥ २२८॥

सहसबाहु सुरनाथु त्रिसंकू। केहि न राजमद दीन्ह कलंकू॥
भरत कीन्ह यह उचित उपा। रिपु रिन रंच न राखब का॥
एक कीन्हि नहिं भरत भला। निदरे रामु जानि असहा॥
समुझि परिहि सो आजु बिसेषी। समर सरोष राम मुखु पेखी॥
एतना कहत नीति रस भूला। रन रस बिटपु पुलक मिस फूला॥
प्रभु पद बंदि सीस रज राखी। बोले सत्य सहज बलु भाषी॥
अनुचित नाथ न मानब मोरा। भरत हमहि उपचार न थोरा॥
कहँ लगि सहि रहि मनु मारें। नाथ साथ धनु हाथ हमारें॥

दो. छत्रि जाति रघुकुल जनमु राम अनुग जगु जान।

लातहुँ मारें चढ़ति सिर नीच को धूरि समान ॥ २२९ ॥

उठि कर जोरि रजायसु मागा । मनहुँ बीर रस सोवत जागा ॥
बाँधि जटा सिर कसि कटि भाथा । साजि सरासनु सायकु हाथा ॥
आजु राम सेवक जसु लैं । भरतहि समर सिखावन दैं ॥
राम निरादर कर फलु पा । सोवहुँ समर सेज दो भा ॥
आ बना भल सकल समाजू । प्रगट करउँ रिस पाछिल आजू ॥
जिमि करि निकर दलइ मृगराजू । ले लपेटि लवा जिमि बाजू ॥
तैसेहिं भरतहि सेन समेता । सानुज निदरि निपातउँ खेता ॥
जौं सहाय कर संकरु आ । तौ मारउँ रन राम दोहा ॥

दो. अति सरोष माखे लखनु लखि सुनि सपथ प्रवान ।
सभय लोक सब लोकपति चाहत भभरि भगान ॥ २३० ॥

जगु भय मगन गगन भइ बानी । लखन बाहुबलु बिपुल बखानी ॥
तात प्रताप प्रभा तुम्हारा । को कहि सकइ को जाननिहारा ॥
अनुचित उचित काजु किछु हो । समुझि करि भल कह सबु को ॥
सहसा करि पाछैं पछिताहीं । कहहिं बेद बुध ते बुध नाहीं ॥
सुनि सुर बचन लखन सकुचाने । राम सीयँ सादर सनमाने ॥

कही तात तुम्ह नीति सुहा। सब तें कठिन राजमदु भा॥
जो अचवँत नृप मातहिं ते। नाहिन साधुसभा जेहिं से॥
सुनहु लखन भल भरत सरीसा। बिधि प्रपंच महँ सुना न दीसा॥

दो. भरतहि हो न राजमदु बिधि हरि हर पद पा॥
कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसा॥ २३१॥

तिमिरु तरुन तरनिहि मकु गिल। गगनु मगन मकु मेघहिं मिल॥
गोपद जल बूड़हिं घटजोनी। सहज छमा बरु छाड़ै छोनी॥
मसक फूँक मकु मेरु उड़ा। हो न नृपमदु भरतहि भा॥
लखन तुम्हार सपथ पितु आना। सुचि सुबंधु नहिं भरत समाना॥
सगुन खीरु अवगुन जलु ताता। मिलइ रचइ परपंचु बिधाता॥
भरतु हंस रबिबंस तड़ागा। जनमि कीन्ह गुन दोष बिभागा॥
गहि गुन पय तजि अवगुन बारी। निज जस जगत कीन्हि उजिआरी॥
कहत भरत गुन सीलु सुभा। पेम पयोधि मगन रघुरा॥

दो. सुनि रघुबर बानी बिबुध देखि भरत पर हेतु।
सकल सराहत राम सो प्रभु को कृपानिकेतु॥ २३२॥

जौं न होत जग जनम भरत को। सकल धरम धुर धरनि धरत को॥
कबि कुल अगम भरत गुन गाथा। को जानइ तुम्ह बिनु रघुनाथा॥
लखन राम सियँ सुनि सुर बानी। अति सुखु लहे न जा बखानी॥
इहाँ भरतु सब सहित सहा। मंदाकिनीं पुनीत नहा॥
सरित समीप राखि सब लोगा। मागि मातु गुर सचिव नियोगा॥
चले भरतु जहँ सिय रघुरा। साथ निषादनाथु लघु भा॥
समुझि मातु करतब सकुचाहीं। करत कुतरक कोटि मन माहीं॥
रामु लखनु सिय सुनि मम नाँ। उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाँ॥

दो. मातु मते महुँ मानि मोहि जो कछु करहिं सो थोर।
अघ अवगुन छमि आदरहिं समुझि आपनी ओर॥ २३३॥

जौं परिहरहिं मलिन मनु जानी। जौ सनमानहिं सेवकु मानी॥
मोरें सरन रामहि की पनही। राम सुस्वामि दोसु सब जनही॥
जग जस भाजन चातक मीना। नेम पेम निज निपुन नबीना॥
अस मन गुनत चले मग जाता। सकुच सनेहँ सिथिल सब गाता॥
फेरत मनहुँ मातु कृत खोरी। चलत भगति बल धीरज धोरी॥
जब समुझत रघुनाथ सुभा। तब पथ परत उताल पा॥
भरत दसा तेहि अवसर कैसी। जल प्रबाहँ जल अलि गति जैसी॥

देखि भरत कर सोचु सनेहू। भा निषाद तेहि समयँ बिदेहू॥

दो. लगे होन मंगल सगुन सुनि गुनि कहत निषादु।
मिटिहि सोचु होहि हरषु पुनि परिनाम बिषादु॥ २३४॥

सेवक बचन सत्य सब जाने। आश्रम निकट जा निराने॥
भरत दीख बन सैल समाजू। मुदित छुधित जनु पा सुनाजू॥
ईति भीति जनु प्रजा दुखारी। त्रिबिध ताप पीड़ित ग्रह मारी॥
जा सुराज सुदेस सुखारी। होहिं भरत गति तेहि अनुहारी॥
राम बास बन संपति भ्राजा। सुखी प्रजा जनु पा सुराजा॥
सचिव बिरागु बिबेकु नरेसू। बिपिन सुहावन पावन देसू॥
भट जम नियम सैल रजधानी। सांति सुमति सुचि सुंदर रानी॥
सकल अंग संपन्न सुरा। राम चरन आश्रित चित चा॥

दो. जीति मोह महिपालु दल सहित बिबेक भुआलु।
करत अकंटक राजु पुरँ सुख संपदा सुकालु॥ २३५॥

बन प्रदेस मुनि बास घनेरे। जनु पुर नगर गाँ गन खेरे॥
बिपुल बिचित्र बिहग मृग नाना। प्रजा समाजु न जा बखाना॥

खगहा करि हरि बाघ बराहा। देखि महिष बृष साजु सराहा॥
बयरु बिहा चरहिं एक संगा। जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा॥
झरना झरहिं मत्त गज गाजहिं। मनहुँ निसान बिबिधि बिधि बाजहिं॥
चक चकोर चातक सुक पिक गन। कूजत मंजु मराल मुदित मन॥
अलिगन गावत नाचत मोरा। जनु सुराज मंगल चहु ओरा॥
बेलि बिटप तृन सफल सफूला। सब समाजु मुद मंगल मूला॥
दो. राम सैल सोभा निरखि भरत हृदयँ अति पेमु।
तापस तप फलु पा जिमि सुखी सिरानें नेमु॥ २३६॥

मासपारायण बीसवाँ विश्राम

नवाह्नपारायण पाँचवाँ विश्राम

तब केवट ऊँचें चढ़ि धा। कहे भरत सन भुजा उठा॥
नाथ देखिहिं बिटप बिसाला। पाकरि जंबु रसाल तमाला॥
जिन्ह तरुबरन्ह मध्य बटु सोहा। मंजु बिसाल देखि मनु मोहा॥
नील सघन पल्लव फल लाला। अबिरल छाहँ सुखद सब काला॥
मानहुँ तिमिर अरुनमय रासी। बिरची बिधि सँकेलि सुषमा सी॥
ए तरु सरित समीप गोसाँई। रघुबर परनकुटी जहँ छा॥
तुलसी तरुबर बिबिध सुहा। कहुँ कहुँ सियँ कहुँ लखन लगा॥
बट छायाँ बेदिका बना। सियँ निज पानि सरोज सुहा॥

दो. जहाँ बैठि मुनिगन सहित नित सिय रामु सुजान।
सुनहिं कथा इतिहास सब आगम निगम पुरान॥ २३७॥

सखा बचन सुनि बिटप निहारी। उमगे भरत बिलोचन बारी॥
करत प्रनाम चले दो भा। कहत प्रीति सारद सकुचा॥
हरषहिं निरखि राम पद अंका। मानहुँ पारसु पायउ रंका॥
रज सिर धरि हियँ नयनन्हि लावहिं। रघुबर मिलन सरिस सुख पावहिं॥
देखि भरत गति अकथ अतीवा। प्रेम मगन मृग खग जड़ जीवा॥
सखहि सनेह बिबस मग भूला। कहि सुपंथ सुर बरषहिं फूला॥
निरखि सिद्ध साधक अनुरागे। सहज सनेहु सराहन लागे॥
होत न भूतल भा भरत को। अचर सचर चर अचर करत को॥

दो. पेम अमि मंदरु बिरहु भरतु पयोधि गँभीर।
मथि प्रगटे सुर साधु हित कृपासिंधु रघुबीर॥ २३८॥

सखा समेत मनोहर जोटा। लखे न लखन सघन बन ओटा॥
भरत दीख प्रभु आश्रमु पावन। सकल सुमंगल सदनु सुहावन॥

करत प्रबेस मिटे दुख दावा। जनु जोगीं परमारथु पावा॥
देखे भरत लखन प्रभु आगे। पूँछे बचन कहत अनुरागे॥
सीस जटा कटि मुनि पट बाँधें। तून कसें कर सरु धनु काँधें॥
बेदी पर मुनि साधु समाजू। सीय सहित राजत रघुराजू॥
बलकल बसन जटिल तनु स्यामा। जनु मुनि बेष कीन्ह रति कामा॥
कर कमलनि धनु सायकु फेरत। जिय की जरनि हरत हँसि हेरत॥

दो. लसत मंजु मुनि मंडली मध्य सीय रघुचंदु।
ग्यान सभाँ जनु तनु धरे भगति सच्चिदानंदु॥ २३९॥

सानुज सखा समेत मगन मन। बिसरे हरष सोक सुख दुख गन॥
पाहि नाथ कहि पाहि गोसा। भूतल परे लकुट की ना॥
बचन सपेम लखन पहिचाने। करत प्रनामु भरत जियँ जाने॥
बंधु सनेह सरस एहि ओरा। उत साहिब सेवा बस जोरा॥
मिलि न जा नहिं गुदरत बन। सुकबि लखन मन की गति भन॥
रहे राखि सेवा पर भारू। चढ़ी चंग जनु खैंच खेलारू॥
कहत सप्रेम ना महि माथा। भरत प्रनाम करत रघुनाथा॥
उठे रामु सुनि पेम अधीरा। कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा॥

दो. बरबस लि उठा उर ला कृपानिधान।
भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान॥ २४०॥

मिलनि प्रीति किमि जा बखानी। कबिकुल अगम करम मन बानी॥
परम पेम पूरन दो भा। मन बुधि चित अहमिति बिसरा॥
कहहु सुपेम प्रगट को कर। केहि छाया कबि मति अनुसर॥
कबिहि अरथ आखर बलु साँचा। अनुहरि ताल गतिहि नटु नाचा॥
अगम सनेह भरत रघुबर को। जहँ न जा मनु बिधि हरि हर को॥
सो मैं कुमति कहौं केहि भाँती। बाज सुराग कि गाँडर ताँती॥
मिलनि बिलोकि भरत रघुबर की। सुरगन सभय धकधकी धरकी॥
समुझा सुरगुरु जड़ जागे। बरषि प्रसून प्रसंसन लागे॥

दो. मिलि सपेम रिपुसूदनहि केवटु भेंटे राम।
भूरि भायँ भेंटे भरत लछिमन करत प्रनाम॥ २४१॥

भेंटे लखन ललकि लघु भा। बहुरि निषादु लीन्ह उर ला॥
पुनि मुनिगन दुहुँ भान्ह बंदे। अभिमत आसिष पा अनंदे॥
सानुज भरत उमगि अनुरागा। धरि सिर सिय पद पदुम परागा॥
पुनि पुनि करत प्रनाम उठा। सिर कर कमल परसि बैठा॥

सीयँ असीस दीन्हि मन माहीं। मगन सनेहँ देह सुधि नाहीं॥
सब बिधि सानुकूल लखि सीता। भे निसोच उर अपडर बीता॥
को किछु कहइ न को किछु पूँछा। प्रेम भरा मन निज गति छूँछा॥
तेहि अवसर केवटु धीरजु धरि। जोरि पानि बिनवत प्रनामु करि॥

दो. नाथ साथ मुनिनाथ के मातु सकल पुर लोग।
सेवक सेनप सचिव सब आ बिकल बियोग॥ २४२॥

सीलसिंधु सुनि गुर आगवनू। सिय समीप राखे रिपुदवनू॥
चले सबेग रामु तेहि काला। धीर धरम धुर दीनदयाला॥
गुरहि देखि सानुज अनुरागे। दंड प्रनाम करन प्रभु लागे॥
मुनिबर धा लि उर ला। प्रेम उमगि भेंटे दो भा॥
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू। कीन्ह दूरि तें दंड प्रनामू॥
रामसखा रिषि बरबस भेंटा। जनु महि लुठत सनेह समेटा॥
रघुपति भगति सुमंगल मूला। नभ सराहि सुर बरिसहिं फूला॥
एहि सम निपट नीच को नाहीं। बड़ बसिष्ठ सम को जग माहीं॥

दो. जेहि लखि लखनहु तें अधिक मिले मुदित मुनिरा।
सो सीतापति भजन को प्रगट प्रताप प्रभा॥ २४३॥

आरत लोग राम सबु जाना। करुनाकर सुजान भगवाना॥
जो जेहि भायँ रहा अभिलाषी। तेहि तेहि कै तसि तसि रुख राखी॥
सानुज मिलि पल महु सब काहू। कीन्ह दूरि दुखु दारुन दाहू॥
यह बड़ि बातँ राम कै नाहीं। जिमि घट कोटि एक रबि छाहीं॥
मिलि केवटिहि उमगि अनुरागा। पुरजन सकल सराहहिं भागा॥
देखीं राम दुखित महतारीं। जनु सुबेलि अवलीं हिम मारीं॥
प्रथम राम भेंटी कैके। सरल सुभायँ भगति मति भे॥
पग परि कीन्ह प्रबोधु बहोरी। काल करम बिधि सिर धरि खोरी॥

दो. भेटीं रघुबर मातु सब करि प्रबोधु परितोषु॥
अंब ईस आधीन जगु काहु न दे दोषु॥ २४४॥

गुरतिय पद बंदे दुहु भा। सहित बिप्रतिय जे सँग आ॥
गंग गौरि सम सब सनमानीं॥ देहिं असीस मुदित मृदु बानी॥
गहि पद लगे सुमित्रा अंका। जनु भेटीं संपति अति रंका॥
पुनि जननि चरननि दो भ्राता। परे पेम ब्याकुल सब गाता॥
अति अनुराग अंब उर ला। नयन सनेह सलिल अन्हवा॥
तेहि अवसर कर हरष बिषादू। किमि कबि कहै मूक जिमि स्वादू॥

मिलि जननहि सानुज रघुरा। गुर सन कहे कि धारि पा॥
पुरजन पा मुनीस नियोगू। जल थल तकि तकि उतरे लोगू॥

दो. महिसुर मंत्री मातु गुर गने लोग लि साथ॥
पावन आश्रम गवनु किय भरत लखन रघुनाथ॥ २४५॥

सीय आ मुनिबर पग लागी। उचित असीस लही मन मागी॥
गुरपतिनिहि मुनितियन्ह समेता। मिली पेमु कहि जा न जेता॥
बंदि बंदि पग सिय सबही के। आसिरबचन लहे प्रिय जी के॥
सासु सकल जब सीयँ निहारीं। मूदे नयन सहमि सुकुमारीं॥
परीं बधिक बस मनहुँ मरालीं। काह कीन्ह करतार कुचालीं॥
तिन्ह सिय निरखि निपट दुखु पावा। सो सबु सहि जो दै सहावा॥
जनकसुता तब उर धरि धीरा। नील नलिन लोयन भरि नीरा॥
मिली सकल सासुन्ह सिय जा। तेहि अवसर करुना महि छा॥

दो. लागि लागि पग सबनि सिय भेंटति अति अनुराग॥
हृदयँ असीसहिं पेम बस रहिहु भरी सोहाग॥ २४६॥

बिकल सनेहँ सीय सब रानीं। बैठन सबहि कहे गुर ग्यानीं॥

कहि जग गति मायिक मुनिनाथा। कहे कछुक परमारथ गाथा॥
नृप कर सुरपुर गवनु सुनावा। सुनि रघुनाथ दुसह दुखु पावा॥
मरन हेतु निज नेहु बिचारी। भे अति बिकल धीर धुर धारी॥
कुलिस कठोर सुनत कटु बानी। बिलपत लखन सीय सब रानी॥
सोक बिकल अति सकल समाजू। मानहुँ राजु अकाजे आजू॥
मुनिबर बहुरि राम समुझा। सहित समाज सुसरित नहा॥
ब्रतु निरंबु तेहि दिन प्रभु कीन्हा। मुनिहु कहें जलु काहुँ न लीन्हा॥

दो. भोरु भँ रघुनंदनहि जो मुनि आयसु दीन्ह॥
श्रद्धा भगति समेत प्रभु सो सबु सादरु कीन्ह॥ २४७॥

करि पितु क्रिया बेद जसि बरनी। भे पुनीत पातक तम तरनी॥
जासु नाम पावक अघ तूला। सुमिरत सकल सुमंगल मूला॥
सुद्ध सो भयउ साधु संमत अस। तीरथ आवाहन सुरसरि जस॥
सुद्ध भँ दु बासर बीते। बोले गुर सन राम पिरीते॥
नाथ लोग सब निपट दुखारी। कंद मूल फल अंबु अहारी॥
सानुज भरतु सचिव सब माता। देखि मोहि पल जिमि जुग जाता॥
सब समेत पुर धारि पा। आपु इहाँ अमरावति रा॥
बहुत कहें सब कियउँ ढिठा। उचित हो तस करि गोसाँई॥

दो. धर्म सेतु करुनायतन कस न कहहु अस राम।
लोग दुखित दिन दु दरस देखि लहहुँ बिश्राम॥ २४८॥

राम बचन सुनि सभय समाजू। जनु जलनिधि महुँ बिकल जहाजू॥
सुनि गुर गिरा सुमंगल मूला। भयउ मनहुँ मारुत अनुकुला॥
पावन पयँ तिहुँ काल नहाहीं। जो बिलोकि अंघ ओघ नसाहीं॥
मंगलमूरति लोचन भरि भरि। निरखहिं हरषि दंडवत करि करि॥
राम सैल बन देखन जाहीं। जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीं॥
झरना झरिहिं सुधासम बारी। त्रिबिध तापहर त्रिबिध बयारी॥
बिटप बेलि तृन अगनित जाती। फल प्रसून पल्लव बहु भाँती॥
सुंदर सिला सुखद तरु छाहीं। जा बरनि बन छबि केहि पाहीं॥

दो. सरनि सरोरुह जल बिहग कूजत गुंजत भृंग।
बैर बिगत बिहरत बिपिन मृग बिहंग बहुरंग॥ २४९॥

कोल किरात भिल्ल बनबासी। मधु सुचि सुंदर स्वादु सुधा सी॥
भरि भरि परन पुटीं रचि रुरी। कंद मूल फल अंकुर जूरी॥
सबहि देहिं करि बिनय प्रनामा। कहि कहि स्वाद भेद गुन नामा॥

देहिं लोग बहु मोल न लेहीं। फेरत राम दोहा देहीं॥
कहहिं सनेह मगन मृदु बानी। मानत साधु पेम पहिचानी॥
तुम्ह सुकृती हम नीच निषादा। पावा दरसनु राम प्रसादा॥
हमहि अगम अति दरसु तुम्हारा। जस मरु धरनि देवधुनि धारा॥
राम कृपाल निषाद नेवाजा। परिजन प्रजउ चहि जस राजा॥

दो. यह जिँयँ जानि सँकोचु तजि करि छोहु लखि नेहु।
हमहि कृतारथ करन लगि फल तृन अंकुर लेहु॥ २५०॥

तुम्ह प्रिय पाहुने बन पगु धारे। सेवा जोगु न भाग हमारे॥
देब काह हम तुम्हहि गोसाँई। ईंधनु पात किरात मिता॥
यह हमारि अति बड़ि सेवका। लेहि न बासन बसन चोरा॥
हम जड़ जीव जीव गन घाती। कुटिल कुचाली कुमति कुजाती॥
पाप करत निसि बासर जाहीं। नहिं पट कटि नहि पेट अघाहीं॥
सपोनेहुँ धरम बुद्धि कस का। यह रघुनंदन दरस प्रभा॥
जब तें प्रभु पद पदुम निहारे। मिटे दुसह दुख दोष हमारे॥
बचन सुनत पुरजन अनुरागे। तिन्ह के भाग सराहन लागे॥

छं. लागे सराहन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं।

बोलनि मिलनि सिय राम चरन सनेहु लखि सुखु पावहीं ॥
नर नारि निदरहिं नेहु निज सुनि कोल भिल्लनि की गिरा ।
तुलसी कृपा रघुबंसमनि की लोह लै लौका तिरा ॥

सो. बिहरहिं बन चहु ओर प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब ।
जल ज्यों दादुर मोर भ पीन पावस प्रथम ॥ २५१ ॥

पुर जन नारि मगन अति प्रीती । बासर जाहिं पलक सम बीती ॥
सीय सासु प्रति बेष बना । सादर करइ सरिस सेवका ॥
लखा न मरमु राम बिनु काहूँ । माया सब सिय माया माहूँ ॥
सीयँ सासु सेवा बस कीन्हीं । तिन्ह लहि सुख सिख आसिष दीन्हीं ॥
लखि सिय सहित सरल दो भा । कुटिल रानि पछितानि अघा ॥
अवनि जमहि जाचति कैकै । महि न बीचु बिधि मीचु न दै ॥
लोकहुँ बेद बिदित कबि कहहीं । राम बिमुख थलु नरक न लहहीं ॥
यहु संसउ सब के मन माहीं । राम गवनु बिधि अवध कि नाहीं ॥

दो. निसि न नीद नहिं भूख दिन भरतु बिकल सुचि सोच ।
नीच कीच बिच मगन जस मीनहि सलिल सँकोच ॥ २५२ ॥

कीन्ही मातु मिस काल कुचाली। ईति भीति जस पाकत साली॥
केहि बिधि हो राम अभिषेकू। मोहि अवकलत उपा न एकू॥
अवसि फिरहिं गुर आयसु मानी। मुनि पुनि कहब राम रुचि जानी॥
मातु कहेहुँ बहुरहिं रघुरा। राम जननि हठ करबि कि का॥
मोहि अनुचर कर केतिक बाता। तेहि महँ कुसमउ बाम बिधाता॥
जौं हठ करउँ त निपट कुकरमू। हरगिरि तें गुरु सेवक धरमू॥
एकउ जुगुति न मन ठहरानी। सोचत भरतहि रैनि बिहानी॥
प्रात नहा प्रभुहि सिर ना। बैठत पठ रिषयँ बोला॥

दो. गुर पद कमल प्रनामु करि बैठे आयसु पा।
बिप्र महाजन सचिव सब जुरे सभासद आ॥ २५३॥

बोले मुनिबरु समय समाना। सुनहु सभासद भरत सुजाना॥
धरम धुरीन भानुकुल भानू। राजा रामु स्वबस भगवानू॥
सत्यसंध पालक श्रुति सेतू। राम जनमु जग मंगल हेतू॥
गुर पितु मातु बचन अनुसारी। खल दलु दलन देव हितकारी॥
नीति प्रीति परमारथ स्वारथु। को न राम सम जान जथारथु॥
बिधि हरि हरु ससि रबि दिसिपाला। माया जीव करम कुलि काला॥
अहिप महिप जहँ लगि प्रभुता। जोग सिद्धि निगमागम गा॥

करि बिचार जिँयँ देखहु नीकें। राम रजा सीस सबही कें॥

दो. राखें राम रजा रुख हम सब कर हित हो।
समुझि सयाने करहु अब सब मिलि संमत सो॥ २५४॥

सब कहुँ सुखद राम अभिषेकू। मंगल मोद मूल मग एकू॥
केहि बिधि अवध चलहिं रघुरा। कहहु समुझि सो करि उपा॥
सब सादर सुनि मुनिबर बानी। नय परमारथ स्वारथ सानी॥
उतरु न आव लोग भ भोरे। तब सिरु ना भरत कर जोरे॥
भानुबंस भ भूप घनेरे। अधिक एक तें एक बड़ेरे॥
जनमु हेतु सब कहँ पितु माता। करम सुभासुभ दे बिधाता॥
दलि दुख सजइ सकल कल्याना। अस असीस रारि जगु जाना॥
सो गोसाँ बिधि गति जेहिं छेंकी। सकइ को टारि टेक जो टेकी॥

दो. बूझि मोहि उपा अब सो सब मोर अभागु।
सुनि सनेहमय बचन गुर उर उमगा अनुरागु॥ २५५॥

तात बात फुरि राम कृपाहीं। राम बिमुख सिधि सपनेहुँ नाहीं॥
सकुचउँ तात कहत एक बाता। अरध तजहिं बुध सरबस जाता॥

तुम्ह कानन गवनहु दो भा। फेरिहिं लखन सीय रघुरा॥
सुनि सुबचन हरषे दो भ्राता। भे प्रमोद परिपूरन गाता॥
मन प्रसन्न तन तेजु बिराजा। जनु जिय रा रामु भ राजा॥
बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी। सम दुख सुख सब रोवहिं रानी॥
कहहिं भरतु मुनि कहा सो कीन्हे। फलु जग जीवन्ह अभिमत दीन्हे॥
कानन करउँ जनम भरि बासू। एहिं तें अधिक न मोर सुपासू॥

दो. अँतरजामी रामु सिय तुम्ह सरबग्य सुजान।
जो फुर कहहु त नाथ निज कीजि बचनु प्रवान॥ २५६॥

भरत बचन सुनि देखि सनेहू। सभा सहित मुनि भ बिदेहू॥
भरत महा महिमा जलरासी। मुनि मति ठाढ़ि तीर अबला सी॥
गा चह पार जतनु हियँ हेरा। पावति नाव न बोहितु बेरा॥
औरु करिहि को भरत बड़ा। सरसी सीपि कि सिंधु समा॥
भरतु मुनिहि मन भीतर भा। सहित समाज राम पहिं आ॥
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह सुआसनु। बैठे सब सुनि मुनि अनुसासनु॥
बोले मुनिबरु बचन बिचारी। देस काल अवसर अनुहारी॥
सुनहु राम सरबग्य सुजाना। धरम नीति गुन ग्यान निधाना॥

दो. सब के उर अंतर बसहु जानहु भा कुभा।
पुरजन जननी भरत हित हो सो कहि उपा॥ २५७॥

आरत कहहिं बिचारि न का। सूझ जूआरिहि आपन दा॥
सुनि मुनि बचन कहत रघुरा। नाथ तुम्हारेहि हाथ उपा॥
सब कर हित रुख रारि राखैं। आयसु किँ मुदित फुर भाषैं॥
प्रथम जो आयसु मो कहुँ हो। माथैं मानि करौ सिख सो॥
पुनि जेहि कहँ जस कहब गोसाँ। सो सब भाँति घटिहि सेवकाँ॥
कह मुनि राम सत्य तुम्ह भाषा। भरत सनेहँ बिचारु न राखा॥
तेहि तें कहउँ बहोरि बहोरी। भरत भगति बस भइ मति मोरी॥
मोरैं जान भरत रुचि राखि। जो कीजि सो सुभ सिव साखी॥

दो. भरत बिनय सादर सुनि करि बिचारु बहोरि।
करब साधुमत लोकमत नृपनय निगम निचोरि॥ २५८॥

गुरु अनुराग भरत पर देखी। राम ह्दयँ आनंदु बिसेषी॥
भरतहि धरम धुरंधर जानी। निज सेवक तन मानस बानी॥
बोले गुर आयस अनुकूला। बचन मंजु मृदु मंगलमूला॥
नाथ सपथ पितु चरन दोहा। भयउ न भुन भरत सम भा॥

जे गुर पद अंबुज अनुरागी। ते लोकहुँ बेदहुँ बड़भागी॥
रार जा पर अस अनुरागू। को कहि सकइ भरत कर भागू॥
लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचा। करत बदन पर भरत बड़ा॥
भरतु कहहीं सो किँ भला। अस कहि राम रहे अरगा॥

दो. तब मुनि बोले भरत सन सब सँकोचु तजि तात।
कृपासिंधु प्रिय बंधु सन कहहु हृदय कै बात॥ २५९॥

सुनि मुनि बचन राम रुख पा। गुरु साहिब अनुकूल अघा॥
लखि अपने सिर सबु छरु भारू। कहि न सकहिं कछु करहिं बिचारू॥
पुलकि सरीर सभाँ भ ठाढें। नीरज नयन नेह जल बाढ़ें॥
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा। एहि तें अधिक कहौं मैं काहा।
मैं जानउँ निज नाथ सुभा। अपराधिहु पर कोह न का॥
मो पर कृपा सनेह बिसेषी। खेलत खुनिस न कबहूँ देखी॥
सिसुपन तेम परिहरैं न संगू। कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू॥
मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही। हारेहुँ खेल जितावहिं मोही॥

दो. महूँ सनेह सकोच बस सनमुख कही न बैन।
दरसन तृपित न आजु लगि पेम पिआसे नैन॥ २६०॥

बिधि न सके सहि मोर दुलारा। नीच बीचु जननी मिस पारा।
यहउ कहत मोहि आजु न सोभा। अपनीं समुझि साधु सुचि को भा॥
मातु मंदि मैं साधु सुचाली। उर अस आनत कोटि कुचाली॥
फरइ कि कोदव बालि सुसाली। मुकुता प्रसव कि संबुक काली॥
सपनेहुँ दोसक लेसु न काहू। मोर अभाग उदधि अवगाहू॥
बिनु समुझें निज अघ परिपाकू। जारिँ जायँ जननि कहि काकू॥
हृदयँ हेरि हारेँ सब ओरा। एकहि भाँति भलेहिं भल मोरा॥
गुर गोसाँ साहिब सिय रामू। लागत मोहि नीक परिनामू॥

दो. साधु सभा गुर प्रभु निकट कहउँ सुथल सति भा।
प्रेम प्रपंचु कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुरा॥ २६१॥

भूपति मरन पेम पनु राखी। जननी कुमति जगतु सबु साखी॥
देखि न जाहि बिकल महतारी। जरहिं दुसह जर पुर नर नारी॥
महीं सकल अनरथ कर मूला। सो सुनि समुझि सहिँ सब सूला॥
सुनि बन गवनु कीन्ह रघुनाथा। करि मुनि बेष लखन सिय साथा॥
बिनु पानहिन्ह पयादेहि पाँ। संकरु साखि रहेँ एहि घाँ॥
बहुरि निहार निषाद सनेहू। कुलिस कठिन उर भयउ न बेहू॥

अब सबु आँखिन्ह देखैं आ। जित जीव जड़ सबइ सहा॥
जिन्हहि निरखि मग साँपिनि बीछी। तजहिं बिषम बिषु तामस तीछी॥

दो. ते रघुनंदनु लखनु सिय अनहित लागे जाहि।
तासु तनय तजि दुसह दुख दै सहावइ काहि॥ २६२॥

सुनि अति बिकल भरत बर बानी। आरति प्रीति बिनय नय सानी॥
सोक मगन सब सभाँ खभारू। मनहुँ कमल बन परे तुसारू॥
कहि अनेक बिधि कथा पुरानी। भरत प्रबोधु कीन्ह मुनि ग्यानी॥
बोले उचित बचन रघुनंदू। दिनकर कुल कैरव बन चंदू॥
तात जाँय जियँ करहु गलानी। ईस अधीन जीव गति जानी॥
तीनि काल तिभुन मत मोरें। पुन्यसिलोक तात तर तोरे॥
उर आनत तुम्ह पर कुटिला। जा लोकु परलोकु नसा॥
दोसु देहिं जननिहि जड़ ते। जिन्ह गुर साधु सभा नहिं से॥

दो. मिटिहहिं पाप प्रपंच सब अखिल अमंगल भार।
लोक सुजसु परलोक सुखु सुमिरत नामु तुम्हार॥ २६३॥

कहउँ सुभा सत्य सिव साखी। भरत भूमि रह रारि राखी॥

तात कुतरक करहु जनि जाँ। बैर पेम नहि दुरइ दुराँ॥
मुनि गन निकट बिहग मृग जाहीं। बाधक बधिक बिलोकि पराहीं॥
हित अनहित पसु पच्छि जाना। मानुष तनु गुन ग्यान निधाना॥
तात तुम्हहि मैं जानउँ नीकें। करौं काह असमंजस जीकें॥
राखे रायँ सत्य मोहि त्यागी। तनु परिहरे पेम पन लागी॥
तासु बचन मेटत मन सोचू। तेहि तें अधिक तुम्हार सँकोचू॥
ता पर गुर मोहि आयसु दीन्हा। अवसि जो कहहु चहउँ सो कीन्हा॥

दो. मनु प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करौं सो आजु।
सत्यसंध रघुबर बचन सुनि भा सुखी समाजु॥ २६४॥

सुर गन सहित सभय सुरराजू। सोचहिं चाहत होन अकाजू॥
बनत उपा करत कछु नाहीं। राम सरन सब गे मन माहीं॥
बहुरि बिचारि परस्पर कहहीं। रघुपति भगत भगति बस अहहीं।
सुधि करि अंबरीष दुरबासा। भे सुर सुरपति निपट निरासा॥
सहे सुरन्ह बहु काल बिषादा। नरहरि कि प्रगट प्रहलादा॥
लगि लगि कान कहहिं धुनि माथा। अब सुर काज भरत के हाथा॥
आन उपा न देखि देवा। मानत रामु सुसेवक सेवा॥
हियँ सपेम सुमिरहु सब भरतहि। निज गुन सील राम बस करतहि॥

दो. सुनि सुर मत सुरगुर कहे भल तुम्हार बड़ भागु।
सकल सुमंगल मूल जग भरत चरन अनुरागु॥ २६५॥

सीतापति सेवक सेवका। कामधेनु सय सरिस सुहा॥
भरत भगति तुम्हरें मन आ। तजहु सोचु बिधि बात बना॥
देखु देवपति भरत प्रभा। सहज सुभायँ बिबस रघुरा॥
मन थिर करहु देव डरु नाहीं। भरतहि जानि राम परिछाहीं॥
सुनो सुरगुर सुर संमत सोचू। अंतरजामी प्रभुहि सकोचू॥
निज सिर भारु भरत जियँ जाना। करत कोटि बिधि उर अनुमाना॥
करि बिचारु मन दीन्ही ठीका। राम रजायस आपन नीका॥
निज पन तजि राखे पनु मोरा। छोहु सनेहु कीन्ह नहिं थोरा॥

दो. कीन्ह अनुग्रह अमित अति सब बिधि सीतानाथ।
करि प्रनामु बोले भरतु जोरि जलज जुग हाथ॥ २६६॥

कहौं कहावौं का अब स्वामी। कृपा अंबुनिधि अंतरजामी॥
गुर प्रसन्न साहिब अनुकूला। मिटी मलिन मन कलपित सूला॥
अपडर डरेँ न सोच समूलें। रबिहि न दोसु देव दिसि भूलें॥

मोर अभागु मातु कुटिला। बिधि गति बिषम काल कठिना॥
पा रोपि सब मिलि मोहि घाला। प्रनतपाल पन आपन पाला॥
यह नइ रीति न रारि हो। लोकहुँ बेद बिदित नहिं गो॥
जगु अनभल भल एकु गोसां। कहि हो भल कासु भलां॥
दे देवतरु सरिस सुभा। सनमुख बिमुख न काहुहि का॥

दो. जा निकट पहिचानि तरु छाहँ समनि सब सोच।
मागत अभिमत पाव जग रा रंकु भल पोच॥ २६७॥

लखि सब बिधि गुर स्वामि सनेहू। मिटे छोभु नहिं मन संदेहू॥
अब करुनाकर कीजि सो। जन हित प्रभु चित छोभु न हो॥
जो सेवकु साहिबहि सँकोची। निज हित चहइ तासु मति पोची॥
सेवक हित साहिब सेवका। करै सकल सुख लोभ बिहा॥
स्वारथु नाथ फिरें सबही का। किँ रजा कोटि बिधि नीका॥
यह स्वारथ परमारथ सारु। सकल सुकृत फल सुगति सिंगारु॥
देव एक बिनती सुनि मोरी। उचित हो तस करब बहोरी॥
तिलक समाजु साजि सबु आना। करि सुफल प्रभु जौं मनु माना॥

दो. सानुज पठइ मोहि बन कीजि सबहि सनाथ।

नतरु फेरिहिं बंधु दो नाथ चलौं मैं साथ ॥ २६८ ॥

नतरु जाहिं बन तीनि भा । बहुरि सीय सहित रघुरा ॥
जेहि बिधि प्रभु प्रसन्न मन हो । करुना सागर कीजि सो ॥
देवँ दीन्ह सबु मोहि अभारु । मोरें नीति न धरम बिचारु ॥
कहउँ बचन सब स्वारथ हेतू । रहत न आरत कें चित चेतू ॥
उतरु दे सुनि स्वामि रजा । सो सेवकु लखि लाज लजा ॥
अस मैं अवगुन उदधि अगाधू । स्वामि सनेहँ सराहत साधू ॥
अब कृपाल मोहि सो मत भावा । सकुच स्वामि मन जाँ न पावा ॥
प्रभु पद सपथ कहउँ सति भा । जग मंगल हित एक उपा ॥

दो. प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि जो जेहि आयसु देब ।
सो सिर धरि धरि करिहि सबु मिटिहि अनट अवरेब ॥ २६९ ॥

भरत बचन सुचि सुनि सुर हरषे । साधु सराहि सुमन सुर बरषे ॥
असमंजस बस अवध नेवासी । प्रमुदित मन तापस बनबासी ॥
चुपहिं रहे रघुनाथ सँकोची । प्रभु गति देखि सभा सब सोची ॥
जनक दूत तेहि अवसर आ । मुनि बसिष्ठँ सुनि बेगि बोला ॥
करि प्रनाम तिन्ह रामु निहारे । बेषु देखि भ निपट दुखारे ॥

दूतन्ह मुनिबर बूझी बाता। कहहु बिदेह भूप कुसलाता॥
सुनि सकुचा ना महि माथा। बोले चर बर जोरें हाथा॥
बूझब रार सादर सां। कुसल हेतु सो भयउ गोसां॥

दो. नाहि त कोसल नाथ कें साथ कुसल गइ नाथ।
मिथिला अवध बिसेष तें जगु सब भयउ अनाथ॥ २७०॥

कोसलपति गति सुनि जनकौरा। भे सब लोक सोक बस बौरा॥
जेहिं देखे तेहि समय बिदेहू। नामु सत्य अस लाग न केहू॥
रानि कुचालि सुनत नरपालहि। सूझ न कछु जस मनि बिनु ब्यालहि॥
भरत राज रघुबर बनबासू। भा मिथिलेसहि हृदयँ हराँसू॥
नृप बूझे बुध सचिव समाजू। कहहु बिचारि उचित का आजू॥
समुझि अवध असमंजस दो। चलि कि रहि न कह कछु को॥
नृपहि धीर धरि हृदयँ बिचारी। पठ अवध चतुर चर चारी॥
बूझि भरत सति भा कुभा। आहु बेगि न हो लखा॥

दो. ग अवध चर भरत गति बूझि देखि करतूति।
चले चित्रकूटहि भरतु चार चले तेरहूति॥ २७१॥

दूतन्ह आ भरत कइ करनी। जनक समाज जथामति बरनी॥
सुनि गुर परिजन सचिव महीपति। भे सब सोच सनेहँ बिकल अति॥
धरि धीरजु करि भरत बड़ा। लि सुभट साहनी बोला॥
घर पुर देस राखि रखवारे। हय गय रथ बहु जान सँवारे॥
दुघरी साधि चले ततकाला। कि बिश्रामु न मग महीपाला॥
भोरहिं आजु नहा प्रयागा। चले जमुन उतरन सबु लागा॥
खबरि लेन हम पठ नाथा। तिन्ह कहि अस महि नायउ माथा॥
साथ किरात छ सातक दीन्हे। मुनिबर तुरत बिदा चर कीन्हे॥

दो. सुनत जनक आगवनु सबु हरषे अवध समाजु।
रघुनंदनहि सकोचु बड़ सोच बिबस सुरराजु॥ २७२॥

गरइ गलानि कुटिल कैके। काहि कहै केहि दूषनु दे॥
अस मन आनि मुदित नर नारी। भयउ बहोरि रहब दिन चारी॥
एहि प्रकार गत बासर सो। प्रात नहान लाग सबु को॥
करि मज्जनु पूजहिं नर नारी। गनप गौरि तिपुरारि तमारी॥
रमा रमन पद बंदि बहोरी। बिनवहिं अंजुलि अंचल जोरी॥
राजा रामु जानकी रानी। आनँद अवधि अवध रजधानी॥
सुबस बसउ फिरि सहित समाजा। भरतहि रामु करहुँ जुबराजा॥

एहि सुख सुधाँ सींची सब काहू। देव देहु जग जीवन लाहू॥

दो. गुर समाज भान्ह सहित राम राजु पुर हो।
अछत राम राजा अवध मरि माग सबु को॥ २७३॥

सुनि सनेहमय पुरजन बानी। निंदहिं जोग बिरति मुनि ग्यानी॥
एहि बिधि नित्यकरम करि पुरजन। रामहि करहिं प्रनाम पुलकि तन॥
ऊँच नीच मध्यम नर नारी। लहहिं दरसु निज निज अनुहारी॥
सावधान सबही सनमानहिं। सकल सराहत कृपानिधानहिं॥
लरिकाहि ते रघुबर बानी। पालत नीति प्रीति पहिचानी॥
सील सकोच सिंधु रघुरा। सुमुख सुलोचन सरल सुभा॥
कहत राम गुन गन अनुरागे। सब निज भाग सराहन लागे॥
हम सम पुन्य पुंज जग थोरे। जिन्हहि रामु जानत करि मोरे॥

दो. प्रेम मगन तेहि समय सब सुनि आवत मिथिलेसु।
सहित सभा संभ्रम उठे रबिकुल कमल दिनेसु॥ २७४॥

भा सचिव गुर पुरजन साथा। आगें गवनु कीन्ह रघुनाथा॥
गिरिबरु दीख जनकपति जबहीं। करि प्रनाम रथ त्यागे तबहीं॥

राम दरस लालसा उछाहू। पथ श्रम लेसु कलेसु न काहू॥
मन तहँ जहँ रघुबर बैदेही। बिनु मन तन दुख सुख सुधि केही॥
आवत जनकु चले एहि भाँती। सहित समाज प्रेम मति माती॥
आ निकट देखि अनुरागे। सादर मिलन परसपर लागे॥
लगे जनक मुनिजन पद बंदन। रिषिन्ह प्रनामु कीन्ह रघुनंदन॥
भान्ह सहित रामु मिलि राजहि। चले लवा समेत समाजहि॥

दो. आश्रम सागर सांत रस पूरन पावन पाथु।
सेन मनहुँ करुना सरित लिँ जाहिं रघुनाथु॥ २७५॥

बोरति ग्यान बिराग करारे। बचन ससोक मिलत नद नारे॥
सोच उसास समीर तंरगा। धीरज तट तरुबर कर भंगा॥
बिषम बिषाद तोरावति धारा। भय भ्रम भवँर अबर्त अपारा॥
केवट बुध बिद्या बड़ि नावा। सकहिं न खे ऐक नहिं आवा॥
बनचर कोल किरात बिचारे। थके बिलोकि पथिक हियँ हारे॥
आश्रम उदधि मिली जब जा। मनहुँ उठे अंबुधि अकुला॥
सोक बिकल दो राज समाजा। रहा न ग्यानु न धीरजु लाजा॥
भूप रूप गुन सील सराही। रोवहिं सोक सिंधु अवगाही॥

छं. अवगाहि सोक समुद्र सोचहिं नारि नर ब्याकुल महा।
दै दोष सकल सरोष बोलहिं बाम बिधि कीन्हो कहा॥
सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि देखि दसा बिदेह की।
तुलसी न समरथु को जो तरि सकै सरित सनेह की॥

सो. कि अमित उपदेस जहँ तहँ लोगन्ह मुनिबरन्ह।
धीरजु धरि नरेस कहे बसिष्ठ बिदेह सन॥ २७६॥

जासु ग्यानु रबि भव निसि नासा। बचन किरन मुनि कमल बिकासा॥
तेहि कि मोह ममता निरा। यह सिय राम सनेह बड़ा॥
बिष साधक सिद्ध सयाने। त्रिबिध जीव जग बेद बखाने॥
राम सनेह सरस मन जासू। साधु सभाँ बड़ आदर तासू॥
सोह न राम पेम बिनु ग्यानू। करनधार बिनु जिमि जलजानू॥
मुनि बहुबिधि बिदेहु समुझा। रामघाट सब लोग नहा॥
सकल सोक संकुल नर नारी। सो बासरु बीते बिनु बारी॥
पसु खग मृगन्ह न कीन्ह अहारू। प्रिय परिजन कर कौन बिचारू॥

दो. दो समाज निमिराजु रघुराजु नहाने प्रात।
बैठे सब बट बिटप तर मन मलीन कृस गात॥ २७७॥

जे महिसुर दसरथ पुर बासी। जे मिथिलापति नगर निवासी॥
हंस बंस गुर जनक पुरोधा। जिन्ह जग मगु परमारथु सोधा॥
लगे कहन उपदेस अनेका। सहित धरम नय बिरति बिबेका॥
कौसिक कहि कहि कथा पुरानीं। समुझा सब सभा सुबानीं॥
तब रघुनाथ कोसिकहि कहे। नाथ कालि जल बिनु सबु रहे॥
मुनि कह उचित कहत रघुरा। गयउ बीति दिन पहर अढ़ा॥
रिषि रुख लखि कह तेरहुतिराजू। इहाँ उचित नहिं असन अनाजू॥
कहा भूप भल सबहि सोहाना। पा रजायसु चले नहाना॥

दो. तेहि अवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार।
लइ आ बनचर बिपुल भरि भरि काँवरि भार॥ २७८॥

कामद मे गिरि राम प्रसादा। अवलोकत अपहरत बिषादा॥
सर सरिता बन भूमि बिभागा। जनु उमगत आनँद अनुरागा॥
बेलि बिटप सब सफल सफूला। बोलत खग मृग अलि अनुकूला॥
तेहि अवसर बन अधिक उछाहू। त्रिबिध समीर सुखद सब काहू॥
जा न बरनि मनोहरता। जनु महि करति जनक पहुना॥
तब सब लोग नहा नहा। राम जनक मुनि आयसु पा॥

देखि देखि तरुबर अनुरागे। जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे॥
दल फल मूल कंद बिधि नाना। पावन सुंदर सुधा समाना॥

दो. सादर सब कहँ रामगुर पठ भरि भरि भार।
पूजि पितर सुर अतिथि गुर लगे करन फरहार॥ २७९॥

एहि बिधि बासर बीते चारी। रामु निरखि नर नारि सुखारी॥
दुहु समाज असि रुचि मन माहीं। बिनु सिय राम फिरब भल नाहीं॥
सीता राम संग बनबासू। कोटि अमरपुर सरिस सुपासू॥
परिहरि लखन रामु बैदेही। जेहि घरु भाव बाम बिधि तेही॥
दाहिन दइ हो जब सबही। राम समीप बसि बन तबही॥
मंदाकिनि मज्जनु तिहु काला। राम दरसु मुद मंगल माला॥
अटनु राम गिरि बन तापस थल। असनु अमि सम कंद मूल फल॥
सुख समेत संबत दु साता। पल सम होहिं न जनिहिं जाता॥

दो. एहि सुख जोग न लोग सब कहहिं कहाँ अस भागु॥
सहज सुभायँ समाज दुहु राम चरन अनुरागु॥ २८०॥

एहि बिधि सकल मनोरथ करहीं। बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं॥

सीय मातु तेहि समय पठां । दासीं देखि सुवसरु आं ॥
सावकास सुनि सब सिय सासू । आयउ जनकराज रनिवासू ॥
कौसल्याँ सादर सनमानी । आसन दि समय सम आनी ॥
सीलु सनेह सकल दुहु ओरा । द्रवहिं देखि सुनि कुलिस कठोरा ॥
पुलक सिथिल तन बारि बिलोचन । महि नख लिखन लगीं सब सोचन ॥
सब सिय राम प्रीति कि सि मूरती । जनु करुना बहु बेष बिसूरति ॥
सीय मातु कह बिधि बुधि बाँकी । जो पय फेनु फोर पबि टाँकी ॥

दो. सुनि सुधा देखिहिं गरल सब करतूति कराल ।
जहँ तहँ काक उलूक बक मानस सकृत मराल ॥ २८१ ॥

सुनि ससोच कह देबि सुमित्रा । बिधि गति बड़ि बिपरीत बिचित्रा ॥
जो सृजि पालइ हरइ बहोरी । बाल केलि सम बिधि मति भोरी ॥
कौसल्या कह दोसु न काहू । करम बिबस दुख सुख छति लाहू ॥
कठिन करम गति जान बिधाता । जो सुभ असुभ सकल फल दाता ॥
ईस रजा सीस सबही कें । उतपति थिति लय बिषहु अमी कें ॥
देबि मोह बस सोचि बादी । बिधि प्रपंचु अस अचल अनादी ॥
भूपति जिब मरब उर आनी । सोचि सखि लखि निज हित हानी ॥
सीय मातु कह सत्य सुबानी । सुकृती अवधि अवधपति रानी ॥

दो. लखनु राम सिय जाहुँ बन भल परिनाम न पोचु।
गहबरि हियँ कह कौसिला मोहि भरत कर सोचु॥ २८२॥

ईस प्रसाद असीस तुम्हारी। सुत सुतबधू देवसरि बारी॥
राम सपथ मैं कीन्ह न का। सो करि कहउँ सखी सति भा॥
भरत सील गुन बिनय बड़ा। भायप भगति भरोस भला॥
कहत सारदहु कर मति हीचे। सागर सीप कि जाहिं उलीचे॥
जानउँ सदा भरत कुलदीपा। बार बार मोहि कहे महीपा॥
कसें कनकु मनि पारिखि पाँ। पुरुष परिखिहिं समयँ सुभाँ।
अनुचित आजु कहब अस मोरा। सोक सनेहँ सयानप थोरा॥
सुनि सुरसरि सम पावनि बानी। भं सनेह बिकल सब रानी॥

दो. कौसल्या कह धीर धरि सुनहु देबि मिथिलेसि।
को बिबेकनिधि बल्लभहि तुम्हहि सकइ उपदेसि॥ २८३॥

रानि राय सन अवसरु पा। अपनी भाँति कहब समुझा॥
रखिहिं लखनु भरतु गबनहिं बन। जौं यह मत मानै महीप मन॥
तौ भल जतनु करब सुबिचारी। मोरें सौचु भरत कर भारी॥

गूढ़ सनेह भरत मन माही। रहें नीक मोहि लागत नाहीं॥
लखि सुभा सुनि सरल सुबानी। सब भइ मगन करुन रस रानी॥
नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि। सिथिल सनेहँ सिद्ध जोगी मुनि॥
सबु रनिवासु बिथकि लखि रहे। तब धरि धीर सुमित्राँ कहे॥
देबि दंड जुग जामिनि बीती। राम मातु सुनी उठी सप्रीती॥

दो. बेगि पा धारि थलहि कह सनेहँ सतिभाय।
हमरें तौ अब ईस गति के मिथिलेस सहाय॥ २८४॥

लखि सनेह सुनि बचन बिनीता। जनकप्रिया गह पाय पुनीता॥
देबि उचित असि बिनय तुम्हारी। दसरथ घरिनि राम महतारी॥
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं। अगिनि धूम गिरि सिर तिनु धरहीं॥
सेवकु रा करम मन बानी। सदा सहाय महेसु भवानी॥
रउरे अंग जोगु जग को है। दीप सहाय कि दिनकर सोहै॥
रामु जा बनु करि सुर काजू। अचल अवधपुर करिहहिं राजू॥
अमर नाग नर राम बाहुबल। सुख बसिहहिं अपनें अपने थल॥
यह सब जागबलिक कहि राखा। देबि न हो मुधा मुनि भाषा॥

दो. अस कहि पग परि पेम अति सिय हित बिनय सुना॥

सिय समेत सियमातु तब चली सुआयसु पा ॥ २८५ ॥

प्रिय परिजनहि मिली बैदेही । जो जेहि जोगु भाँति तेहि तेही ॥
तापस बेष जानकी देखी । भा सबु बिकल बिषाद बिसेषी ॥
जनक राम गुर आयसु पा । चले थलहि सिय देखी आ ॥
लीन्हि ला उर जनक जानकी । पाहुन पावन पेम प्रान की ॥
उर उमगे अंबुधि अनुरागू । भयउ भूप मनु मनहुँ पयागू ॥
सिय सनेह बटु बाढ़त जोहा । ता पर राम पेम सिसु सोहा ॥
चिरजीवी मुनि ग्यान बिकल जनु । बूड़त लहे बाल अवलंबनु ॥
मोह मगन मति नहिं बिदेह की । महिमा सिय रघुबर सनेह की ॥

दो. सिय पितु मातु सनेह बस बिकल न सकी सँभारि ।
धरनिसुताँ धीरजु धरे समउ सुधरमु बिचारि ॥ २८६ ॥

तापस बेष जनक सिय देखी । भयउ पेमु परितोषु बिसेषी ॥
पुत्रि पवित्र कि कुल दो । सुजस धवल जगु कह सबु को ॥
जिति सुरसरि कीरति सरि तोरी । गवनु कीन्ह बिधि अंड करोरी ॥
गंग अवनि थल तीनि बड़ेरे । एहिं कि साधु समाज घनेरे ॥
पितु कह सत्य सनेहँ सुबानी । सीय सकुच महुँ मनहुँ समानी ॥

पुनि पितु मातु लीन्ह उर ला। सिख आसिष हित दीन्हि सुहा॥
कहति न सीय सकुचि मन माहीं। इहाँ बसब रजनीं भल नाहीं॥
लखि रुख रानि जनायउ रा। हृदयँ सराहत सीलु सुभा॥

दो. बार बार मिलि भेंट सिय बिदा कीन्ह सनमानि।
कही समय सिर भरत गति रानि सुबानि सयानि॥ २८७॥

सुनि भूपाल भरत ब्यवहारू। सोन सुगंध सुधा ससि सारू॥
मूदे सजल नयन पुलके तन। सुजसु सराहन लगे मुदित मन॥
सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि। भरत कथा भव बंध बिमोचनि॥
धरम राजनय ब्रह्मबिचारू। इहाँ जथामति मोर प्रचारू॥
सो मति मोरि भरत महिमाही। कहै काह छलि छुति न छाँही॥
बिधि गनपति अहिपति सिव सारद। कबि कोबिद बुध बुद्धि बिसारद॥
भरत चरित कीरति करतूती। धरम सील गुन बिमल बिभूती॥
समुझत सुनत सुखद सब काहू। सुचि सुरसरि रुचि निदर सुधाहू॥

दो. निरवधि गुन निरुपम पुरुषु भरतु भरत सम जानि।
कहि सुमेरु कि सेर सम कबिकुल मति सकुचानि॥ २८८॥

अगम सबहि बरनत बरबरनी। जिमि जलहीन मीन गमु धरनी॥
भरत अमित महिमा सुनु रानी। जानहिं रामु न सकहिं बखानी॥
बरनि सप्रेम भरत अनुभा। तिय जिय की रुचि लखि कह रा॥
बहुरहिं लखनु भरतु बन जाहीं। सब कर भल सब के मन माहीं॥
देबि परंतु भरत रघुबर की। प्रीति प्रतीति जा नहिं तरकी॥
भरतु अवधि सनेह ममता की। जद्यपि रामु सीम समता की॥
परमारथ स्वारथ सुख सारे। भरत न सपनेहुँ मनहुँ निहारे॥
साधन सिद्ध राम पग नेहू॥ मोहि लखि परत भरत मत एहू॥

दो. भोरेहुँ भरत न पेलिहहिं मनसहुँ राम रजा।
करि न सोचु सनेह बस कहे भूप बिलखा॥ २८९॥

राम भरत गुन गनत सप्रीती। निसि दंपतिहि पलक सम बीती॥
राज समाज प्रात जुग जागे। न्हा न्हा सुर पूजन लागे॥
गे नहा गुर पहीं रघुरा। बंदि चरन बोले रुख पा॥
नाथ भरतु पुरजन महतारी। सोक बिकल बनबास दुखारी॥
सहित समाज रा मिथिलेसू। बहुत दिवस भ सहत कलेसू॥
उचित हो सो कीजि नाथा। हित सबही कर रौरें हाथा॥
अस कहि अति सकुचे रघुरा। मुनि पुलके लखि सीलु सुभा॥

तुम्ह बिनु राम सकल सुख साजा। नरक सरिस दुहु राज समाजा॥

दो. प्रान प्रान के जीव के जिव सुख के सुख राम।
तुम्ह तजि तात सोहात गृह जिन्हहि तिन्हहिं बिधि बाम॥ २९०॥

सो सुखु करमु धरमु जरि जा। जहँ न राम पद पंकज भा॥
जोगु कुजोगु ग्यानु अग्यानू। जहँ नहिं राम पेम परधानू॥
तुम्ह बिनु दुखी सुखी तुम्ह तेहीं। तुम्ह जानहु जिय जो जेहि केहीं॥
रार आयसु सिर सबही कें। बिदित कृपालहि गति सब नीकें॥
आपु आश्रमहि धारि पा। भयउ सनेह सिथिल मुनिरा॥
करि प्रनाम तब रामु सिधा। रिषि धरि धीर जनक पहिं आ॥
राम बचन गुरु नृपहि सुना। सील सनेह सुभायँ सुहा॥
महाराज अब कीजि सो। सब कर धरम सहित हित हो।

दो. ग्यान निधान सुजान सुचि धरम धीर नरपाल।
तुम्ह बिनु असमंजस समन को समरथ एहि काल॥ २९१॥

सुनि मुनि बचन जनक अनुरागे। लखि गति ग्यानु बिरागु बिरागे॥
सिथिल सनेहँ गुनत मन माहीं। आ इहाँ कीन्ह भल नाही॥

रामहि रायँ कहे बन जाना। कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रवाना॥
हम अब बन तें बनहि पठा। प्रमुदित फिरब बिबेक बड़ा॥
तापस मुनि महिसुर सुनि देखी। भ प्रेम बस बिकल बिसेषी॥
समउ समुझि धरि धीरजु राजा। चले भरत पहिं सहित समाजा॥
भरत आ आगें भइ लीन्हे। अवसर सरिस सुआसन दीन्हे॥
तात भरत कह तेरहुति रा। तुम्हहि बिदित रघुबीर सुभा॥

दो. राम सत्यब्रत धरम रत सब कर सीलु सनेहु॥
संकट सहत सकोच बस कहि जो आयसु देहु॥ २९२॥

सुनि तन पुलकि नयन भरि बारी। बोले भरतु धीर धरि भारी॥
प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपू। कुलगुरु सम हित माय न बापू॥
कौसिकादि मुनि सचिव समाजू। ग्यान अंबुनिधि आपुनु आजू॥
सिसु सेवक आयसु अनुगामी। जानि मोहि सिख दे स्वामी॥
एहिं समाज थल बूझब रार। मौन मलिन मैं बोलब बार॥
छोटे बदन कहउँ बड़ि बाता। छमब तात लखि बाम बिधाता॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना। सेवाधरमु कठिन जगु जाना॥
स्वामि धरम स्वारथहि बिरोधू। बैरु अंध प्रेमहि न प्रबोधू॥

दो. राखि राम रुख धरमु ब्रतु पराधीन मोहि जानि।
सब कें संमत सर्ब हित करि पेमु पहिचानि॥ २९३॥

भरत बचन सुनि देखि सुभा। सहित समाज सराहत रा॥
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे। अरथु अमित अति आखर थोरे॥
ज्यौ मुख मुकुर मुकुरु निज पानी। गहि न जा अस अदभुत बानी॥
भूप भरत मुनि सहित समाजू। गे जहँ बिबुध कुमुद द्विजराजू॥
सुनि सुधि सोच बिकल सब लोगा। मनहुँ मीनगन नव जल जोगा॥
देवँ प्रथम कुलगुर गति देखी। निरखि बिदेह सनेह बिसेषी॥
राम भगतिमय भरतु निहारे। सुर स्वारथी हहरि हियँ हारे॥
सब को राम पेममय पेखा। भउ अलेख सोच बस लेखा॥

दो. रामु सनेह सकोच बस कह ससोच सुरराज।
रचहु प्रपंचहि पंच मिलि नाहिं त भयउ अकाजु॥ २९४॥

सुरन्ह सुमिरि सारदा सराही। देबि देव सरनागत पाही॥
फेरि भरत मति करि निज माया। पालु बिबुध कुल करि छल छाया॥
बिबुध बिनय सुनि देबि सयानी। बोली सुर स्वारथ जड़ जानी॥
मो सन कहहु भरत मति फेरू। लोचन सहस न सूझ सुमेरू॥

बिधि हरि हर माया बड़ि भारी। सो न भरत मति सकइ निहारी॥
सो मति मोहि कहत करु भोरी। चंदिनि कर कि चंडकर चोरी॥
भरत हृदयँ सिय राम निवासू। तहँ कि तिमिर जहँ तरनि प्रकासू॥
अस कहि सारद गइ बिधि लोका। बिबुध बिकल निसि मानहुँ कोका॥

दो. सुर स्वारथी मलीन मन कीन्ह कुमंत्र कुठाटु॥
रचि प्रपंच माया प्रबल भय भ्रम अरति उचाटु॥ २९५॥

करि कुचालि सोचत सुरराजू। भरत हाथ सबु काजु अकाजू॥
ग जनकु रघुनाथ समीपा। सनमाने सब रबिकुल दीपा॥
समय समाज धरम अबिरोधा। बोले तब रघुबंस पुरोधा॥
जनक भरत संबादु सुना। भरत कहाति कही सुहा॥
तात राम जस आयसु देहू। सो सबु करै मोर मत एहू॥
सुनि रघुनाथ जोरि जुग पानी। बोले सत्य सरल मृदु बानी॥
बिद्यमान आपुनि मिथिलेसू। मोर कहब सब भाँति भदेसू॥
रार राय रजायसु हो। रारि सपथ सही सिर सो॥

दो. राम सपथ सुनि मुनि जनकु सकुचे सभा समेत।
सकल बिलोकत भरत मुखु बनइ न उतरु देत॥ २९६॥

सभा सकुच बस भरत निहारी। रामबंधु धरि धीरजु भारी॥
कुसमउ देखि सनेहु सँभारा। बढ़त बिंधि जिमि घटज निवारा॥
सोक कनकलोचन मति छोनी। हरी बिमल गुन गन जगजोनी॥
भरत बिबेक बराहँ बिसाला। अनायास उधरी तेहि काला॥
करि प्रनामु सब कहँ कर जोरे। रामु रा गुर साधु निहोरे॥
छमब आजु अति अनुचित मोरा। कहउँ बदन मृदु बचन कठोरा॥
हियँ सुमिरी सारदा सुहा। मानस तें मुख पंकज आ॥
बिमल बिबेक धरम नय साली। भरत भारती मंजु मराली॥

दो. निरखि बिबेक बिलोचनन्हि सिथिल सनेहँ समाजु।
करि प्रनामु बोले भरतु सुमिरि सीय रघुराजु॥ २९७॥

प्रभु पितु मातु सुहृद गुर स्वामी। पूज्य परम हित अतंरजामी॥
सरल सुसाहिबु सील निधानू। प्रनतपाल सर्बग्य सुजानू॥
समरथ सरनागत हितकारी। गुनगाहकु अवगुन अघ हारी॥
स्वामि गोसाँइहि सरिस गोसा। मोहि समान मैं साँ दोहा॥
प्रभु पितु बचन मोह बस पेली। आयउँ इहाँ समाजु सकेली॥
जग भल पोच ऊँच अरु नीचू। अमि अमरपद माहुरु मीचू॥

राम रजा मेट मन माहीं। देखा सुना कतहुँ को नाहीं॥
सो मैं सब बिधि कीन्हि ढिठा। प्रभु मानी सनेह सेवका॥

दो. कृपाँ भला आपनी नाथ कीन्ह भल मोर।
दूषन भे भूषन सरिस सुजसु चारु चहु ओर॥ २९८॥

रारि रीति सुबानि बड़ा। जगत बिदित निगमागम गा॥
कूर कुटिल खल कुमति कलंकी। नीच निसील निरीस निसंकी॥
ते सुनि सरन सामुहें आ। सकृत प्रनामु किहें अपना॥
देखि दोष कबहुँ न उर आने। सुनि गुन साधु समाज बखाने॥
को साहिब सेवकहि नेवाजी। आपु समाज साज सब साजी॥
निज करतूति न समुझि सपनें। सेवक सकुच सोचु उर अपनें॥
सो गोसाँ नहि दूसर कोपी। भुजा उठा कहउँ पन रोपी॥
पसु नाचत सुक पाठ प्रबीना। गुन गति नट पाठक आधीना॥

दो. यों सुधारि सनमानि जन कि साधु सिरमोर।
को कृपाल बिनु पालिहै बिरिदावलि बरजोर॥ २९९॥

सोक सनेहँ कि बाल सुभाँ। आयउँ ला रजायसु बाँ॥

तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा। सबहि भाँति भल माने मोरा॥
देखैं पाय सुमंगल मूला। जानैं स्वामि सहज अनुकूला॥
बड़ें समाज बिलोकैं भागू। बड़ीं चूक साहिब अनुरागू॥
कृपा अनुग्रह अंगु अघा। कीन्हि कृपानिधि सब अधिका॥
राखा मोर दुलार गोसां। अपनें सील सुभायँ भलां॥
नाथ निपट मैं कीन्हि ढिठा। स्वामि समाज सकोच बिहा॥
अबिनय बिनय जथारुचि बानी। छमिहि दे अति आरति जानी॥

दो. सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुत कहब बड़ि खोरि।
आयसु दे देव अब सबइ सुधारी मोरि॥ ३००॥

प्रभु पद पदुम पराग दोहा। सत्य सुकृत सुख सीवँ सुहा॥
सो करि कहउँ हि अपने की। रुचि जागत सोवत सपने की॥
सहज सनेहँ स्वामि सेवका। स्वारथ छल फल चारि बिहा॥
अग्या सम न सुसाहिब सेवा। सो प्रसादु जन पावै देवा॥
अस कहि प्रेम बिबस भ भारी। पुलक सरीर बिलोचन बारी॥
प्रभु पद कमल गहे अकुला। समउ सनेहु न सो कहि जा॥
कृपासिंधु सनमानि सुबानी। बैठा समीप गहि पानी॥
भरत बिनय सुनि देखि सुभा। सिथिल सनेहँ सभा रघुरा॥

छं. रघुरा सिथिल सनेहँ साधु समाज मुनि मिथिला धनी।
मन महुँ सराहत भरत भायप भगति की महिमा घनी॥
भरतहि प्रसंसत बिबुध बरषत सुमन मानस मलिन से।
तुलसी बिकल सब लोग सुनि सकुचे निसागम नलिन से॥

सो. देखि दुखारी दीन दुहु समाज नर नारि सब।
मघवा महा मलीन मु मारि मंगल चहत॥ ३०१॥

कपट कुचालि सीवँ सुरराजू। पर अकाज प्रिय आपन काजू॥
काक समान पाकरिपु रीती। छली मलीन कतहुँ न प्रतीती॥
प्रथम कुमत करि कपटु सँकेला। सो उचाटु सब कें सिर मेला॥
सुरमायाँ सब लोग बिमोहे। राम प्रेम अतिसय न बिछोहे॥
भय उचाट बस मन थिर नाहीं। छन बन रुचि छन सदन सोहाहीं॥
दुबिध मनोगति प्रजा दुखारी। सरित सिंधु संगम जनु बारी॥
दुचित कतहुँ परितोषु न लहहीं। एक एक सन मरमु न कहहीं॥
लखि हियँ हँसि कह कृपानिधानू। सरिस स्वान मघवान जुबानू॥

दो. भरतु जनकु मुनिजन सचिव साधु सचेत बिहा।

लागि देवमाया सबहि जथाजोगु जनु पा ॥ ३०२ ॥

कृपासिंधु लखि लोग दुखारे । निज सनेहँ सुरपति छल भारे ॥
सभा रा गुर महिसुर मंत्री । भरत भगति सब कै मति जंत्री ॥
रामहि चितवत चित्र लिखे से । सकुचत बोलत बचन सिखे से ॥
भरत प्रीति नति बिनय बड़ा । सुनत सुखद बरनत कठिना ॥
जासु बिलोकि भगति लवलेसू । प्रेम मगन मुनिगन मिथिलेसू ॥
महिमा तासु कहै किमि तुलसी । भगति सुभायँ सुमति हियँ हुलसी ॥
आपु छोटि महिमा बड़ि जानी । कबिकुल कानि मानि सकुचानी ॥
कहि न सकति गुन रुचि अधिका । मति गति बाल बचन की ना ॥

दो. भरत बिमल जसु बिमल बिधु सुमति चकोरकुमारि ।
उदित बिमल जन हृदय नभ एकटक रही निहारि ॥ ३०३ ॥

भरत सुभा न सुगम निगमहूँ । लघु मति चापलता कबि छमहूँ ॥
कहत सुनत सति भा भरत को । सीय राम पद हो न रत को ॥
सुमिरत भरतहि प्रेमु राम को । जेहि न सुलभ तेहि सरिस बाम को ॥
देखि दयाल दसा सबही की । राम सुजान जानि जन जी की ॥
धरम धुरीन धीर नय नागर । सत्य सनेह सील सुख सागर ॥

देसु काल लखि समउ समाजू। नीति प्रीति पालक रघुराजू॥
बोले बचन बानि सरबसु से। हित परिनाम सुनत ससि रसु से॥
तात भरत तुम्ह धरम धुरीना। लोक बेद बिद प्रेम प्रबीना॥

दो. करम बचन मानस बिमल तुम्ह समान तुम्ह तात।
गुर समाज लघु बंधु गुन कुसमयँ किमि कहि जात॥ ३०४॥

जानहु तात तरनि कुल रीती। सत्यसंध पितु कीरति प्रीती॥
समउ समाजु लाज गुरुजन की। उदासीन हित अनहित मन की॥
तुम्हहि बिदित सबही कर करमू। आपन मोर परम हित धरमू॥
मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा। तदपि कहउँ अवसर अनुसारा॥
तात तात बिनु बात हमारी। केवल गुरुकुल कृपाँ सँभारी॥
नतरु प्रजा परिजन परिवारू। हमहि सहित सबु होत खुआरू॥
जौं बिनु अवसर अथवँ दिनेसू। जग केहि कहहु न हो कलेसू॥
तस उतपातु तात बिधि कीन्हा। मुनि मिथिलेस राखि सबु लीन्हा॥

दो. राज काज सब लाज पति धरम धरनि धन धाम।
गुर प्रभा पालिहि सबहि भल होहि परिनाम॥ ३०५॥

सहित समाज तुम्हार हमारा। घर बन गुर प्रसाद रखवारा॥
मातु पिता गुर स्वामि निदेसू। सकल धरम धरनीधर सेसू॥
सो तुम्ह करहु करावहु मोहू। तात तरनिकुल पालक होहू॥
साधक एक सकल सिधि देनी। कीरति सुगति भूतिमय बेनी॥
सो बिचारि सहि संकटु भारी। करहु प्रजा परिवारु सुखारी॥
बाँटी बिपति सबहिं मोहि भा। तुम्हहि अवधि भरि बड़ि कठिना॥
जानि तुम्हहि मृदु कहउँ कठोरा। कुसमयँ तात न अनुचित मोरा॥
होहिं कुठायँ सुबंधु सुहा। ओड़िहिं हाथ असनिहु के घा॥

दो. सेवक कर पद नयन से मुख सो साहिबु होा।
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकबि सराहहिं सो॥ ३०६॥

सभा सकल सुनि रघुबर बानी। प्रेम पयोधि अमि जनु सानी॥
सिथिल समाज सनेह समाधी। देखि दसा चुप सारद साधी॥
भरतहि भयउ परम संतोषू। सनमुख स्वामि बिमुख दुख दोषू॥
मुख प्रसन्न मन मिटा बिषादू। भा जनु गूँगेहि गिरा प्रसादू॥
कीन्ह सप्रेम प्रनामु बहोरी। बोले पानि पंकरुह जोरी॥
नाथ भयउ सुखु साथ ग को। लहैं लाहु जग जनमु भ को॥
अब कृपाल जस आयसु हो। करौं सीस धरि सादर सो॥

सो अवलंब देव मोहि दे। अवधि पारु पावौं जेहि से॥

दो. देव देव अभिषेक हित गुर अनुसासनु पा।
आनैं सब तीरथ सलिलु तेहि कहँ काह रजा॥ ३०७॥

एकु मनोरथु बड़ मन माहीं। सभयँ सकोच जात कहि नाहीं॥
कहहु तात प्रभु आयसु पा। बोले बानि सनेह सुहा॥
चित्रकूट सुचि थल तीरथ बन। खग मृग सर सरि निर्झर गिरिगन॥
प्रभु पद अंकित अवनि बिसेषी। आयसु हो त आवौं देखी॥
अवसि अत्रि आयसु सिर धरहू। तात बिगतभय कानन चरहू॥
मुनि प्रसाद बनु मंगल दाता। पावन परम सुहावन भ्राता॥
रिषिनायकु जहँ आयसु देहीं। राखेहु तीरथ जलु थल तेहीं॥
सुनि प्रभु बचन भरत सुख पावा। मुनि पद कमल मुदित सिरु नावा॥

दो. भरत राम संबादु सुनि सकल सुमंगल मूल।
सुर स्वारथी सराहि कुल बरषत सुरतरु फूल॥ ३०८॥

धन्य भरत जय राम गोसां। कहत देव हरषत बरिआ।
मुनि मिथिलेस सभाँ सब काहू। भरत बचन सुनि भयउ उछाहू॥

भरत राम गुन ग्राम सनेहू। पुलकि प्रसंसत रा बिदेहू॥
सेवक स्वामि सुभा सुहावन। नेमु पेमु अति पावन पावन॥
मति अनुसार सराहन लागे। सचिव सभासद सब अनुरागे॥
सुनि सुनि राम भरत संबादू। दुहु समाज हियँ हरषु बिषादू॥
राम मातु दुखु सुखु सम जानी। कहि गुन राम प्रबोधीं रानी॥
एक कहहिं रघुबीर बड़ा। एक सराहत भरत भला॥

दो. अत्रि कहे तब भरत सन सैल समीप सुकूप।
राखि तीरथ तोय तहँ पावन अमि अनूप॥ ३०९॥

भरत अत्रि अनुसासन पा। जल भाजन सब दि चला॥
सानुज आपु अत्रि मुनि साधू। सहित ग जहँ कूप अगाधू॥
पावन पाथ पुन्यथल राखा। प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाषा॥
तात अनादि सिद्ध थल एहू। लोपे काल बिदित नहिं केहू॥
तब सेवकन्ह सरस थलु देखा। किन्ह सुजल हित कूप बिसेषा॥
बिधि बस भयउ बिस्व उपकारू। सुगम अगम अति धरम बिचारू॥
भरतकूप अब कहिहहिं लोगा। अति पावन तीरथ जल जोगा॥
प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी। होहहिं बिमल करम मन बानी॥

दो. कहत कूप महिमा सकल ग जहाँ रघुरा।
अत्रि सुनायउ रघुबरहि तीरथ पुन्य प्रभा॥ ३१०॥

कहत धरम इतिहास सप्रीती। भयउ भोरु निसि सो सुख बीती॥
नित्य निबाहि भरत दो भा। राम अत्रि गुर आयसु पा॥
सहित समाज साज सब सादें। चले राम बन अटन पयादें॥
कोमल चरन चलत बिनु पनहीं। भइ मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं॥
कुस कंटक काँकरीं कुरां। कटुक कठोर कुबस्तु दुरां॥
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे। बहत समीर त्रिबिध सुख लीन्हे॥
सुमन बरषि सुर घन करि छाहीं। बिटप फूलि फलि तृन मृदुताहीं॥
मृग बिलोकि खग बोलि सुबानी। सेवहिं सकल राम प्रिय जानी॥

दो. सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु राम कहत जमुहात।
राम प्रान प्रिय भरत कहुँ यह न होइ बड़ि बात॥ ३११॥

एहि बिधि भरतु फिरत बन माहीं। नेमु प्रेमु लखि मुनि सकुचाहीं॥
पुन्य जलाश्रय भूमि बिभागा। खग मृग तरु तृन गिरि बन बागा॥
चारु बिचित्र पबित्र बिसेषी। बूझत भरतु दिब्य सब देखी॥
सुनि मन मुदित कहत रिषिराऊ। हेतु नाम गुन पुन्य प्रभाऊ॥

कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रनामा। कतहुँ बिलोकत मन अभिरामा॥
कतहुँ बैठि मुनि आयसु पा। सुमिरत सीय सहित दो भा॥
देखि सुभा सनेहु सुसेवा। देहिं असीस मुदित बनदेवा॥
फिरहिं गँ दिनु पहर अढ़ा। प्रभु पद कमल बिलोकहिं आ॥

दो. देखे थल तीरथ सकल भरत पाँच दिन माझ।
कहत सुनत हरि हर सुजसु गयउ दिवसु भइ साँझ॥ ३१२॥

भोर न्हा सबु जुरा समाजू। भरत भूमिसुर तेरहुति राजू॥
भल दिन आजु जानि मन माहीं। रामु कृपाल कहत सकुचाहीं॥
गुर नृप भरत सभा अवलोकी। सकुचि राम फिरि अवनि बिलोकी॥
सील सराहि सभा सब सोची। कहुँ न राम सम स्वामि सँकोची॥
भरत सुजान राम रुख देखी। उठि सप्रेम धरि धीर बिसेषी॥
करि दंडवत कहत कर जोरी। राखीं नाथ सकल रुचि मोरी॥
मोहि लगि सहे सबहिं संतापू। बहुत भाँति दुखु पावा आपू॥
अब गोसाँ मोहि दे रजा। सेवौं अवध अवधि भरि जा॥

दो. जेहिं उपाय पुनि पाय जनु देखै दीनदयाल।
सो सिख दे अवधि लगि कोसलपाल कृपाल॥ ३१३॥

पुरजन परिजन प्रजा गोसा। सब सुचि सरस सनेहँ सगा॥
रार बदि भल भव दुख दाहू। प्रभु बिनु बादि परम पद लाहू॥
स्वामि सुजानु जानि सब ही की। रुचि लालसा रहनि जन जी की॥
प्रनतपालु पालिहि सब काहू। दे दुहू दिसि ओर निबाहू॥
अस मोहि सब बिधि भूरि भरोसो। किँ बिचारु न सोचु खरो सो॥
आरति मोर नाथ कर छोहू। दुहुँ मिलि कीन्ह ढीठु हठि मोहू॥
यह बड़ दोषु दूरि करि स्वामी। तजि सकोच सिखइ अनुगामी॥
भरत बिनय सुनि सबहिं प्रसंसी। खीर नीर बिबरन गति हंसी॥

दो. दीनबंधु सुनि बंधु के बचन दीन छलहीन।
देस काल अवसर सरिस बोले रामु प्रबीन॥ ३१४॥

तात तुम्हारि मोरि परिजन की। चिंता गुरहि नृपहि घर बन की॥
माथे पर गुर मुनि मिथिलेसू। हमहि तुम्हहि सपनेहुँ न कलेसू॥
मोर तुम्हार परम पुरुषारथु। स्वारथु सुजसु धरमु परमारथु॥
पितु आयसु पालिहिं दुहु भा। लोक बेद भल भूप भला॥
गुर पितु मातु स्वामि सिख पालें। चलेहुँ कुमग पग परहिं न खालें॥
अस बिचारि सब सोच बिहा। पालहु अवध अवधि भरि जा॥

देसु कोसु परिजन परिवारू। गुर पद रजहिं लाग छरुभारू॥
तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी। पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी॥

दो. मुखिआ मुखु सो चाहि खान पान कहुँ एक।
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक॥ ३१५॥

राजधरम सरबसु एतनो। जिमि मन माहँ मनोरथ गो॥
बंधु प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती। बिनु अधार मन तोषु न साँती॥
भरत सील गुर सचिव समाजू। सकुच सनेह बिबस रघुराजू॥
प्रभु करि कृपा पाँवरीं दीन्हीं। सादर भरत सीस धरि लीन्हीं॥
चरनपीठ करुनानिधान के। जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के॥
संपुट भरत सनेह रतन के। आखर जुग जुन जीव जतन के॥
कुल कपाट कर कुसल करम के। बिमल नयन सेवा सुधरम के॥
भरत मुदित अवलंब लहे तें। अस सुख जस सिय रामु रहे तें॥

दो. मागे बिदा प्रनामु करि राम लि उर ला।
लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुवसरु पा॥ ३१६॥

सो कुचालि सब कहँ भइ नीकी। अवधि आस सम जीवनि जी की॥

नतरु लखन सिय सम बियोगा। हहरि मरत सब लोग कुरोगा॥
रामकृपाँ अवरेब सुधारी। बिबुध धारि भइ गुनद गोहारी॥
भेंटत भुज भरि भा भरत सो। राम प्रेम रसु कहि न परत सो॥
तन मन बचन उमग अनुरागा। धीर धुरंधर धीरजु त्यागा॥
बारिज लोचन मोचत बारी। देखि दसा सुर सभा दुखारी॥
मुनिगन गुर धुर धीर जनक से। ग्यान अनल मन कसें कनक से॥
जे बिरंचि निरलेप उपा। पदुम पत्र जिमि जग जल जा॥

दो. ते बिलोकि रघुबर भरत प्रीति अनूप अपार।
भ मगन मन तन बचन सहित बिराग बिचार॥ ३१७॥

जहाँ जनक गुर मति भोरी। प्राकृत प्रीति कहत बड़ि खोरी॥
बरनत रघुबर भरत बियोगू। सुनि कठोर कबि जानिहि लोगू॥
सो सकोच रसु अकथ सुबानी। समउ सनेहु सुमिरि सकुचानी॥
भेंटि भरत रघुबर समुझा। पुनि रिपुदवनु हरषि हियँ ला॥
सेवक सचिव भरत रुख पा। निज निज काज लगे सब जा॥
सुनि दारुन दुखु दुहूँ समाजा। लगे चलन के साजन साजा॥
प्रभु पद पदुम बंदि दो भा। चले सीस धरि राम रजा॥
मुनि तापस बनदेव निहोरी। सब सनमानि बहोरि बहोरी॥

दो. लखनहि भेंटि प्रनामु करि सिर धरि सिय पद धूरि।
चले सप्रेम असीस सुनि सकल सुमंगल मूरि॥ ३१८॥

सानुज राम नृपहि सिर ना। कीन्हि बहुत बिधि बिनय बड़ा॥
देव दया बस बड़ दुखु पायउ। सहित समाज काननहिं आयउ॥
पुर पगु धारि दे असीसा। कीन्ह धीर धरि गवनु महीसा॥
मुनि महिदेव साधु सनमाने। बिदा कि हरि हर सम जाने॥
सासु समीप ग दो भा। फिरे बंदि पग आसिष पा॥
कौसिक बामदेव जाबाली। पुरजन परिजन सचिव सुचाली॥
जथा जोगु करि बिनय प्रनामा। बिदा कि सब सानुज रामा॥
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे। सब सनमानि कृपानिधि फेरे॥

दो. भरत मातु पद बंदि प्रभु सुचि सनेहँ मिलि भेंटि।
बिदा कीन्ह सजि पालकी सकुच सोच सब मेटि॥ ३१९॥

परिजन मातु पितहि मिलि सीता। फिरी प्रानप्रिय प्रेम पुनीता॥
करि प्रनामु भेंटी सब सासू। प्रीति कहत कबि हियँ न हुलासू॥
सुनि सिख अभिमत आसिष पा। रही सीय दुहु प्रीति समा॥

रघुपति पटु पालकीं मगां। करि प्रबोधु सब मातु चढ़ा॥
बार बार हिलि मिलि दुहु भा। सम सनेहँ जननी पहुँचा॥
साजि बाजि गज बाहन नाना। भरत भूप दल कीन्ह पयाना॥
हृदयँ रामु सिय लखन समेता। चले जाहिं सब लोग अचेता॥
बसह बाजि गज पसु हियँ हारें। चले जाहिं परबस मन मारें॥

दो. गुर गुरतिय पद बंदि प्रभु सीता लखन समेत।
फिरे हरष बिसमय सहित आ परन निकेत॥ ३२०॥

बिदा कीन्ह सनमानि निषादू। चले हृदयँ बड़ बिरह बिषादू॥
कोल किरात भिल्ल बनचारी। फेरे फिरे जोहारि जोहारी॥
प्रभु सिय लखन बैठि बट छाहीं। प्रिय परिजन बियोग बिलखाहीं॥
भरत सनेह सुभा सुबानी। प्रिया अनुज सन कहत बखानी॥
प्रीति प्रतीति बचन मन करनी। श्रीमुख राम प्रेम बस बरनी॥
तेहि अवसर खग मृग जल मीना। चित्रकूट चर अचर मलीना॥
बिबुध बिलोकि दसा रघुबर की। बरषि सुमन कहि गति घर घर की॥
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह भरोसो। चले मुदित मन डर न खरो सो॥

दो. सानुज सीय समेत प्रभु राजत परन कुटीर।

भगति ग्यानु बैराग्य जनु सोहत धरें सरीर ॥ ३२१ ॥

मुनि महिसुर गुर भरत भुआलू । राम बिरहँ सबु साजु बिहालू ॥
प्रभु गुन ग्राम गनत मन माहीं । सब चुपचाप चले मग जाहीं ॥
जमुना उतरि पार सबु भय । सो बासरु बिनु भोजन गय ॥
उतरि देवसरि दूसर बासू । रामसखाँ सब कीन्ह सुपासू ॥
स उतरि गोमतीं नहा । चौथें दिवस अवधपुर आ ।
जनकु रहे पुर बासर चारी । राज काज सब साज सँभारी ॥
सौंपि सचिव गुर भरतहि राजू । तेरहुति चले साजि सबु साजू ॥
नगर नारि नर गुर सिख मानी । बसे सुखेन राम रजधानी ॥

दो. राम दरस लगि लोग सब करत नेम उपबास ।
तजि तजि भूषन भोग सुख जित अवधि कीं आस ॥ ३२२ ॥

सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे । निज निज काज पा पा सिख ओधे ॥
पुनि सिख दीन्ह बोलि लघु भा । सौंपी सकल मातु सेवका ॥
भूसुर बोलि भरत कर जोरे । करि प्रनाम बय बिनय निहोरे ॥
ऊँच नीच कारजु भल पोचू । आयसु देब न करब सँकोचू ॥
परिजन पुरजन प्रजा बोला । समाधानु करि सुबस बसा ॥

सानुज गे गुर गेहँ बहोरी। करि दंडवत कहत कर जोरी॥
आयसु हो त रहौं सनेमा। बोले मुनि तन पुलकि सपेमा॥
समुझव कहब करब तुम्ह जो। धरम सारु जग होहि सो॥

दो. सुनि सिख पा असीस बड़ि गनक बोलि दिनु साधि।
सिंघासन प्रभु पादुका बैठारे निरुपाधि॥ ३२३॥

राम मातु गुर पद सिरु ना। प्रभु पद पीठ रजायसु पा॥
नंदिगावँ करि परन कुटीरा। कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा॥
जटाजूट सिर मुनिपट धारी। महि खनि कुस साँथरी सँवारी॥
असन बसन बासन ब्रत नेमा। करत कठिन रिषिधरम सप्रेमा॥
भूषन बसन भोग सुख भूरी। मन तन बचन तजे तिन तूरी॥
अवध राजु सुर राजु सिहा। दसरथ धनु सुनि धनदु लजा॥
तेहिं पुर बसत भरत बिनु रागा। चंचरीक जिमि चंपक बागा॥
रमा बिलासु राम अनुरागी। तजत बमन जिमि जन बड़भागी॥

दो. राम पेम भाजन भरतु बड़े न एहिं करतूति।
चातक हंस सराहित टेंक बिबेक बिभूति॥ ३२४॥

देह दिनहुँ दिन दूबरि हो। घटइ तेजु बलु मुखछबि सो॥
नित नव राम प्रेम पनु पीना। बढ़त धरम दलु मनु न मलीना॥
जिमि जलु निघटत सरद प्रकासे। बिलसत बेतस बनज बिकासे॥
सम दम संजम नियम उपासा। नखत भरत हिय बिमल अकासा॥
ध्रुव बिस्वास अवधि राका सी। स्वामि सुरति सुरबीथि बिकासी॥
राम पेम बिधु अचल अदोषा। सहित समाज सोह नित चोखा॥
भरत रहनि समुझनि करतूती। भगति बिरति गुन बिमल बिभूती॥
बरनत सकल सुकचि सकुचाहीं। सेस गनेस गिरा गमु नाहीं॥

दो. नित पूजत प्रभु पाँवरी प्रीति न हृदयँ समाति॥
मागि मागि आयसु करत राज काज बहु भाँति॥ ३२५॥

पुलक गात हियँ सिय रघुबीरू। जीह नामु जप लोचन नीरू॥
लखन राम सिय कानन बसहीं। भरतु भवन बसि तप तनु कसहीं॥
दो दिसि समुझि कहत सबु लोगू। सब बिधि भरत सराहन जोगू॥
सुनि ब्रत नेम साधु सकुचाहीं। देखि दसा मुनिराज लजाहीं॥
परम पुनीत भरत आचरनू। मधुर मंजु मुद मंगल करनू॥
हरन कठिन कलि कलुष कलेसू। महामोह निसि दलन दिनेसू॥
पाप पुंज कुंजर मृगराजू। समन सकल संताप समाजू।

जन रंजन भंजन भव भारू। राम सनेह सुधाकर सारू॥

छं. सिय राम प्रेम पियूष पूरन होत जनमु न भरत को।
मुनि मन अगम जम नियम सम दम बिषम ब्रत आचरत को॥
दुख दाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिस अपहरत को।
कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि राम सनमुख करत को॥

सो. भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीय राम पद पेमु अवसि हो भव रस बिरति॥ ३२६॥

मासपारायण इक्कीसवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
द्वितीयः सोपानः समाप्तः।

अयोध्याकाण्ड समाप्त